

فَاقْصِرِ الْقَصْرَ لَعَلَّكُمْ يَتَفَكَّرُونَ (سورة الاعراف: 176)

महत्वपूर्ण व्यक्ति और स्थान

डाक्टर मौलाना मोहम्मद नजीब कासमी
Dr. Maulana Mohammad Najeeb Qasmi

www.najeebqasmi.com



فَأَقْصَصِ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ

(سورة الاعراف 176)

महत्वपूर्णव्यक्ति और स्थान

डाक्टर मौलाना मोहम्मद नजीब कासमी

www.najeebqasmi.com

All rights reserved
सभी अधिकार लेखक के लिये सुरक्षित हैं

Important Persons & Places in the History महत्वपूर्ण व्यक्ति और स्थान

By
डाक्टर मौलाना मोहम्मद नजीब कासमी
Dr. Mohammad Najeeb Qasmi

<http://www.najeebqasmi.com/>
najeebqasmi@gmail.com
[MNajeeb Qasmi - Facebook](#)
[Najeeb Qasmi - YouTube](#)
[Whatsapp: 00966508237446](#)

पहला हिंदी संस्करण: मार्च 2016

Address for Gratis Distribution मुफ्त मिलने का पता:
Dr. Mohammad Mujeeb, Deepa Sarai, Sambhal, UP (2044302) India
डा. मोहम्मद मुजीब, दीपा सराय, सभल, यूपी, इण्डिया (244302)

विषय-सूची

क्र.	विषय	पेज नं
1	प्रस्तावना: मोहम्मद नजीब कासमी संभली	5
2	मुखबंध: हज़रत मौलाना अबुल क़सिम नोमानी	8
3	मुखबंध: मौलाना मोहम्मद असरारुल हक़ कासमी	9
4	मुखबंध: प्रोफेसर अख़तरुल वासे साहब	10
5	अम्बिया व रुसुल	11
6	हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम की ज़िन्दगी के अहवाल	17
7	खुलफ़ाए राशिदीन की ज़िन्दगी के मुख़्तसर अहवाल	21
8	हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु	22
9	हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु	24
10	हज़रत उसमान गनी रज़ियल्लाहु अन्हु	25
11	हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु	26
12	हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हु	28
13	हज़रत फातिमा की ज़िन्दगी के हालात	29
14	हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की विलादत	29
15	हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की तरबियत	30
16	हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुशाबह थीं	31
17	हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की मदीना हिजरत	32
18	हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह	33
19	हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का महर	34
20	तसबिहे फातमी	38
21	मोहम्मद बिन कासिम की ज़िन्दगी के अहवाल	42

22	इमाम अबू हनीफा: हयात और कारनामे	45
23	हज़रत इमाम हनीफा के मुख्तसर हालाते ज़िन्दगी	45
24	हज़रत इमाम अबू हनीफा के बारे में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बशारत	47
25	हज़रत इमाम अबू हनीफा के ताबइयत	48
26	फुक़हा व मुहद्दिसीन की बस्ती शहर कूफ़ा	50
27	हज़रत इमाम अबू हनीफा और इल्मे हदीस	56
28	हज़रत इमाम अबू हनीफा के असातज़ा	58
29	हज़रत इमाम अबू हनीफा के	60
30	हज़रत इमाम अबू हनीफा की	66
31	हज़रत इमाम अबू हनीफा की शान में बाज़ उलमाए उम्मत के अक्वाल	68
32	शैख शाह इसमाईल शहीद और उनकी किताब तकवियतुल ईमान	77
33	मुल्के शाम - फज़ीलत और तारीख	81
34	शैखुल हदीस मौलाना मोहम्मद ज़करिया कांधलवी	91
35	शैखुल हदीस मौलाना मोहम्मद ज़करिया की खिदमात	103
36	शैखुल हदीस मौलाना मोहम्मद इसमाईल संभली	108
37	दारुल उलूम देवबन्द के मोहतमिम हज़रत मौलाना मरग़ूरहमान साहब	111
38	शैख डाक्टर मोहम्मद मुस्तफा आज़मी कासमी और उनकी हदीस की खिदमात	114
39	लेखक का परिचय	127

प्रस्तावना

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न सिर्फ आखरी नबी हैं बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत अंतरराष्ट्रीय भी है, यानी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कबिला कुरैश या अरबों के लिए नहीं बल्कि पुरी दुनिया के लिए, इसी तरह सिर्फ उस ज़माना के लिए नहीं जिसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए बल्कि क्रियामत तक आने वाले तमाम इंसान व जिन्नात के लिए नबी व रसूल बना कर भेजे गए। कुरान व हदीस की रौशनी में उम्मत मुस्लिमा खास कर उलमा-ए-दीन की जिम्मेदारी है कि हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के बाद दीने इस्लाम की हिफाज़त करके कुरान व हदीस के पैगाम को दुनिया के कोने कोने तक पहुंचाएँ। चूनांचे उलमा-ए-कराम ने अपने अपने ज़माने में मुख्तलिफ़ तरीकों से इस जिम्मेदारी को अंजाम दिया। उलमा-ए-कराम की कुरान व हदीस की खिदमात को भुलाया नहीं जा सकता है और इंशा अल्लाह उलमा-ए-कराम की इल्मी खिदमात से कल क्रियामत तक इस्तिफादा किया जाता रहेगा। अब नई टेक्नोलॉजी (वेबसाइट, वाट्स ऐप, मोबाइल ऐप, फेसबुक और यूट्यूब वगैरह) को दीने इस्लाम की खिदमात के लिए उलमा-ए-कराम ने इस्तेमाल करना शुरू तो कर दिया है मगर इसमें मज़ीद काम करने की सख्त ज़रूरत है।

अलहमदु लिल्लाह बाज़ दोस्तों की टेक्निकल समर्थन और बाज़ मुहसिनीन के माली योगदान से हमने भी दीने इस्लाम की खिदमात के लिए नई टेक्नोलॉजी के मैदान में छोड़े दौड़ा दिए हैं त्क़ इस

अंतरिक्ष (जगह) को एसी ताकतें पुन कर दें जो इस्लाम और मुस्लिमानों के लिए नुकसानदेह साबित हों। चूनांचे 2013 में वेबसाइट (www.najeebqasmi.com) लांच की गई, 2015 में तीन ज़बानों में दुनिया की पहली मोबाइल ऐप (**Deen-e-Islam**) और फिर दोस्तों के तक्राजा पर हाजियों के लिए तीन ज़बानों में ख़ासी ऐप (**Hajj-e-Mabroor**) लांच की गई। हिंदुस्तान और पाकिस्तान के बहुत से उलमा ने दोनों ऐपस के लिए प्रशंसापत्र लिख कर अवाम व ख्वास से दोनों ऐपस से इस्तिफादा करने की दरखास्त की। यह प्रशंसापत्र दोनों ऐपस का हिस्सा हैं। ज़माने की रफ्तार से चलते हुए कुरान व हदीस की रौशनी में मुहत्तसर दीनी पैगाम खुबसूरत इमेज की शकल में मुहत्तलिफ सूत्रों से हज़ारों दोस्तों को पहुंच रहे हैं जो अवाम व ख्वास में काफी मक़बूलियत हासिल किए हुए हैं।

इन दोनों ऐपस (**दीने इस्लाम और हज्जे मब्रूर**) को तीन ज़बानों में लांच करने के लिये मेरे तकरीबन 200 मज़ामीन का अंग्रेज़ी और हिन्दी में तर्जुमा करवाया गया। तर्जुमा के साथ ज़बान के माहिरीन से एडिटिंग भी कराई गई। हिन्दी के तर्जुमा में इस बात का ख्याल रखा गया कि तर्जुमा आसान ज़बान में हो ताकि हर आम व खास के लिए इस्तिफादा करना आसान हो।

अल्लाह के फज़ल व करम और उसकी तौफ़ीक़ से अब तमाम मज़ामीन के अंग्रेज़ी और हिन्दी अनुवाद को विषय के एतेबार से किताबी शकल में तरतीब दे दिया गया है ताकि इस्तिफादा आम किया जा सके, जिसके ज़रिया 14 किताबें अंग्रेज़ी में और 14 किताबें हिन्दी में तय्यार हो गई हैं। उर्दू में प्रकाशित 7 किताबों के अलावा 10 नई किताबें छपने के लिए तय्यार कर दी गई हैं।

तारीख की चंद अहम शख्सियात (हज़रत इब्राहिम अलैहिस सलाम, खुलफाए राशिदीन, हज़रत फातमा रज़ी अल्लाहु अन्हा, फातेह सिंध मोहम्मद बिन कासिम, हज़रत इमाम अबु हनीफा, मौलाना मोहम्मद ज़क्रया कांधलवी, मौलाना मोहम्मद इस्माइल संभली, मौलाना मोहम्मद मरगबुर रहमान और शैख डॉक्टर मोहम्मद मुस्तुफा आज़मी दामत बरकातुहुम) से मुतअल्लिक मेरे बहुत से मज़ामीन किताबी शकल (महत्वपूर्ण व्यक्ति और स्थान) में तरतीब दिए गए हैं ताकि इस्तिफादा आम हो सके।

अल्लाह तआला से दुआ करता हूँ कि इन सारी खिदमात को कुबूलियत व मक़बूलियत से नवाज़ कर मुझे, ऐपस की तायीद में लेटर लिखने वाले उलमा-ए-कराम, टेक्निकल सपोर्ट करने वाले अहबाब, माली योगदान पेश करने वाले मुहसिनीन, मुतर्जिमीन, एडिटिंग करने वाले हज़रात खास कर जनाब अदनान महमूद उसमानी साहब, डिज़ाइनर और किसी भी किसम से तआवुन पेश करने वाले हज़रात को दोनों जहां की कामयाबी व कामरानी अता फरमाये। आखिर में दारुल उलूम देवबन्द के मुहतमिम हज़रत मौलाना मुफ्ती अबुल कासिम नुमानी साहब, मौलाना मोहम्मद असरारुल हक़ कासमी साहब (मैंबर ऑफ़ पार्लियामेंट) और प्रोफेसर अखतरुल वासे साहब (लेसानियात के कमिशनर, मंत्रालय अक़लियती बहबूद) का शुक्र गुज़ार हूँ कि उन्होंने अपनी मसरूफियात के बावजूद प्रस्तावना लिखा। डॉक्टर शफाअतुल्लाह खान साहब का भी मशकूर हूँ जिनकी मेहनतों से यह प्रोजेक्ट मुकम्मल हुआ।

मोहम्मद नजीब कासमी संभली (रियाज़)

14 मार्च, 2016 ई.

(Mufti) Abul Qasim Nomani

Founder, (U.P.) Darul Uloom Deoband



مفتی: ابو القاسم نعمانی

مہتمم دارالعلوم دیوبند، الہند

PIN- 247554 (U.P.) INDIA Tel: 01336-222429, Fax: 01336-222768 E-mail: info@darululom-deoband.com

Ref. No.

Date:

باسمہ سبحانہ و تعالیٰ

جناب مولانا محمد نجیب قاسمی سنبلی تلمریض (سعودی عرب) نے دینی معلومات اور شرعی احکام کو زیادہ سے زیادہ اہل ایمان تک پہنچانے کے لئے جدید وسائل کا استعمال شروع کر کے دینی کام کرنے والوں کے لیے ایک اچھی مثال قائم فرمائی ہے۔ چنانچہ سعودی عرب سے شائع ہونے والے اردو اخبار (اردو نیوز) کے دینی کالم (روشنی) میں مختلف عنوانات پر ان کے مضامین مسلسل شائع ہوتے رہتے ہیں۔ اور سوشل میڈیا اور ویب سائٹ کے ذریعہ بھی وہ اپنا دینی پیغام زیادہ سے زیادہ لوگوں تک پہنچا رہے ہیں۔ ایک اچھا کام یہ ہوا ہے کہ زمانہ کی ضرورت کے تحت مولانا نے اپنے اہم اور منتخب مضامین کے ہندی اور انگریزی میں ترجمے کرا دیے ہیں، جو ایلیٹرو تک بک کی شکل میں جلدی لانچ ہونے والے ہیں۔

اور امید ہے کہ مستقبل میں یہ پرنٹ بک کی شکل میں بھی دستیاب ہوں گے۔ اللہ تعالیٰ مولانا قاسمی کے علوم میں برکت عطا فرمائے اور ان کی خدمات کو قبول فرمائے۔ حریطی افادات کی توہین بخشے۔

اردو دارالعلوم دیوبند

ابو القاسم نعمانی غفرلہ

مہتمم دارالعلوم دیوبند

۵۱۳۷۱۶۳

مولانا محمد اسرار الحق
Mohammad Asrarul Haque
Member of Parliament
(Lok Sabha)



TE, South Kumbha, New Delhi, 110011
Ph: 811-03790046 Telefax: 811-03296314
E-mail: mhaqqasmi@gmail.com

Date: 19/03/2016

Date: 19/03/2016

تائیدات

عصر حاضر میں دینی تعلیمات کو جدید آلات و وسائل کے زیرِ ماموریت لانا سبک چھوڑنا وقت کا اہم تکلف ہے، اللہ کا شکر ہے کہ بعض دینی و اصلاحی تحریکات نے اس سمت میں کام کرنا شروع کر دیا ہے، جس کے سبب آج انٹرنیٹ پر دین کے حقائق سے کافی مواد موجود ہے۔ اگرچہ اس میدان میں زیادہ تر مغربی ممالک کے مسلمان سرگرم ہیں لیکن اب ان کے نقش قدم پر چلتے ہوئے مشرقی ممالک کے علماء و اعیان اسلام بھی اس طرف متوجہ ہو رہے ہیں جن میں غزvam یا اکرلمہ نجیب قاسمی صاحب کا نام سر پرست ہے۔ وہ انٹرنیٹ پر بہت سادہ و سواڈال پیگتے ہیں، باضابطہ طور پر ایک اسلامی و اصلاحی ویب سائٹ بھی چلاتے ہیں۔

ڈاکٹرلمہ نجیب قاسمی کا قلم رواں دواں ہے۔ وہ اب تک مختلف اہم موضوعات پر سینکڑوں مضامین اور کئی کتابیں لکھ چکے ہیں۔ ان کے مضامین پوری دنیا میں بڑی دلچسپی کے ساتھ پڑھے جاتے ہیں۔ وہ جدید تکنیکی سے بخوبی واقف ہونے کی وجہ سے اپنے مضامین اور کتابوں کو بہت جلد دنیا بھر میں ایسے ایسے لوگوں تک پہنچا دیتے ہیں جن تک رسائی آسان کام نہیں ہے۔ مصروف کی خصوصیت علوم دینی کے ساتھ علوم عصری سے بھی آراستہ ہے۔ وہ ایک طرف عالم دین ہیں، دوسری طرف ڈاکٹر و محقق بھی اور کئی زبانوں میں مہارت بھی رکھتے ہیں اور اس پر مستزاد یہ کہ وہ خالق و متحرک نوجوان ہیں۔ جس طرح وہ اردو، ہندی، انگریزی اور عربی میں دینی و اصلاحی مضامین اور کتابیں لکھ کر عام لوگوں کے سامنے لا رہے ہیں، وہ اس کے لئے حسین اور مبارک ہا کے مستحق ہیں۔ ان کی شب و روز کی مصروفیات و جدوجہد کو دیکھتے ہوئے ان سے یہ امید کی جاسکتی ہے کہ وہ مستقبل میں بھی اسی مستعدی کے ساتھ مذکورہ تمام کاموں کو جاری رکھیں گے۔ میں دعا گو ہوں کہ باری تعالیٰ ان سے مزید دینی و اصلاحی اور ملی کام لے اور وہ اکابرین کے نقش قدم پر گامزن رہیں۔ آمین!

کلمہ

(مولانا) محمد اسرار الحق قاسمی

ایم۔ پی۔ ٹی۔ ٹکے سہ (اشیانی)

صدر آل انڈیا تعلیمی و ملی فاؤنڈیشن، نئی دہلی

Email: asrarulhaqqasmi@gmail.com

پرو. اکھتارعل واسے

آکھوت

PROF. AKHTARUL WASEY
Commissioner



भारतीय अल्पसंख्यकों के आधुनिक
अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय
भारत सरकार

Commissioner for Linguistic
Minorities in India
Ministry of Minority Affairs
Government of India

تقریظ

اطلاعاتی انقلاب برپا ہونے کے بعد جس طرح ہر قسم کی معلومات انٹرنیٹ کے ذریعہ انگوٹوں کی اور جیسوں میں آئی ہیں۔ اس نے "کار" میں ہر "کار" کو "کار" میں دیا۔" کے گزراؤنی صورت کو نہ صرف حقیقت دیا ہے بلکہ اس پر حصار انحصار اور غرور کا گڑبگڑا ہوا ہے۔ اگلی (Google) اور ویکی پیڈیا (Wikipedia) یا دیگر ویکی سوشل سائٹس میں نے تشریح والا کار کو دوسرے جہت سے ادا کر دیا کی تجویز عطا کی ہے کہ فرائض العمل کے تمام قصبات سے ملتی ہو کر دنگے ہیں۔ لیکن اس اطلاعاتی انقلاب نے ایک ویکی ویکی ویکی سے کار کیا ہے کہ اطلاعات رسائی اور فرائض العمل میں حفاظتی سے گرج پاؤں کو اس کرنے کا بھی بھی اس طرح شامل ہو گیا ہے اور اس پائی کا اسلو اور مسلمانوں سے بہتر کوں جاتا ہے۔ اور اس میں مسئلہ یہ ہے کہ واقعہ ہونے اور معلومات حاصل کرنے کے لئے اب مطالعہ کی عادت لوگوں میں خاصی کم آتی جا رہی ہے۔ کیونکہ سوشل کے روپ میں دیکھائی کی کمی میں ملتی رہتی ہے اور وہ سب کو اس کے اور پر جاتا چاہتے ہیں۔ اس مانتی جانتے کے مل کے ضرورتی ہے کہ ہم مطالعہ میں اور حفاظتی کو اپنا ہر کار کرنے کے لئے اور اپنے ہم ندریں خاص طور پر بی بی کی کو بھی معلومات فراہم کرنے والی پیشانی دیتے ہوں کے ضرور میں دیکھائی اور حفاظتی ہانے کے لئے اس اطلاعاتی انقلاب کے جتنی بھی وسائل اور آراء ہیں جن کا ہر پر استعمال کریں۔

بھگتوں کے کار سے ایک سوتر اور سوتر عالم حضرت اوی سوانا کو خوب قافی نے جاز پر ہندو اور مسلمانوں کے کار کو لیا ہے۔ قدیم میں سے ہیں اور عرصہ سے ملت مسلمان عرب کی راہ دہائی واپس میں ہر کار ہیں۔ انہوں نے اس ضرورت کو کوئی کار کیا اور اس کی پہلی اسٹیج سوشل نیٹ ورکس اسلام "کار" کی ہر کار اور "کار" کی ہر کار میں چار کا خوب وقت گزارنے کے ساتھ سے سوالات کی دہائی ہر ملی ضرورتوں کے تحت سے مضامین اور سے نیات شامل کر کے ایک دفعہ ہر ملے انداز کے ساتھ حفاظتی کرنے کا ہے۔ حیرت انگیز زندگی کے مختلف مسائل پر دینی کے حوالے سے اور مضامین کے الیکٹرانک ایڈیشن کو بھی منظر عام پر آنا چاہا ہے۔ بھگتوں کو کا کا محترم سوانا کو خوب قافی صاحب کے کار سے الیکٹرانک مضامین اور بھی تو رات سے استفادہ کرنے کا موقع ملتا رہا ہے۔ بھگتوں کے حوالوں اور مثال پر ہندو اور مسلمان اور ان کے لئے بہت کار کیا۔ میں سوانا کو خوب قافی کی خدمت میں ہر چار ایک نقشہ پیش کر رہا ہوں اور اضافے اور کار تیاروں کو اس کی ہر میں روزی علم میں دیتا اور قسم میں حیرت انگیز کار فرمائے۔ کیونکہ

ستاروں سے آگے جہاں ہر بھی ہیں

اگلی عشق کے اداوں اور بھی ہیں

امین

(پروفیسر اختر الواس)

سابقہ انارکلیٹر اور کمیشن اعلیٰ تحریک آف سماجک اصلاح
سابقہ صدر شعبہ سماجک اصلاح جہاد اسلامک سوسائٹی اعلیٰ
سابقہ ایس جی میں اور اسلامک اعلیٰ دینی

एक दूसरे के लिए इस्तेमाल हुए हैं अलबत्ता नबी आम हैं और रसूल खास हैं।

नबियों और रसूलों का यह सिलसिला हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से शुरू हुआ और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर खत्म हुआ, गरज़ ये कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रसूल होने के साथ साथ आखरी नबी भी हैं जैसा कि अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया "और लेकिन अल्लाह के रसूल और वह नबियों के खातिम हैं।" (सूरह अहजाब 40)

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक आने वाले अम्बिया व रसूल की मुअय्यन तादाद तो अल्लाह तआला के सिवा कोई नहीं जानता जैसा कि अल्लाह तआला ने कुरान करीम में फरमाया "आपसे पहले के बहुत से रसूलों के वाक्यात हमने आपसे बयान किए हैं और बुह्न से रसूलों के नहीं बयान किए।" (सूरह निसा 164) लेकिन फिर भी आप हज़रत अबूजर गिफारी रज़ियल्लाहु अन्हु की मशहूर व मारुफ हदीस जिसमें उनके सवाल करने पर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया नबियों की कुल तादाद तक्रीबन एक लाख 24 हज़ार और रसूलों की कुल तादाद 315/313 है। (सही इब्ने हिब्बान) की बुनियाद पर लिखा गया है कि अम्बिया किराम की तादाद सहाबए किराम की तादाद की तरह लकरीबन एक लाख 24 हज़ार थी (वल्लाहु आलम बिस सवाब)। इस रिवायत की सनद में बाज़ उलमा के नुक्ता-ए-नज़र में अगरचे कुछ जोफ मौजूद हैं मगर बहुत से शवाहिद की बिना पर तारिखी हैसियत से यह हदीस क़बूल की गई है।

जिन नबियों कौर रसूलों का तजकिरा कुरान करीम में आया है उनकी तादाद 25 है, उनमें से 18 का जिक्र तो कुरान करीम (सूरह इनाम 83-86) में एक ही जगह पर है। जिन 25 अम्बिया का जिक्र कुरान करीम में आया है उनके नाम यह हैं।

(1) आदम अलैहिस्सलाम (2) इदरीस अलैहिस्सलाम (3) नूह अलैहिस्सलाम (4) हूद अलैहिस्सलाम (5) सालेह अलैहिस्सलाम (6) इब्राहिम अलैहिस्सलाम (7) लूत अलैहिस्सलाम (8) इसमाइल अलैहिस्सलाम (9) इसहाक अलैहिस्सलाम (10) याकूब अलैहिस्सलाम (11) यूनूस अलैहिस्सलाम (12) अय्यूब अलैहिस्सलाम (13) शुऐब अलैहिस्सलाम (14) मूसा अलैहिस्सलाम (15) हारून अलैहिस्सलाम (16) यूनूस अलैहिस्सलाम (17) दाउद अलैहिस्सलाम (18) सुलैमान अलैहिस्सलाम (19) इलयास अलैहिस्सलाम (20) अलयसा अलैहिस्सलाम (21) जकरिया अलैहिस्सलाम (22) यहया अलैहिस्सलाम (23) जुल किफल अलैहिस्सलाम अक्सर मुफस्सेरीन के नज़दीक) (24) ईसा अलैहिस्सलाम (25) हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम का जिक्र कुरान में (सूरह तौबा 30) में आया है लेकिन उनके नबी होने में इख़तेलाफ़ है। उन 25 अम्बिया-ए-किराम के अलावा उन तीन अम्बिया का जिक्र अहादीस में आया है (1) शीश अलैहिस्सलाम (2) यूशा अलैहिस्सलाम (3) खिजर अलैहिस्सलाम (इनके नबी होने में इख़तेलाफ़ है)

उन अम्बिया में पांच नबी एक ही घराने से तअल्लुक रखते हैं, हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम, इब्राहिम अलैहिस्सलाम के बेटे हज़रत इसहाक अलैहिस्सलाम इसहाक अलैहिस्सलाम के बेटे हज़रत याकूब

अलैहिस्सलाम, याकूब अलैहिस्सलाम के बेटे हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम और इब्राहिम अलैहिस्सलाम के भतीजे हज़रत लूत अलैहिस्सलाम।

अरब से तअल्लुक रखने वाले अम्बिया

आदम अलैहिस्सलाम, हूद अलैहिस्सलाम, सालेह अलैहिस्सलाम, इसमाइल अलैहिस्सलाम, शुऐब अलैहिस्सलाम और मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

इराक से तअल्लुक रखने वाले अम्बिया

इदरीस अलैहिस्सलाम, नूह अलैहिस्सलाम, इब्राहिम अलैहिस्सलाम और यूनस अलैहिस्सलाम।

शाम और फिलसतीन से तअल्लुक रखने वाले अम्बिया

लूत अलैहिस्सलाम, इसहाक अलैहिस्सलाम, याकूब अलैहिस्सलाम, अय्यूब अलैहिस्सलाम, जुल किफल अलैहिस्सलाम, दाउद अलैहिस्सलाम, सुलैमान अलैहिस्सलाम, इलयास अलैहिस्सलाम, अलयसा अलैहिस्सलाम, जकरिया अलैहिस्सलाम, यहया अलैहिस्सलाम और ईसा अलैहिस्सलाम।

मिश्र से तअल्लुक रखने वाले अम्बिया

युसूफ अलैहिस्सलाम, मूसा अलैहिस्सलाम और हारून अलैहिस्सलाम।

इन 25 अम्बिया के कुरान करीम में ज़िक्र की तकरीबी तादाद

आदम अलैहिस्सलाम 25	इदरीस अलैहिस्सलाम 2
नूह अलैहिस्सलाम 43	हूद अलैहिस्सलाम 7
सालिह अलैहिस्सलाम 9	इब्राहिम अलैहिस्सलाम 69
लूत अलैहिस्सलाम 27	इसमाइल अलैहिस्सलाम 12
इसहाक अलैहिस्सलाम 17	याकूब अलैहिस्सलाम 16
युसूफ अलैहिस्सलाम 27	अय्यूब अलैहिस्सलाम 4
शुऐब अलैहिस्सलाम 11	मूसा अलैहिस्सलाम 136
हारून अलैहिस्सलाम 19	यूनुस अलैहिस्सलाम 6
दाउद अलैहिस्सलाम 16	सुलैमान अलैहिस्सलाम 17
इलयास अलैहिस्सलाम 3	अलयसा अलैहिस्सलाम 2
जकरिया अलैहिस्सलाम 8	यहया अलैहिस्सलाम 4
ईसा अलैहिस्सलाम 25	जुल किफल अलैहिस्सलाम 2

मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम 5 सराहत के साथ।

कुरान में ुहूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ज़िक्र पांच मरतबा सराहत के साथ हुआ है। (मोहम्मद का लफ़्ज़ चार मरतबा और अहमद का लफ़्ज़ एक मरतबा)। लफ़्जे रसूलुल्लाह, रसूल और नबी के साथ आपका ज़िक्र बहुत सी जगहों पर आया है जबकि बेशुमार जगहों पर आपको बराहे रास्त मुखातब किया गया है।

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के मुतअल्लिक कितबों में मज़कूर है कि वह जन्नत से हिन्द की सरज़मीन पर उतारे गए। हिन्द या मक्का में मदफून हैं।

हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम के दो साहबजादे हज़रत इसहाक अलैहिस्सलाम और हज़रत इसमाइल अलैहिस्सलाम हैं। इनके बाद

तमाम अम्बिया-ए-किराम हज़रत इसहाक अलैहिस्सलाम की औलाद से हुए, सिवाए तमाम नबियों के सरदार हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कि वह हज़रत इसमाइल अलैहिस्सलाम की औलाद से हैं।

हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम का लकब इसराइल था जिसके मानी हैं बन्दा खुदा। उनही के नसल को बनी इसराइल कहते हैं।

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम कौमे नूह, हज़रत हूद अलैहिस्सलाम कौमे आद, हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम कौमे समूद, हज़रत लूत अलैहिस्सलाम कौमे लूत और हज़रत मूसा, हारून, दाउद, सुलैमान, जकरिया, यहया और ईसा अलैहिस्सलाम कौमे बनी इसराइल के मुख्तलिफ कबाएल की इस्लाह के लिए रसूल बना कर भेजे गए।

हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम की ज़िन्दगी के मुख्तसर अहवाल

हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम तक्ररीबन चार हज़ार साल पहले इराक में पैदा हुए।

उनका वालिद आजर मजहबी पेशवा था, बुत बना कर बेचा करता था।

हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम बचपन से ही बुतों की इबादत की मुखालिफ़त की।

हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम की खुल कर बुतों की मुखालिफ़त के बाद उनको क़त्ल करने और घर से निकालने की धमकी दी गई।

हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम का एक इबादतगाह में धुआँ कर बड़े बुत के अलावा तमाम बुतों के टुकड़े टुकड़े करने का वाक़या पेश आया जिसका ज़िक्र क़ुरान करीम में है और फिर नमरूद बादशाह के साथ मुनाजरा हुआ।

मुनाजरा में हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम के मंतिकी जवाब पर गौर करने के बजाए यह शाही फरमान जारी किया गया कि इसको जला डालो और अपने माबूदों की मदद करो।

हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम को आतिशे नमरूद में डाले जाने का वाक़या पेश आया मगर अल्लाह तआला के हुकुम से आग हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम के लिए ठंडी होने के साथ सलामती और अराम की चीज़ बन गई।

इस कौम की बद नसीबी की हद यह थी इतना बड़ा मोजज़ा देखने के बावज़ूद एक आदमी भी ईमान नहीं लाया।

चुनांचे हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम इराक छोड़ कर मुल्के शाम तशरीफ ले गए।

वहां से फिलसतीन चले गए और वहीं मुस्तकिल क़याम फरमा कर इसी को दावत का मरकज बनया।

एक मरतबा हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम अपनी बीवी हज़रत सारा के साथ मिश्र तशरीफ ले गए।

वहां के बादशाह ने हज़रत हाजरा को हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम की अहलिया हज़रत सारा की खिदमत के लिए पेश किया।

उस वक़्त तक हज़रत सारा की कोई औलाद नहीं हुई थी।

मिश्र से हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम फिर फिलसतीन वापस तशरीफ ले गए।

हज़रत सारा ने खुद हज़रत हाजरा का निकाह हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम के साथ करवा दिया।

बुदापे में हज़रत हाजरा के बतन से हज़रत इसमाइल अलैहिस्सलाम पैदा हुए।

कुछ अरसा बाद हज़रत सारा के बतन से हज़रत इसहाक अलैहिस्सलाम पैदा हुए।

अल्लाह तआल के हुकुम से हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम ने अपनी बीवी हज़रत हाजरा और बेटे हज़रत इसमाइल अलैहिस्सलाम को मक्का के चटयल मैदान में बैतुल्लाह के करीब छोड़ दिया।

जब खाने पीने के लिए कुछ न रहा तो हज़रत हाजरा बेचैन हो कर करीब की सफा और मरवा पहाड़ियों पर पानी की तलाश में दौड़ी।
चुनांचे पानी का चशमा जमजम जारी हुआ।

कुछ मुद्दत के बाद एक कबीला बनु जरहम का इधर से गुजर हुआ। पानी की सहूलत देख कर उन्होंने हज़रत हाजरा से क़याम की इजाज़त चाही, हज़रत हाजरा ने वहां क़याम करने की इजाज़त दे दी। हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम को खाब में दिखाया गया कि वह अपने एकलौते बेटे को ज़बह कर रहे हैं। नबी का खाब सच्चा हुआ करता है, चुनांचे अल्लाह के इस हुकुम की तकमिल के लिए फौरन फिलसतीन से मक्का पहुंच गए। जब बाप ने बेटे को बताया कि अल्लाह तआला ने मुझे तुम्हें ज़बह करने का हुकुम दिया है तो फरमाबरदार बेटे इसमाइल अलैहिस्सलाम का जवाब था अब्बा जाना! जो कुछ आपको हुकुम दिया जा रहा है उसे कर डालिए। इंशाअल्लाह आप मुझे सब्र करने वालों में पाएंगे।

और फिर अल्लाह तआला की रज़ा के लिए हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम ने तारीख़ इंसानी का वह अजीमुश शान कारनामा अंजाम दिया जिसका मुशाहिदा न इससे पहले कभी ज़मीन व आसमान ने किया और न उसके बाद करेंगे। अपने दिल के टुकड़े को मुंह के बल ज़मीन पर लिटा दिया, छुरी तेज की, आंखों पर पट्टी बांधी और उस वक़्त तक पूरी ताकत से छुरी अपने बेटे के गले पर चलाते रहे जब तक अल्लाह तआला की तरफ से यह आवाज़ न आ गई ऐ इब्राहिम! तुने खाब सच कर दिखाया, हम नेक लोगों को ऐसा ही बदला देते हैं। चुनांचे हज़रत इसमाइल अलैहिस्सलाम की जगह जन्नत से एक मेंढा भेज दिया गया जिसे हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम ने ज़बह कर दिया।

इस अज़ीम इमतिहान में कामयाबी के बाद अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम को हुकुम दिया कि दुनिया में मेरी इबादत के

लिए घर तामीर करो। चुनांचे बाप बेटे ने मिल कर बैतुल्लाह शरीफ (खाना काबा) की तामीर की।

बैतुल्लाह की तामीर से फरागत के बाद अल्लाह तआला ने हुकुम दिया कि लोगों में हज का एलान कर दो। हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम ने हज का एलान किया चुनांचे अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम का इलान नह सिर्फ उस वक्त के जिन्दा लोगों तक पहुंचा दिया बल्कि आलमे अरवाह में तमाम रुहों ने भी यह आवाज़ सुनी, जिस शख्स की किसमत में बैतुल्लाह की ज़ियारत लिखी थी उसने इस इलान के जवाब में लब्बैक कहा।

खुलफाए राशिदीन की ज़िन्दगी के मुख्तसर अहवाल

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रिसालत व नुबूवत की अज़ीम ज़िम्मेदारी का हक़ अदा करने के बाद 12 रबीउल अब्वल 11 हिजरी को तकरीबन 63 साल की उम्र में इंतिकाल फरमा गए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के बाद तकरीबन 30 साल यानी 40 हिजरी तक हज़रत अबू बकर, हज़रत उमर फारूक, हज़रत उसमान गनी और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हुम ने खिलाफत की ज़िम्मेदारियां बखूबी अंजाम दीं। 11 हिजरी से 40 हिजरी तक का वक़्त तारीख में खिलाफते राशिदा के नाम से जाना गया है और उन जलीलुल कदर सहाबा को खुलफाए राशिदीन के नाम से जाना जाता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन्हीं खुलफाए राशिदीन के मुतअल्लिक़ इरशाद फरमाया है “तुम मेरी और मेरे बाद आने वाले खुलफाए राशिदीन की सुन्नत को बहुत मज़बूती के साथ पकड़ लो।” (तिर्मिज़ी, अबू दाऊद)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशादात “मेरी उम्मत में खिलाफत तीस साल तक रहेगी फिर बादशाहत हो जाएगी” (तिर्मिज़ी, मुस्नद अहमद) “तुम्हारे दीन की इब्तिदा में नुबूवत व रहमत है फिर खिलाफत व रहमत होगी, फिर बादशाहत व जबरियत हो जाएगी” (सुयूती) की रौशनी में मुहम्मदसीन व मुफक्केरीन और मुअर्रखीन फरमाते हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशाद “तुम मेरे और मेरे बाद आने वाले खुलफाए राशिदीन की सुन्नत को बहुत मज़बूती के साथ पकड़ लो” से मुराद यही चार

खुलफा हैं जिनका तअल्लु कबीला कुरैश से है। हज़रत अमीर मआविया रज़ियल्लाहु अन्हु और उनके बाद यह खिलाफत बादशात में तब्दील होती चली गई और खलीफा ने एक बादशाह की हैसिएत इख्तियार कर ली। मुअर्रेखीन ने हज़रत हसन बिन अली की हज़रत मआविया से सुलह से पहले तकरीबन सात माह की खिलाफत को भी खिलाफते राशिदा में शुमार किया है, क्योंकि हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु की तकरीबन सात माह की खिलाफत को शुमार करके ही तीस साल मुकम्मल होते हैं। बाज़ मुअर्रेखीन ने हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ को हुकमन पांचवां खलीफा राशिद शुमार किया है, क्योंकि उन्होंने चारों खुलफा के नक्शे क़दम पर चल कर खिलाफत की जिम्मेदारियां निभाईं।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नियाबत में दीन और दुनिया के उमूर में सरपरस्ती करने और शरई अहकामात का निफाज़ कराने का नाम खिलाफत है। राशिद की जमा राशिदून और राशिदीन आती है जिसके मानी सीधे रास्ते पर चलने वाले यानी हिदायत याफ़ता के हैं।

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु (खिलाफत 11 हिजरी से 13 हिजरी तक)

आपका नाम अब्दुल्लाह बिन अबी कुहाफा, कुन्नियत अबू बकर और वाक़या मेराज की तसदीक़ करने से लक़ब सिद्दीक़ हुआ। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नबी बनाए जाने के रोज़ ही हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के बाद सबसे पहले इस्लाम क़बूल

किया। इनकी तबलीग से बेशुमार सहाबा इस्लाम लाए जिनमें बाज़ अहम नाम यह हैं, हज़रत उसमान गनी, हज़रत जुबैर बिन अवाम, हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ, हज़रत तल्हा बिन उबैदुल्लाह और हज़रत साद बिन अबी वक्कास रज़ियल्लाहु अन्हुम। इस्लाम लाने के बाद से मौत तक पूरी ज़िन्दगी एलाए कलेमतुल्लाह और एहयाए इस्लाम में लगा दी। अल्लाह तआला के अता करदा माल को अल्लह तआला के रास्ते में आप बड़ी सखावत और फरावानी से खर्च करते थे, मसलन बेशुमार गुलामों को खरीद कर आज़ाद किया जिनमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुअज़्ज़िन हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु भी हैं। आपकी साहबज़ादी हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के इंतिकाल के बाद निकाह फरमाया। आपने मदीना की तरफ हिजरत नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ की। कुरान करीम की आयत (सूरह तौबा 40) में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु का ज़िक्र है। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुकुम से नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात से पहले चंद नमाज़ें हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ही ने इमामत करके सहाबा को पढ़ाईं। इंतिकाल के दिन हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ मिलकर नमाज़े फजर की इमामत की। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद सहाबाए किराम के मशवरे से आपको खलीफा बनाया गया। आपकी खिलाफत के चंद अहम काम यह हैं:

प्रस्तावना

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न सिर्फ आखरी नबी हैं बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत अंतरराष्ट्रीय भी है, यानी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कबिला कुरैश या अरबों के लिए नहीं बल्कि पुरी दुनिया के लिए, इसी तरह सिर्फ उस ज़माना के लिए नहीं जिसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए बल्कि क्रियामत तक आने वाले तमाम इंसान व जिन्नात के लिए नबी व रसूल बना कर भेजे गए। कुरान व हदीस की रौशनी में उम्मत मुस्लिमा खास कर उलमा-ए-दीन की जिम्मेदारी है कि हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के बाद दीने इस्लाम की हिफाज़त करके कुरान व हदीस के पैगाम को दुनिया के कोने कोने तक पहुंचाएँ। चूनांचे उलमा-ए-कराम ने अपने अपने ज़माने में मुख्तलिफ़ तरीकों से इस जिम्मेदारी को अंजाम दिया। उलमा-ए-कराम की कुरान व हदीस की खिदमात को भुलाया नहीं जा सकता है और इंशा अल्लाह उलमा-ए-कराम की इल्मी खिदमात से कल क्रियामत तक इस्तिफादा किया जाता रहेगा। अब नई टेक्नोलॉजी (वेबसाइट, वाट्स ऐप, मोबाइल ऐप, फेसबुक और यूट्यूब वगैरह) को दीने इस्लाम की खिदमात के लिए उलमा-ए-कराम ने इस्तेमाल करना शुरू तो कर दिया है मगर इसमें मज़ीद काम करने की सख्त ज़रूरत है।

अलहमदु लिल्लाह बाज़ दोस्तों की टेक्निकल समर्थन और बाज़ मुहसिनीन के माली योगदान से हमने भी दीने इस्लाम की खिदमात के लिए नई टेक्नोलॉजी के मैदान में छोड़े दौड़ा दिए हैं ॥ इस

जमा किया गया मगर यह तजवीज़ हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु की ही थी और उन्हीं के इसरार पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु इस अमल के लिए तैयार हुए थे। मदीना की तरफ हिजरत पोशिदा तौर पर नहीं बल्कि खुल्लम खुल्ला तौर पर की।

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने मरजुल वफात में सहाबाए किराम के मशवरे से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को मुसलमानों का खलीफा बनाया। बाद में आपको अमीरुल मोमेनीन के खिताब से नवाजा गया। आपके अहदे खिलाफत में मुझे इराक़, फारस, शाम और मिश्र फतह हुए, इस्लामी कैलेंडर का इफतिताह हुआ, कूफा और बसरा शहर आबाद किए गए, रमज़ान के महीने में नमाज़े तरावीह का जमाअत के साथ एहतेमाम शुरू हुआ, ज़कात की आमदनी के इंदेराज की गरज़ से बैतुल माल कायम किया गया।

26 ज़िलहिज्जा 23 हिजरी की सुबह आप मस्जिदे नबवी में नमाज़े फज़ की इमामत कर रहे थे कि फ़िरोज़ नामी मजूसी गुलाम ने खंजर से ज़ख्मी किया, चार दिनों के बाद 1 मुहर्रम 26 हिजरी को इंतिक़ाल फरमा गए। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के पहलू में दफन हुए। हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु की खिलाफत दस साल छः माह और चार दिन रही।

हज़रत उसमान गनी रज़ियल्लाहु अन्हु (खिलाफत 24 हिजरी से 35 हिजरी तक)

आपका नाम उसमान बिन अफ़फ़ान, कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह और अबू उमर है। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दो

साहबज़ादियां (रुक़य्या और उम्मे कुलसूम) यके बाद दीगरे आपके निकाह में आईं, इसलिए जुन्नुरैन के लक़ब से मशहूर हुए। दोबार हबशा हिजरत की फिर हबशा से मदीना को हिजरत फरमाई। आपने अल्लाह के रास्ते में बहुत माल खर्च फरमाया, जंगे तबूक के लश्कर की तैयारी के लिए बेशुमार माल व सामान अता फरमाए। जंगे बदर के अलावा तमाम जंगों में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ रहे। हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत के बाद खलीफा बने। 35 हिजरी में 82 साल की उम्र में आपु सन्न करीम की तिलावत करते हुए शहीद हुए। जन्नतुल बकी में मदफून हैं। आपकी खिलाफत 11 साल, 11 माह और 13 दिन रही। आपकी खिलाफत में तूनिस मुल्क फतह हुआ। फुतूहात की वजह से इस्लामी ममलकत में बहुत ज़्यादा तौसी हुई जिसकी वजह से यह सोच कर कि कहीं कुरान करीम की क़िरात में इख़्तेलाफ़ रोबूमा न हो जाए आपने कुरान करीम को एक सहीफा (मुसहफ़े उसमानी) में जमा कराया और उस सहीफे के नुसखे तमाम रियासतों में भेजे गए, इस तरह कुरान करीम के एक नुसखा (मुसहफ़े उसमानी) पर उम्मते मुस्लिमा मुत्तहिद हो गई।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु

(खिलाफत 35 हिजरी से 40 हिजरी तक)

आपका नाम अली बिन अबी तालिब, कुन्नियत अबुल हसन और अबू तुराब हैं। आप नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचाज़ाद भाई और दामाद हैं। आपकी तरबियत नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घर पर हुई। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

की सबसे छोटी साहबज़ादी हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से
 आपकी शादी हुई। आपने बचपन में भी कभी ढुब परस्ती नहीं की
 थी। 13 साल से कम की उम्र में इस्लाम लाए, बच्चों में सबसे पहले
 आप ही इस्लाम लाए थे। शबे हिजरत में अपनी जान को खतरे में
 डाल कर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बिस्तर पर
 सोए। वही लिखने वाले चंद सहाबा में से एक आप भी हैं। जंगे तबूक
 के मौक़े पर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन्हें मदीना
 में खलीफा बना कर छोड़ा। सिवाए उस जंग के बाक़ी तमाम गज़व्वा
 में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ रहे। आपकी
 बहादुरी के कारनामे बहुत मशहूर हैं। आपकी इल्मी हैसियत बड़ी
 मुसल्लम थी हत्ताकि हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक
 मौक़े पर फरमाया कि हज़रत अली हम सबसे बढ़कर क़ाज़ी हैं।
 हज़रत उसमान गनी रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत के बाद सहाबए
 किराम ने मशवरे के बाद आपको खलीफा बनाया। आपने चंद
 मसलेहतों की वजह से मुसलमानों का दारुल खिलाफत मदीना से
 इराक़ के शहर कूफा मुंतक़िल कर दिया। पुलिस का शोबा बनाया।
 36 हिजरी में जंगे जमल और 37 हिजरी में जंगे सिफ़ीन वाक़े हुई।
 17 रमज़ानुल मुबारक 40 हिजरी की सुबह को इब्ने मुलज़िम के
 हाथों शहीद हो गए और कूफा ही में दफन किए गए। इस तरह
 आपकी कुल उम्र तक्ररीबन 63 साल और आपकी खिलाफत चार साल
 और सात माह रही।

हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हु

आपका नाम हसन बिन अली है, आपकी वालिदा हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा हैं जो कुतूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की साहबज़ादी हैं। रमज़ान 3 हिजरी में पैदा एषु हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने नवासे हज़रत हसन और हज़रत हुसैन से बहुत मोहब्बत किया करते थे। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत के बाद इराक में मुसलमानों के इसरार पर हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु ने बैअते खिलाफत ली। दूसरी तरफ शाम में हज़रत मआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ पर बैअत की गई। मुमकिन था कि मुसलमानों के दरमियान एक और जंग शुरू हो जाए, लेकिन हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु इतिहाई ज़ाहिद व मुत्तकी और अल्लाह से डरने वाले थे, उन्होंने अपनी दूर अंदेशी से मुसलमानों को क़त्ले आम से बचा कर हज़रत मआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ सुलह फरमा ली और खिलाफत से दस्तबरदार हो गए। 50 हिजरी में 47 साल की उम्र में मदीना में इत्तेकाल हुआ, जन्नतुल बकी में मदफून हैं।

खिलाफते राशिदा 11 हिजरी से 41 हिजरी तक (632-662)

खिलाफते बनू उमय्या 41 हिजरी से 132 हिजरी तक (662-750)

खिलाफते बनू अब्बासिया 132 हिजरी से 656 हिजरी तक (750-1258)

खिलाफते उसमानिया 698 हिजरी से 1342 हिजरी तक (1299-1924)

गरज़ ये कि 1924 में तकरीबन 1350 साल बाद मुसलमानों की एक मरकज़ी खिलाफत/हुकूमत खत्म हो गई।

हज़रत फातिमा बिनते मोहम्मद की मुख्तसर ज़िन्दगी के हालात

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की विलादत

हज़रत हसन व हुसैन की वालिदा और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सबसे छोटी साहबज़ादी हज़रत फातिमा ज़ोहरा रज़ियल्लाहु अन्हा की विलादत बेसते नबवी से तकरीबन पांच साल पहले हज़रत खदीजा के बतन से मक्का में हुई। हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की विलादत के वक़्त नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र तकरीबन 35 साल थी और यह वह वक़्त था जब काबा की तामीरे नौ हो रही थी। इसी तामीर के मौक़े पर हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बेहतरीन तदबीर के साथ हज़े असवद को उसकी जगह रख कर आपने जंग के बहुत बड़े खतरे को टाला था और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इस तदबीर ने अरब के तमाम कबीले में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़मत व एहतेराम में इज़ाफा कर दिया था।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तमाम औलादे नरीना की वफात बिल्कुल पचपन ही में हो गई थी, चुनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तीनों बेटों में से कोई भी बेटा 2 या 3 सालसे ज़्यादा बाहयात न रह सका। चारों बेटियों में से भी तीन की क़ात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हयाते मुबारका में ही हो गई थी। हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का इंतिकाल आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के छः महीने बाद हुआ। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चारों बेटियों में कोई भी बेटा 30 साल से ज़म्दा

तारीख की चंद अहम शख्सियात (हज़रत इब्राहिम अलैहिस सलाम, खुलफाए राशिदीन, हज़रत फातमा रज़ी अल्लाहु अन्हा, फातेह सिंध मोहम्मद बिन कासिम, हज़रत इमाम अबु हनीफा, मौलाना मोहम्मद ज़क्रया कांधलवी, मौलाना मोहम्मद इस्माइल संभली, मौलाना मोहम्मद मरगबुर रहमान और शैख डॉक्टर मोहम्मद मुस्तुफा आजमी दामत बरकातुहुम) से मुतअल्लिक मेरे बहुत से मज़ामीन किताबी शकल (महत्वपूर्ण व्यक्ति और स्थान) में तरतीब दिए गए हैं ताकि इस्तिफादा आम हो सके।

अल्लाह तआला से दुआ करता हूँ कि इन सारी खिदमात को कुबूलियत व मक़बूलियत से नवाज़ कर मुझे, ऐपस की तायीद में लेटर लिखने वाले उलमा-ए-कराम, टेक्निकल सपोर्ट करने वाले अहबाब, माली योगदान पेश करने वाले मुहसिनीन, मुतर्जिमीन, एडिटिंग करने वाले हज़रात खास कर जनाब अदनान महमूद उसमानी साहब, डिज़ाइनर और किसी भी किसम से तआवुन पेश करने वाले हज़रात को दोनों जहां की कामयाबी व कामरानी अता फरमाये। आखिर में दारुल उलूम देवबन्द के मुहतमिम हज़रत मौलाना मुफ्ती अबुल कासिम नुमानी साहब, मौलाना मोहम्मद असरारुल हक़ कासमी साहब (मैंबर ऑफ़ पार्लियामेंट) और प्रोफेसर अखतरुल वासे साहब (लेसानियात के कमिशनर, मंत्रालय अक़लियती बहबूद) का शुक्र गुज़ार हूँ कि उन्होंने अपनी मसरूफियात के बावजूद प्रस्तावना लिखा। डॉक्टर शफाअतुल्लाह खान साहब का भी मशकूर हूँ जिनकी मेहनतों से यह प्रोजेक्ट मुकम्मल हुआ।

मोहम्मद नजीब कासमी संभली (रियाज़)

14 मार्च, 2016 ई.

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुशाबह थीं

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा जिस वक़्त चलतीं तो आपकी चाल ढाल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बिल्कुल मुशाबह होती थी (मुस्लिम) इसी तरह हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की रिवायत है कि मैंने उठने बैठने और आदात व अतवार में हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से ज़्यादा किसी को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुशाबह नहीं देखा। (तिर्मिज़ी) गरज़ ये कि हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की चाल ढाल और गुफ्तगु वगैरह में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की झलक नुमायां नज़र आती थीं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा बचपन ही से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बड़ी खिदमत करती थीं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि एक मरतबा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मस्जिदे हराम में नमाज़ पढ़ रहे थे कुरैश के चंद बदमआश ने शरारत की गरज़ से ऊंट की ओझड़ी लाकर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर डाल दी और खुशी से तालियां बचाने लगे। किसी ने हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को खबर दी तो वह दौड़ी दौड़ी आई और हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर से ओझड़ी उतार कर फेंक दी। इसी तरह एक मरतबा नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक गली से गुज़र रहे थे कि किसी बदबख्त ने मकान की छत से आप

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सर मुबारक पर गंदगी फेंक दी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इसी हालत में घर तशरीफ लाए। हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने यह हालत देखी तो रोने लगीं और फिर सर मुबारक और कपड़ों को धोया।

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा न सिर्फ आम हालात में बल्कि सख्त तरीन हालात में भी निहायत दिलेरी और साबित कदमी से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत करती थीं, चुनांचे जंगे उहद में जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दंदाने मुबारक शहीद हो गए थे और पेशानी पर भी ज़ख्म आए थे तो हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा उहद के मैदान पहुंचीं और अपने वालिदे मोहतरम के चेहरे को पानी से धोया और खून साफ किया। गरज़ ये कि हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अपने वालिद की खिदमत का हक अदा किया।

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की मदीना को हिजरत

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का बचपन दीन के लिए तकलीफें सहने में युज़रा, हत्ताकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुरैश की तकलीफों से बचने के लिए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को रफीक़े सफर बना कर मदीना को हिजरत फरमाई। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने अहल व अयाल को मक्का में छोड़ कर गए थे। कुछ मुद्दत के बाद नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने अहल व अयाल और हज़रत अबू बकर के अहल व अयाल को मदीना बुलाने का इंतज़ाम किया। इस तरह हज़रत

फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा अपने वालिद के पास मदीना हिजरत फरमा गई।

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह

2 हिजरी में जंगे बदर के बाद ुहूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी सबसे छोटी बेटी हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह अपने चचाज़ाद भाई अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ कर दिया।

मुसनद अहमद में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का वाक्या खुद उनकी ज़बानी नक़ल किया गया है: जब मैंने ुहूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की साहबज़ादी हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के बारे में अपने निकाह का पैगाम देने का इरादा किया तो मैंने (दिल में) कहा कि मेरे पास कुछ भी नहीं है, फिर यह काम क्योंकर अंजाम पाएगा? लेकिन उसके बाद ही दिल में ुहूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सखावत और नवाज़िश का खयाल आ गया, लिहाज़ा मैंने हाज़िरे खिदमत हो कर पैगामे न्काह दे दिया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सवाल फरमाया तुम्हारे पास (महर में देने के लिए) ुक्क है? मैंने अर्ज़ किया नहीं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया तुम्हारी ज़िरह कहां गई? मैंने कहा जी वह तो है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया उसको (बेच कर महर में) दे दो।

(वज़ाहत) अहले सीरत व मुअर्रिखीन ने लिखा है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फरमान पर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी ज़िरह बेच दी जिसको हज़रत उसमान गनी ने खरीदी थी, लेकिन बाद में हज़रत उसमान गनी रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत

अली को यह ज़िरह बतौर हदिया वापस कर दी थी। इस वाक्ये से महर की अदाएंगी की अहमियत का अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने महर की अदाएंगी के लिए हज़रत अली की पसंदीदा चीज़ को फरोख्त करवा दिया था।

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का महर

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के महर की मिक़दार के मुतअल्लिक़ चंद रिवायात वारिद हुई हैं जिनका खुलासए कलाम यह है कि हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का महर 400 दिरहम से 500 दिरम के दरमियान था। दिरहम चांदी का एक सिक्का हुआ करता था जो आम तौर पर 2.975 ग्राम चांदी पर मुशतमिल होता था। अगर 480 दिरहम वाली रिवायत को लिया जाए तो हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का महर 1428 ग्राम चांदी होगा जिसको उम्मते मुस्लिमा महरें फातमी से जानती हैं। वल्लाहु आलम बिस सवाब।

(वज़ाहत) महर औरत का हक़ है, इसको निकाह के वक़्त मुतअय्यन और रुख़सती से पहले अदा करना चाहिए। महर में हसबे इस्तिताअत दरमयाना रवी इख़्तियार करनी चाहिए, न बहुत कम और न बहुत ज़्यादा। अल्लाह तआला ने इस मौज़ू की अहमियत के पेशे नज़र कुरान करीम में तक़रीबन 7 जगहों पर महर का ज़िक़्र फरमाया है, लिहाज़ा हमें महर ज़रूर अदा करना चाहिए। अगर हज़रत बड़ी रक़म महर में अदा नहीं कर सकते हैं और लड़की के घर वाले महर में बड़ी रक़म मुस्तअय्यन करने पर बज़िद हैं जैसा कि हमारे मुल्कों में आम तौर पर होता है तो हमें हस्बे इस्तिताअतु हक़ न

कुछ महर जरूर नक़द अदा करनी चाहिए (और बाकी मुअज्जल तैय कर लें) जैसा कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली की ज़िरह फरोख़्त करा के महर की अदाएंगी कराई। आज हम जहेज़ और शादी के अख़राजात में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते हैं, लेकिन महर की अदाएंगी जो अल्लाह तआला का हुकुम है उससे कतराते हैं। अल्लाह तआला हम सबकी मगफ़िरत फरमाए, आमीन।

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का जहेज़

तमाम रिवायात जमा करने के बाद जन्नत में सारी औरतों की सरदार का जहेज़ सिर्फ़ चंद चीज़ों पर मुश्तमिल था।

- 1) एक चारपाई।
- 2) एक बिछौना।
- 3) एक चमड़े का तकिया जिसमें खज़ूर की छाल भरी हुई थी।
- 4) एक चक्की (बाज़ रिवायात में 2 चक्कियों का तज़केरा है)।
- 5) दो मशकीज़ा (जिसके ज़रिया कुएं वगैरह से पानी भर के लाया जाता है)।

(वज़ाहत) हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सबसे ज़्यादा प्यारी और चहेती साहबज़ादी थीं, उनको नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जन्नत की औरतों की सरदार बताया है, उनकी शादी किस सादगी से नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अंजाम दी कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने निकाह का पैग़ाम दिया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के सामने इसका तज़केरा किया आप खामोश रहीं जो रिजामंदी की दलील हुआ



07/09/2016

07/09/2016

تاثرات

مصر حاضر میں دینی تعلیمات کو جدید آلاء و وسائل کے ذریعہ عوام الناس تک پہنچانا وقت کا بہت بڑا کام ہے، اللہ کا شکر ہے کہ بعض دینی، معاشرتی اور اصلاحی تحریروں نے اس مسئلے میں کام کرنا شروع کر دیا ہے، جس کے سبب آج انٹرنیٹ پر دین کے حقائق سے کافی مواد موجود ہے۔ اگرچہ اس میدان میں زیادہ تر مغربی ممالک کے مسلمان سرگرم ہیں لیکن اب ان کے نقش قدم پر چلتے ہوئے مشرقی ممالک کے علماء و اعیان اسلام بھی اس طرف متوجہ ہو رہے ہیں جن میں غز پریم ڈاکٹر محمد نجیب قاسمی صاحب کا نام سر پرست ہے۔ وہ انٹرنیٹ پر بہت سادہ دینی مواد ڈال چکے ہیں، باضابطہ طور پر ایک اسلامی، اصلاحی ویب سائٹ بھی چلاتے ہیں۔ ڈاکٹر محمد نجیب قاسمی کا کلچر دس دواں ہے۔ وہ اب تک تنقید، اہم موضوعات پر سینکڑوں مضامین اور کتابیں لکھ چکے ہیں۔ ان کے مضامین پوری دنیا میں بڑی دلچسپی کے ساتھ پڑھے جاتے ہیں۔ وہ جدید تکنیکی، قانونی، اقتصاد، ہونے کی وجہ سے اپنے مضامین اور کتابوں کو بہت جلد دنیا بھر میں ایسے ایسے لوگوں تک پہنچا دیتے ہیں جن تک رسائی آسان کام نہیں ہے۔ موصوف کی شخصیت، علوم دینی کے ساتھ علم عصری سے بھی آراستہ ہے۔ وہ ایک طرف عالم دین ہیں، دوسری طرف ڈاکٹر و محقق بھی اور کئی زبانوں میں مہارت بھی رکھتے ہیں اور اس پر مستزاد یہ کہ وہ خالق و متحرک نوجوان ہیں۔ جس طرح وہ اردو، ہندی، انگریزی اور عربی میں دینی، اصلاحی مضامین اور کتابیں لکھ کر عوام کے سامنے لا رہے ہیں، وہ اس کے لئے حسین اور مبارک ہا کے مستحق ہیں۔ ان کی شبہ اور دو کی معروضات، وجد و جہد کو دیکھتے ہوئے ان سے یہ امید کی جاسکتی ہے کہ وہ مستقبل میں بھی اسی مستعدی کے ساتھ مذکورہ تمام کاموں کو جاری رکھیں گے۔ میں دعا گو ہوں کہ باری تعالیٰ ان سے مزید دینی، اصلاحی اور علمی کام لے اور وہ اکابرین کے نقش قدم پر گامزن رہیں۔ آمین!

کلمہ

(مولانا) اسرار الحق قاسمی

المکہ، فی، نوک، سعید (الہادی)

صدر آل اہل بیت، علی فاخر، علی بن ابی طالب

Email: asrarulhaqqasmi@gmail.com

प्रो. अरुणकुमार दास

आयुर्वेद

PROF. AKHTARUL WASEY
Commissioner



भाषागत अल्पसंख्यकों के आयुक्त

अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय

भारत सरकार

Commissioner for Linguistic
Minorities in India

Ministry of Minority Affairs
Government of India

المقر

[illegible][illegible]

ستاروں سے آگے جہاں اور بھی ہیں

ابھی عشق کے اوجوں پر بھی ہیں

اعتراف

(پروفیسر اختر الومح)

سابقہ انگریزی اور اردو کے درمیان تعلیمی فرق اور تعلیمی نظام

سابقہ حدود، شیعہ اساتذہ کا نظریہ ہے کہ یہ اصولیہ اصول ہے، لیکن

سابقہ اسٹیج پر سے اتر کر کھڑی ہوئی

अम्बिया व रसूल

अल्लाह तआला ने इंसान व जिन्नात को अपनी इबादत के लिए पैदा फरमाया जैसा कि अल्लाह तआला ने अपने पाक कलाम में फरमाया "मैंने जिन्नात और इंसानों को महज इसलिए पैदा किया है कि वह सिर्फ मेरी इबादत करें।" (सूरह जारियात 56) अब सवाल पैदा होता है कि इबादत क्या है? किस तरह की जाए? इसका क्या तरीका होना चाहिए? इसी के लिए अल्ला तआला अपने बन्दों में से बाज़ बन्दों को मुंतखब फरमा कर उनको वही के ज़रिया अहकामात भेजता है कि क्या काम करने ज़रूरी हैं? क्या काम किए जा सकते हैं ? और किन कामों से बचना है? गरज़ ये कि वही के ज़रिया ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीका बयान किया जाता है, इसी नाम इबादत है। इन मुंतखब बन्दों को जो वक़्त के इमाम, इल्म व अमल के पैकर और तक़वा के अलमबरदार होते हैं, नबी या रसूल कहा जाता है, जिन की ज़िम्मेदारी अल्लाह के बन्दों को अपने क़ौल व अमल से अल्लाह तआला की तरफ बुलाना होती है। इन अम्बिया व रसूलों के वाक़यात पढ़ने चाहिए जैसा कि हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम के वाक़या को कदरे तफ़सील से बयान करने के बाद अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया "अम्बिया-ए-किराम के वाक़यात में अकलमंदों के लिए यकीनन नसीहत और इब्रत है।" (सूरह यूसुफ 111)

नबी और रसूल में क्या फ़र्क है? उसकी तशरीह में उलमा के बह से रायें और अक़वाल हैं लेकिन तमाम मुफ़क्केरीन व मुफ़क्केरीन और उलमा इस बात पर मुत्तफ़िक हैं कि कुरान व हदीस में दोनों लफ़्ज़

खादिम हैं तो मैंने ही इनको मशवरा दिया कि यह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से एक खादिम तलब कर लें ताकि इस मशक्कत से बच सकें। हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह सुन कर फरमाया कि ऐ फातिमा! क्या तुम्हें एक ऐसी चीज़ न बता दूँ जो तुम्हारे लिए खादिम से बेहतर है। जब तुम रात को सोने लगो तो 33 मरतबा सुबहानल्लाह, 33 मरतबा अलहमदु लिल्लाह और 34 मरतबा अल्लाहु अकबर पढ़ लिया करो। (अबू दाऊद जिल्द 2 पेज 64) गरज़ ये कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी चहेती बेटी को खादिम या खादिमा नहीं दी बल्कि अल्लाह तआला की जानिब से इसका बेहतरीन बदला यानी तसबीहात अता फरमाई, इन तसबीहात को उम्मत मुस्लिमा तसबिहे फातमी से जानती है।

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के बाज़ फज़ाइल व मनाकिब
 रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया फातिमा मेरे जिस्म का टुकड़ा है, जिसने उसे नाराज़ किया उसने मुझे नाराज़ किया। दूसरी रिवायत में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के रंज से मुझे रंज होता और और उसकी तकलीफ से मुझे तकलीफ होती है। (मुस्लिम)

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब सफर में तशरीफ ले जाते तो सबसे आखिर में हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से मिल कर रवाना होते थे और जब वापस तशरीफ लाते तो सबसे पहले हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास तशरीफ ले जाते थे। (मिशकात)

हज़रत हुजैफा रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि मैं नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाज़िर हुआ, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस वक़्त फरमाया कि बेशक यह फरिश्ता है जो ज़मीन पर आज की इस रात से पहले कभी नाज़िल नहीं हुआ, अपने रब से इजाज़त ले कर मुझे सलाम करने और बशारत देने के लिए आया है कि यकीनन हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा जन्नत की औरतों की सरदार हैं और हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा जन्नत के जवानों के सरदार हैं। (मिशाकत)

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के बाद हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात का बहुत शदीद रंज हुआ था, चूनांचे हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तदफ़ीन के बाद उन्होंने खादिमे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से ऐसी बात कही थी जिससे उनके दिली कर्ब व बेचैनी का इज़हार होता है और जो उनके दिली गम की अक्कासी करता है। हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फरमाया ऐ अनस! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जिस्मे अतहर पर मिट्टी डालना तुम लोगों ने किस तरह गवारा कर लिया। (मिशकात पेज 547)

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की वालिदा हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा तीन बहनें और तमाम छोटे भाई हज़रत फातिमा की ज़िन्दगी में ही वफात पा गए थे और फिर आखिर में आप को बहुत चाहने वाले बाप की वफात हो गई, बाप की वफात पर जितना

जिन नबियों कौर रसूलों का तजकिरा कुरान करीम में आया है उनकी तादाद 25 है, उनमें से 18 का जिक्र तो कुरान करीम (सूरह इनाम 83-86) में एक ही जगह पर है। जिन 25 अम्बिया का जिक्र कुरान करीम में आया है उनके नाम यह हैं।

(1) आदम अलैहिस्सलाम (2) इदरीस अलैहिस्सलाम (3) नूह अलैहिस्सलाम (4) हूद अलैहिस्सलाम (5) सालेह अलैहिस्सलाम (6) इब्राहिम अलैहिस्सलाम (7) लूत अलैहिस्सलाम (8) इसमाइल अलैहिस्सलाम (9) इसहाक अलैहिस्सलाम (10) याकूब अलैहिस्सलाम (11) यूनूस अलैहिस्सलाम (12) अय्यूब अलैहिस्सलाम (13) शुऐब अलैहिस्सलाम (14) मूसा अलैहिस्सलाम (15) हारून अलैहिस्सलाम (16) यूनूस अलैहिस्सलाम (17) दाउद अलैहिस्सलाम (18) सुलैमान अलैहिस्सलाम (19) इलयास अलैहिस्सलाम (20) अलयसा अलैहिस्सलाम (21) जकरिया अलैहिस्सलाम (22) यहया अलैहिस्सलाम (23) जुल किफल अलैहिस्सलाम अक्सर मुफस्सेरीन के नज़दीक) (24) ईसा अलैहिस्सलाम (25) हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम का जिक्र कुरान में (सूरह तौबा 30) में आया है लेकिन उनके नबी होने में इख़तेलाफ़ है। उन 25 अम्बिया-ए-किराम के अलावा उन तीन अम्बिया का जिक्र अहादीस में आया है (1) शीश अलैहिस्सलाम (2) यूशा अलैहिस्सलाम (3) खिजर अलैहिस्सलाम (इनके नबी होने में इख़तेलाफ़ है)

उन अम्बिया में पांच नबी एक ही घराने से तअल्लुक रखते हैं, हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम, इब्राहिम अलैहिस्सलाम के बेटे हज़रत इसहाक अलैहिस्सलाम इसहाक अलैहिस्सलाम के बेटे हज़रत याकूब

फातेह सिंध मोहम्मद बिन कासिम की ज़िन्दगी के मुख्तसर अहवाल

मोहम्मद बिन कासिम ताएफ में सक्फी कबीले के एक मशहू खानदान के यहां 72 हिजरी में पैदा हुआ (आप ताबेईन में से थे)। अब्दुल मलिक बिन मरवान के ज़माने में खिलाफत 75 हिजरी में हज्जाज बिन यूसुफ को मशरिकी रियासतों (इराक) का हाकिमे आला बनाया गया। हज्जाज बिन यूसुफ ने अपने चाचा कासिम को बसरा शहर का वाली बनाया। मोहम्मद बिन कासिम अपने वालिद के साथ ताएफ से बसरा मुंतकिल हो गए और वहीं तालीम व तरबियत पाई। हज्जाज बिन यूसुफ ने अपने खास फौजियों की ट्रेनिंग के लिए वासित शहर बसाया। इस शहर में मोहम्मद बिन कासिम की फौजी तरबियत हुई, चुनांचे सिर्फ 17 साल की उम्र में मोहम्मद बिन कासिम एक फौजी कमांडर की हैसियत से सामने आए।

मोहम्मद बिन कासिम सिंध के मुतअल्लिक बहुत सुना करते थे। खुलफाए राशिदीन के ज़माने में भी इस इलाके में जंगें हुईं। हज़रत अमीर मआविया के अहदे खिलाफत 40 हिजरी में मकरान इलाकेपर फतह हासिल हुई।

88 हिजरी में जज़ीरा याकूत (सैलान) के बादशाम ने अरबों से अच्छे तअल्लुक कायम करने के लिए एक जहाज़ इराक के लिए रवाना किया जिसमें यतीम और बेवा मुस्लिम औरतें थीं। जब यह जहाज़ सिंध के बन्दरगाह (दीबल) से गुज़रा तो सिंध के कुछ लोगों ने इस

जहाज़ को लूट लिया। हज्जाज बिन यूसुफ ने सिंध के बादशाह से जहाज़ और मुस्लिम औरतों की रिहाई का मुतालबा किया, मगर उसने रिहाई करने से इंकार कर दिया। हज्जाज बिन यूसुफ ने दो मरतबा लश्कर कुशाई की मगर नाकामी हुई। जब हज्जाज बिन यूसुफ को यकीन हो गया कि मुस्लिम औरतें और फौज के जवान दीबल के जेलों में बन्द हैं और सिंध का बादशाह अरबों से दुश्मनी की वजह से उनको छोड़ना नहीं चाहता है तो हज्जाज बिन यूसुफ ने सिंध के तमाम इलाकों को फतह करने के लिए 90 हिजरी में एक बड़े लश्कर को मोहम्मद बिन कासिम की क़यादत में सिंध रवाना किया। मोहम्मद बिन कासिम ने सिर्फ 2 साल में अल्लाह के फज़ व करम से 92 हिजरी तक सिंध के बेशुमार इलाके फतह कर लिए। 92 हिजरी में सिंध के राजा दाहिर की क़यादत में सिंधी ज़ौ से फैसलाकुन जंग हुई जिसमें सिंध का राजा मारा गया और मोहम्मद बिन कासिम की क़यादत में मुसलमानों को फतह हुई। गरज़ ये कि सिर्फ 20 साल की उम्र में मोहम्मद बिन कासिम फातेह सिंध बन गए। 95 हिजरी तक सिंध के दूसरे इलाके हत्ताकि पंजाब के बाज़ इलाके मोहम्मद बिन कासिम की क़यादत में मुसलमानों ने फतह कर लिए।

मोहम्मद बिन कासिम ने सिंध पर फतह हासिल करने के बाद जूही हिन्द (मौजूदा हिन्दुस्तान) की हुदूद में दाखिल होने का इरादा किया नए बादशाह सुलैमान बिन अब्दुल मलिक का हुकुम पहुंचा कि फौरन इराक वापस आ जाओ। वलीद बिन अब्दुल मलिक के बाद सुलैमान बिन अब्दुल मलिक खलीफा बने। नए खलीफा सुलैमान बिन अब्दुल

मलिक और मोहम्मद बिन कासिम के खानदान के साथ तअल्लुकात अच्छे नहीं रहे। मोहम्मद बिन कासिम को यकीन था कि मेरा इराक़ वापस जाना मौत को दावत देना है। सिंध के लोगों और फौज के ज़िम्मेदारों ने मोहम्मद बिन कासिम को वापस जाने से मना किया, लेकिन मोहम्मद बिन कासिम ने खलीफा के हुकुम की नाफरमानी करने से इंकार किया और इराक़ वापस गए। सुलैमान बिन अब्दुल मलिक ने दुशमनी व इनाद में मोहम्मद बिन कासिम को जेल में बन्द कर दिया। मुख्तलिफ़ तरह से तकलीफें दीं। गरज़ 95 हिजरी में फातेह सिंध मोहम्मद बिन कासिम सिर्फ 23 साल की उम्र में अल्लाह को प्यारा हो गया।

इमाम अबू हनीफा

(80 हिजरी से 150 हिजरी) हयात और कारनामे

हज़रत इमाम हनीफा के मुख्तसर हालाते ज़िन्दगी

आपका इस्मे गिरामी नोमान और कुन्नियत अबू हनीफा है। आपकी विलादत 80 हिजरी में इराक के कूफा शहर में हुई। आप फारसी नस्ल थे। आपके वालिद का नाम साबित था और आपके दादा नोमान बिन मरज़बान काबुल के अअयान व अशराफ में बड़ी फहम व फिरासत के मालिक थे। आपके परदादा मरज़बान फारस के एक इलाके के हाकिम थे। आपके वालिद हज़रत साबित बचपन में ही हज़रत अली की खिदमत में लाए गए तो हज़रत अली ने आप और आपकी औलाद के लिए बरकत की दुआ फरमाई जो ऐसी क़बूल हुई कि इमाम अबू हनीफा जैसा अज़ीम मुहद्दिस व फकीह और खुदा तरस इंसान पैदा हुआ।

आपने ज़िन्दगी के इब्तिदाई दिनों में ज़रूरी इल्म की तहसील के बाद तिजारत शुरू की, लेकिन आपकी ज़ेहानत को देखते हुए इल्मे हदीस की मारुफ शख्सियत आमिर शाबी कूफी (17 हिजरी से 104 हिजरी) जिन्हें पांच सौ से ज़्यादा असहाबे रूख़ की ज़ियारत का शरफ हासिल है ने आपको तिजारत छोड़ कर मज़ीद इल्मी कमाल हासिल करने का मशवरा दिया, चुनांचे आपने इमाम शाबी कूफी के मशवरे पर इल्मे कलाम, इल्मे हदीस और इल्मे फिक़ह की तरफ तवज्जोह फरमाई और ऐसा कमाल पैदा किया कि इल्मी व अमली दुनिया में इमाम आज़म कहलाए। आपने कूफा, बसरा और बग़दाद के बेशुमार

तमाम अम्बिया-ए-किराम हज़रत इसहाक अलैहिस्सलाम की औलाद से हुए, सिवाए तमाम नबियों के सरदार हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कि वह हज़रत इसमाइल अलैहिस्सलाम की औलाद से हैं।

हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम का लकब इसराइल था जिसके मानी हैं बन्दा खुदा। उनही के नसल को बनी इसराइल कहते हैं।

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम कौमे नूह, हज़रत हूद अलैहिस्सलाम कौमे आद, हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम कौमे समूद, हज़रत लूत अलैहिस्सलाम कौमे लूत और हज़रत मूसा, हारून, दाउद, सुलैमान, जकरिया, यहया और ईसा अलैहिस्सलाम कौमे बनी इसराइल के मुख्तलिफ कबाएल की इस्लाह के लिए रसूल बना कर भेजे गए।

हज़रत इमाम अबू हनीफा के बारे में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बशारत

मुफस्सिरे कुरान शैख जलालुद्दीन सुयूती शाफई मिसी (849 हिजरी से 911 हिजरी) ने अपनी किताब "तबयीजुस सहीफा फी मनाकिबिल इमाम अबी हनीफा" में बुखारी व मुस्लिम और दूसरी हदीस की किताबों में वारिद नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल "(अगर ईमान सुरय्या सितारे के करीब भी होगा तो अहले फारस में से बाज़ लोग उसको हासिल कर लेंगे। (बुखारी) अगर ईमान सुरय्या सितारे के पास भी होगा तो अहले फारस में से एक शख्स उसमें से अपना हिस्सा हासिल कर लेगा। (मुस्लिम) अगर इल्म सुरय्या सितारे पर भी होगा तो अहले फारस में से एक शख्स उसको हासिल कर लेगा। (तबरानी) अगर दीन सुरय्या सितारे पर भी मुअल्लक होगा तो अहले फारस में से कुछ लोग उसको हासिल कर लेंगे। (तबरानी)" जिक्र करने के बाद तहरीर फरमाया है कि मैं कहता हूँ कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इमाम अबू हनीफा (शैख नोमान बिन साबित) के बारे में उन अहादीस में बशारत दी है और यह अहादीस इमाम साहब की बशारत व फज़ीलत के बारे में ऐसे सरीह हैं कि उनपर कुम्हल एतेमाद किया जाता है। शैख इब्ने हजर अलहैसमी शाफई (909 हिजरी से 973 हिजरी) ने अपनी मशहूर व मारुफ किताब "अलखैरातुल हिसान फी मनाकिबि इमाम अबी हनीफा" में तहरीर किया है कि शैख जलालुद्दीन सूयूती के बाज़ तलामिज़ा ने फरमाया और जिस पर हमारे मशायख ने भी एतेमाद किया है कि उन अहादीस की मुराद बिला शुबहा इमाम अबू हनीफा

हैं, इस लिए कि अहले फारस में उनके आसरीन में से कोई भी इल्मे के उस दरजे को नहीं पहुंचा जिस पर इमाम साहब फायज़ थे।

(वज़ाहत) इन अहादीस की मुराद में इख्तिलाफे राय हो सकता है, मगर असरे क़दीम से असरे हाज़िर तक हर ज़माने के मुहद्दिसीन व फुक्कहा व उलमा की एक जमाअत ने लिखा है कि इन अहादीस से मुराद हज़रत इमाम अबू हनीफा हैं। उलमाए शवाफे ने खास तौर पर इस क़ौल को मुदल्लल किया है जैसा कि शाफई मक्तबए फ़िक्र के दो मशहूर जय्यिद उलमा व मुफस्सिरे कुरान के अक़वाल ज़िक्र किए गए।

हज़रत इमाम अबू हनीफा के ताबइयत

हाफ़िज़ इब्ने हजर असक़लानी (फन्ने हदीस के इमाम शुमार किए जाते हैं) से जब इमाम अबू हनीफा के मुतअल्लिक सवाल किया गया तो उन्होंने फरमाया कि इमाम अबू हनीफा ने सहाबए किराम की एक जमाअत को पाया, इसलिए कि वह 80 हिजरी में कूफा में पैदा हुए और वहां सहाबए किराम में से हज़रत अब्दुल्लाह बिन औफी मौजूद थे, उनका इंतिकाल इसके बाद हुआ है। बसरा में हज़रत अनस बिन मालिक थे और उनका इंतिकाल 90 या 93 हिजरी में हुआ है। इब्ने साद ने अपनी सनद से बयान किया है कि इसमें कोई हर्ज नहीं कि कहा जाए कि इमाम अबू हनीफा ने हज़रत अनस बिन मालिक को देखा है और वह तबक़ए ताबेईन में से हैं, नीज़ हज़रत अनस बिन मालिक के अलावा भी इस शहर में दूसरे सहाबए किराम उस वक़्त हयात थे।

चुनांचे हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम इराक छोड़ कर मुल्के शाम तशरीफ ले गए।

वहां से फिलसतीन चले गए और वहीं मुस्तकिल क़याम फरमा कर इसी को दावत का मरकज बनया।

एक मरतबा हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम अपनी बीवी हज़रत सारा के साथ मिश्र तशरीफ ले गए।

वहां के बादशाह ने हज़रत हाजरा को हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम की अहलिया हज़रत सारा की खिदमत के लिए पेश किया।

उस वक़्त तक हज़रत सारा की कोई औलाद नहीं हुई थी।

मिश्र से हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम फिर फिलसतीन वापस तशरीफ ले गए।

हज़रत सारा ने खुद हज़रत हाजरा का निकाह हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम के साथ करवा दिया।

बुदापे में हज़रत हाजरा के बतन से हज़रत इसमाइल अलैहिस्सलाम पैदा हुए।

कुछ अरसा बाद हज़रत सारा के बतन से हज़रत इसहाक अलैहिस्सलाम पैदा हुए।

अल्लाह तआल के हुकुम से हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम ने अपनी बीवी हज़रत हाजरा और बेटे हज़रत इसमाइल अलैहिस्सलाम को मक्का के चटयल मैदान में बैतुल्लाह के करीब छोड़ दिया।

जब खाने पीने के लिए कुछ न रहा तो हज़रत हाजरा बेचैन हो कर करीब की सफा और मरवा पहाड़ियों पर पानी की तलाश में दौड़ी।
चुनांचे पानी का चशमा जमजम जारी हुआ।

इमाम अबू हनीफा के मुतअल्लिक बशारत दी थी जैसा कि बयान किया जा चुका जिससे हज़रत इमाम आजम अबू हनीफा की ताबईयत और फज़ीलत रोज़े रौशन की तरह वाज़ेह हो जाती है।

सहाबए किराम से हज़रत इमाम अबू हनीफा की रिवायात

इमाम अबू माशर अब्दुल करीम बिन अब्दुस समद मुकरी शाफई ने एक रिसाला तहरीर फरमाया है जिसमें उन्होंने इमाम अबू हनीफा की मुख्तलिफ सहाबए किराम से रिवायात नक़ल की है:

- (1) हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु।
- (2) हज़रत अब्दुल्लाह बिन जज़ाउज़ जुबैदी रज़ियल्लाहु अन्हु।
- (3) हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु।
- (4) हज़रत मअक़िल बिन यसार रज़ियल्लाहु अन्हु।
- (5) हज़रत वासिला बिन असका रज़ियल्लाहु अन्हु।
- (6) हज़रत आइशा बिन्त उज़ रज़ियल्लाहु अन्हा।

(वज़ाहत) मुहद्दिसीन की एक जमाअत ने 8 सहाबा से इमाम अबू हनीफा का रिवायत करना साबित किया है, अलबत्ता बाज़ मुहद्दिसीन ने इससे इख़ितलाफ किया है, मगर इमाम अबू हनीफा के ताबई होने पर जमहूर मुहद्दिसीन का इत्तिफाक है।

फुक्रहा व मुहद्दिसीन की बस्ती शहर कूफा

हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु के अहदे खिलाफत में मुस्के इराक़ फतह होने के बाद हज़रत साद बिन अबी वक्कास रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु की इजाज़त से 17 हिजरी में कूफा शहर बसाया, क़बाइले अरब में से फुसहा को आबाद

किया गया। हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु जैसे जलीलुल क़दर सहाबी को वहां भेजा ताकि वह कुरान व सुन्नत की रौशनी में लोगों की रहनुमाई फरमाएं। सहाबए किराम के दरमियान हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु की इल्मी हैसियत मुसल्लम थी, खुद सहाबए किराम भी मसाइले शरइया में उनसे रज़ू फरमाते थे। उनके मुतअल्लिक हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशादात हदीस की किताबों में मौजूद हैं।

इब्ने उम्मे अब्द (यानी अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु) के तरीक़ को लाज़िम पकड़ो। जो कुरान पाक को उस अंदाज़ में पढ़ना चाहे जैसा नाज़िल हुआ था तो उसको चाहिए कि इब्ने उम्मे अब्द (यानी अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु) की किरात के मुताबिक़ पढ़े। हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में फरमाया कि वह इल्म से भरा हुआ एक ज़र्फ़ है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उमर फारूक और हज़रत उस्मान गनी रज़ियल्लाहु अन्हुमा के अहदे खिलाफत में अहले कूफा को कुरान व सुन्नत की तालीम दी। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के अहदे खिलाफत में जब दारुल खिलाफत कूफा मुंतक़िल कर दिया गया तो कूफा इल्म का गहवारा बन गया। सहाबए किराम और ताबईन की एक जमाअत खास कर हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु और उनके शागिर्दों ने इस बस्ती को इल्म व अमल से भर दिया। सहाबए किराम के दरमियान फकीह की हैसियत रखने वाले हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु का इल्मी वरसा

लिए घर तामीर करो। चुनांचे बाप बेटे ने मिल कर बैतुल्लाह शरीफ (खाना काबा) की तामीर की।

बैतुल्लाह की तामीर से फरागत के बाद अल्लाह तआला ने हुकुम दिया कि लोगों में हज का एलान कर दो। हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम ने हज का एलान किया चुनांचे अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम का इलान नह सिर्फ उस वक्त के जिन्दा लोगों तक पहुंचा दिया बल्कि आलमे अरवाह में तमाम रुहों ने भी यह आवाज़ सुनी, जिस शख्स की किसमत में बैतुल्लाह की ज़ियारत लिखी थी उसने इस इलान के जवाब में लब्बैक कहा।

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी हयाते तय्यिबा में उम्मी तौर पर अहादीस लिखने से मना फरमा दिया था ताकि कुरान व हदीस एक दूसरे से मिल न जाएं, अलबत्ता बाज़ फुक़हा सहाबा (जिन्हें कुरान व हदीस की इबारतों के दरमियान फ़र्क़ मालूम था) को नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हयाते तय्यिबा में भी अहादीस लिखने की महदूद इजाज़त थी। खुलफ़ाए राशिदीन के अहद में जब कुरान करीम तदवीन के मुख्तलिफ़ मराहिल से गुज़र कर एक किताबी शक़ल में उम्मतए मुस्लिमा के हर फ़र्द के पास पहुंच गया तो ज़रूरत थी कि कुरान करीम के सबसे पहले पहले मुफ़स्सिर हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अहादीस को भी मुदव्वन किया जाए, चुनांचे अहादीसे रसूल का मुकम्मल ज़खीरा जो मुंतशिर औराक़ और जबानों पर जारी था इंतिहाई एहतियात के साथ हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ की अहदे खिलाफ़त में मुरत्तब किया गया। अहादीसे नबविया के उस ज़खीरे की सनद में उम्मन दो रावी थे एक सहाबी और ताबेई। इन अहादीस के ज़खीरे में ज़ईफ़ या मौजू होने का एहतेमाल भी नहीं था। नीज़ यह वह मुबारक दौर था जिसमें असमाउर रिजाल के इल्म का वजूद भी नहीं आया था और न उसकी ज़रूरत थी, क्योंकि हदीसे रसूल बयान करने वाले सहाबए किराम और ताबेईन इज़ाम या फिर तबे ताबेईन हज़रात थे और उनकी अमानत व दियानत और तक़वा का ज़िक़्र अल्लाह तआला ने कुरान करीम (सूरह तौबा 100) में फरमाया है।

हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा को इन्हीं अहादीस का ज़खीरा मिला थे, चुनांचे उन्होंने कुरान करीम और अहादीस के इस ज़खीरे से इस्तिफ़ादा फरमा के उम्मतए मुस्लिमा को इस तरह मसाइले शरइया

से वाक़िफ़ कराया कि 1300 साल गुज़र जाने के बाद भी तक़रीबन 75 फीसद उम्मत मुस्लिमा उसपर अमल पैरा है और एक हज़ार साल से उम्मत मुस्लिमा की अक्सरियत इमाम अबू हनीफ़ा की तफ़सीर व तशरीह और वज़ाहत व बयान पर ही अमल करती चली आ रही है। इमाम अबू हनीफ़ा को अहादीसे रसूल सिर्फ़ दो वास्तों (सहाबी और ताबई) से मिली हैं, बल्कि बाज़ अहादीस इमाम अबू हनीफ़ा ने सहाबए किराम से बराहे रास्त भी रिवायत की हैं। दो वास्तों से मिली अहादीस को अहादीस सुनाई कहा जाता है जो सनद के एतेबार से हदीस की आला किस्म शुमार होती है। बुखारी और दूसरी हदीस की किताबों में दो वास्तों की कोई भी हदीस मौजूद नहीं है। तीन वास्तों वाली यानी अहादीसे सुलासियात बुखारी में सिर्फ़ 22 हैं, उनमें से 20 अहादीस इमाम बुखारी ने इमाम अबू हनीफ़ा के शागिर्दों से रिवायत की हैं।

80 हिजरी से 150 हिजरी तक इस्लामी हुकूमत और हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा

इमाम अबू हनीफ़ा की विलादत 80 हिजरी में उमवी खलीफ़ा अब्दुल मलिक बिन मरवान के दौरै हुकूमत में हुई, जिसका इंतिकाल 86 हिजरी में हुआ, उसके बाद उसका बेटा वलीद बिन अब्दुल मलिक तख्त नशीन हुआ। 10 साल हुकुमरानी के बाद 96 हिजरी में उसका भी इंतिकाल हो गया फिर उसका भाई सुलैमान बिन अब्दुल मलिक जानशीन बना। 3 साल की हुकुमरानी के बाद 99 हिजरी में यह भी रुखसत हुआ, लेकिन सुलैमान बिन अब्दुल मलिक ने अपनी वफ़ात से पहले हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ को अपना जानशीन मुक़रर

खुलफा हैं जिनका तअल्लु कबीला कुरैश से है। हज़रत अमीर मआविया रज़ियल्लाहु अन्हु और उनके बाद यह खिलाफत बादशात में तब्दील होती चली गई और खलीफा ने एक बादशाह की हैसिएत इख्तियार कर ली। मुअर्रेखीन ने हज़रत हसन बिन अली की हज़रत मआविया से सुलह से पहले तकरीबन सात माह की खिलाफत को भी खिलाफते राशिदा में शुमार किया है, क्योंकि हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु की तकरीबन सात माह की खिलाफत को शुमार करके ही तीस साल मुकम्मल होते हैं। बाज़ मुअर्रेखीन ने हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ को हुकमन पांचवां खलीफा राशिद शुमार किया है, क्योंकि उन्होंने चारों खुलफा के नक्शे क़दम पर चल कर खिलाफत की जिम्मेदारियां निभाईं।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नियाबत में दीन और दुनिया के उमूर में सरपरस्ती करने और शरई अहकामात का निफाज़ कराने का नाम खिलाफत है। राशिद की जमा राशिदून और राशिदीन आती है जिसके मानी सीधे रास्ते पर चलने वाले यानी हिदायत याफ़ता के हैं।

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु (खिलाफत 11 हिजरी से 13 हिजरी तक)

आपका नाम अब्दुल्लाह बिन अबी कुहाफा, कुन्नियत अबू बकर और वाक़या मेराज की तसदीक़ करने से लक़ब सिद्दीक़ हुआ। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नबी बनाए जाने के रोज़ ही हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के बाद सबसे पहले इस्लाम क़बूल

नहीं किया बल्कि रोज़ाना 20 कोड़ों की सजा भी मुकर्रर की (खतीब अलबगदादी जिल्द 13 पेज 328)। 150 हिजरी में इमाम साहब दो फानी से दारे बक्रा की तरफ कूच कर गए। इमाम अहमद बिन हमबल इमाम अबू हनीफा के आजमाइशी दौर को याद करके रोया करते थे और उनके लिए दुआये मगफिरत किया करते थे। (अलखैरातुल हिसान जिल्द 1 पेज 59)

हज़रत इमाम अबू हनीफा और इल्मे हदीस

इमाम अबू हनीफा से अहादीस की रिवायत हदीस की किताबों में कसरत से न होने की वजह से बाज़ लोगों ने यह तअस्सुर पेश किया है कि इमाम अबू हनीफा की इल्मे हदीस में महारत कम थी, हालांकि गौर करें कि जिस शख्स ने सिर्फ बीस साल की उम्र खैल्मे हदीस पर तवज्जोह दी हो, जिसने सहाबा, ताबईन और तबे ताबईन का बेहतरीन ज़माना पाया हो, जिसने सिर्फ एक या दो वास्तों से नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अहादीस सुनी हो, जिसने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद जैसे जलीलुल क़दर फकीह सहाबी के शागिर्दों से 18 साल तरबियत हासिल की हो, जिसने उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ का अहदे खिलाफ़त पाया हो जो तदवीने हदीस का सुनहरा दौर रहा है, जिसने कूफा, बसरा, बगदाद, मक्का मदीना और मुल्के शाम के ऐसे असातज़ा से अहादीस पढ़ी हो जो अपने ज़माने के बड़े बड़े मुहद्दिस रहे हों, जिसने क़ुरान व हदीस की रौशनी में हज़ारों मसाइल का इस्तिम्बात किया हो, क़ुरान व हदीस की रौशनी में किए गए जिसके फैसले को हज़ार साल के अरसे से ज़्यादा उम्मत मुस्लिमा नीज़ बड़े बड़े उलमा व मुहद्दिसीन व मुफस्सेरीन

तसलीम करते चले आए हों, जिसने फिक्रह की तदवीन में अहम खे अदा किया हो, जो सहाबिए रसूल हज़रत अब्दुल्लाह बिन समूद का इल्मी वारिस बना हो, जिसने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद जैसे फुकहा सहाबा के शगिर्दों से इल्मी इस्तिफादा किया हो, जिसके तलामजा बड़े बड़े मुहद्दिस, फक्रीह और इमामे वक़्त बने हों तो उसके मुतअल्लिक ऐसा तअस्सुर पेश करना सिर्फ और सिर्फ गुब्ब व इनाद और इल्म की कमी का नतीजा है। यह ऐसा ही है कि कोई शख्स हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उसमान गनी रज़ियल्लाहु अन्हु के मुतअल्लिक कहे कि उनको इल्मे हदीस से मारेफत कम थी, क्योंकि उनसे गिन्ती के चंद अहादीस हदीस की किताबों में मरवी हैं, हालांकि उन हज़रात का कसरते रिवायत से इजतिनाब दूसरे असबाब की वजह से था जिसकी तफसीलात किताबों में मौजूद हैं। गरज़ ये कि इमाम अबू हनीफा फक्रीह होने के साथ साथ अज़ीम मुहद्दिस भी थे।

हज़रत इमाम अबू हनीफा और हदीस की मशहूर किताबे

अहादीस की मशहूर किताबें (बुखारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, नसई, इब्ने माजा, तबरानी, बैहकी, मुसनद अहमद, मुसनद इब्ने हिब्बान, मुसनद अहमद बिन हमबल वगैरह) इमाम अबू हनीफा की वफात के तक़रीबन 150 साल बाद लिखी गई हैं। इन मजूक़ा किताबों के मुसन्निफ़ीन इमाम अबू हनीफा की हयात में मौजूद ही नहीं थे, उनमें से अक्सर इमाम अबू हनीफा के शगिर्दों के शगिर्द हैं। मशहूर हदीस की किताबों की तसनीफ से पहले ही इमाम अबू हनीफा

— हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु के लश्कर को मुल्के शाम रवाना किया जो कैसर की फौज को शिकस्त देकर सही सालिम वापस आया।

— मुरतदीन, ज़कात न देने वाले और दाइयाने नुबूत से क़िताल करके नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के बाद पैदा हुए तमाम फितनों को खत्म किया।

— मज़क़ूरा फितनों को खत्म करने में बेुश्मार हुपफाज़े किराम शहीद हुए, चुनांचे हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु की राय पर आपने क़ुरान करीम को एक जगह जमा कराया।

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु का 13 हिजरी में इंतिकाल हुआ। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के हुजरा में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पहलू में दफन हुए। आपकी उम तक़रीबन 63 साल और ख़िलाफ़त 11 हिजरी से 13 हिजरी तक दो साल तीन महीने दस दिन रही।

हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु (ख़िलाफ़त 13 हिजरी से 23 हिजरी तक)

आपका नाम उमर बिन खत्ताब, कुन्नियत अबू हफ़स और लक़ब फारूक (हक़ को बातिल से अलग करने वाला) है। 6 नुबूत में 33 साल की उम्र में इस्लाम लाए। आपसे पहले 39 मर्द इस्लाम क़बूल कर चुके थे। आपके क़बूले इस्लाम पर मुसलमानों ने तक़बीर बुलंद की। आपके इस्लाम लाने से मुसलमानों को बहुत तक़वियत मिली। तमाम जंगों में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ रहे। क़ुरान करीम अगरचे हज़रत अबू बकर के अहदे ख़िलाफ़त में

शगिर्द हैं। इसके अलावा शैख हम्माद हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद के इल्मी वारिस और नाइब भी शुमार किए जाते हैं।

इमाम अबू हनीफा की दूसरी बड़ी दरसगाह शहर बसरा थी जो इमामुल मुहद्दिसीन शैख हसन बसरी (वफात 110 हिजरी) के उलूमे हदीस से मालामाल थी, यहां भी इमाम अबू हनीफा ने इल्मे हदीस का भरपूर हिस्सा पाया।

शैख अता बिन अबी रबाह (वफात 114 हिजरी) मक्का में मुक्कीम शैख अता बिन अबी रबाह से भी इमाम अबू हनीफा ने भरपूर इस्तिफादा किया। शैख अता बिन अबी रबाह ने बेशुमार सहाबए किराम खास कर हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा, हज़रत अबू हुऱैरा रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से इस्तिफादा किया था। शैख अता बिन अबी रबाह सहाबिए रसूल हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के खुसूसी शगिर्द शुमार किए जाते हैं।

शैख इकरमा बरबरी (वफात 104 हिजरी) यह हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के खुसूसी शगिर्द हैं। कम व बेश 70 मशहूर ताबईन इनके शगिर्द हैं, इमाम अबू हनीफा भी उनमें शामिल हैं। मक्का में इमाम अबू हनीफा ने इनसे इल्मी इस्तिफादा किया।

मदीना के सात फुकहा में से हज़रत सुऱैमान और हज़रत सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन उमर से इमाम अबू हनीफा ने अहादीस की सिमाअत की है। यह सातों फुकहा मशहूर व मारुफ ताबईन थे। हज़रत सुलैमान उम्मुल मोमेनीन हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा के परवरदा गुलाम हैं, जबकि हज़रत सालिम हज़रत उमर फारूक

रज़ियल्लाहु अन्हु के पोते हैं जिन्होंने अपने वालिद सहाबिए रूख़ हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर से तालीम हासिल की थी।

मुल्के शाम में इमाम औज़ाई और इमाम मकहूल से भी इमाम अबू हनीफा ने इल्म हासिल किया।

दूसरे मुहद्दिसीन के तर्ज़ पर इमाम अबू हनीफा ने अहादीस की सिमाअत के लिए हज के असफार का भरपूर इस्तिमाल किया, चुनांचे आपने तक़रीबन 55 हज अदा किए। हज की अदाएंगी से पहले और बाद में मक्का और मदीना में क़याम फरमा कर कुरान व सुन्नत को समझाने और समझाने में वाफिर वक़्त लगाया। बून उमय्या के आखिरी अहद में जब इमाम अबू हनीफा का हुकुमरानों से इख़्तिलाफ़ हो गया था तो इमाम अबू हनीफा ने तक़रीबन 7 साल मक्का में मुक़ीम रह कर तालीम व तअल्लुम के सिलसिले को जारी रखा।

हज़रत इमाम अबू हनीफा के शगिर्द

सीरतुन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुसन्निफ़े अब्वल "अल्लामा शिबली नोमानी" ने अपनी मशहूर व मारूफ़ किताब "सीरतुन नोमान" में लिखा है कि इमाम अबू हनीफा के दर्स का हल्का इतना कुशादा था कि खलीफ़ए वक़्त की हुदूदे हुकूमत इससे ज़्यादा कुशादा न थीं। सैकड़ों उलमा व मुहद्दिसीन ने इमाम अबू हनीफा से इल्मी इस्तिफ़ादा किया। इमाम शाफ़ई फरमाया करते थे कि जो शख्स इल्मे फ़िक्ह में कमाल हासिल करना चाहे उसको इमाम अबू हनीफा के फ़िक्ह की तरफ़ रुख़ करना चाहिए और यह भी फरमाया कि अगर इमाम मोहम्मद (इमाम अबू हनीफा के शगिर्द) मुझे न मिलते तो शाफ़ई, शाफ़ई न होता बल्कि कुछ और होता।

जमा किया गया मगर यह तजवीज़ हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु की ही थी और उन्हीं के इसरार पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु इस अमल के लिए तैयार हुए थे। मदीना की तरफ हिजरत पोशिदा तौर पर नहीं बल्कि खुल्लम खुल्ला तौर पर की।

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने मरजुल वफात में सहाबाए किराम के मशवरे से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को मुसलमानों का खलीफा बनाया। बाद में आपको अमीरुल मोमेनीन के खिताब से नवाजा गया। आपके अहदे खिलाफत में मुझे इराक़, फारस, शाम और मिश्र फतह हुए, इस्लामी कैलेंडर का इफतिताह हुआ, कूफा और बसरा शहर आबाद किए गए, रमज़ान के महीने में नमाज़े तरावीह का जमाअत के साथ एहतेमाम शुरू हुआ, ज़कात की आमदनी के इंदेराज की गरज़ से बैतुल माल कायम किया गया।

26 ज़िलहिज्जा 23 हिजरी की सुबह आप मस्जिदे नबवी में नमाज़े फज़ की इमामत कर रहे थे कि फ़िरोज़ नामी मजूसी गुलाम ने खंजर से ज़ख्मी किया, चार दिनों के बाद 1 मुहर्रम 26 हिजरी को इंतिक़ाल फरमा गए। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के पहलू में दफन हुए। हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु की खिलाफत दस साल छः माह और चार दिन रही।

हज़रत उसमान गनी रज़ियल्लाहु अन्हु (खिलाफत 24 हिजरी से 35 हिजरी तक)

आपका नाम उसमान बिन अफ़फान, कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह और अबू उमर है। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दो

पाई। इमाम अबू हनीफा से तकरीबन दो साल जेल में तालीम हासिल की। इमाम अबू हनीफा की वफात के बाद क़ाज़ी अबू युसूफ से तालीम मुकम्मल की, फिर मदीना जा कर इमाम मालिक से हदीस पढ़ी। सिर्फ बीस साल की उम्र में मसनदे हदीस पर बैठ गए। यह फिकह हनफी के दूसरे अहम बाज़ू शुमार किए जाते हैं, इसी लिए इमाम अबू युसूफ और इमाम मोहम्मद को सहिबैन कहा जाता है। इमाम मोहम्मद के बेशुमार शगिर्द हैं, लेकिन इमाम शाफई का नाम खास तौर पर ज़िक्र किया जाता है। इमाम मोहम्मद की हदीस की मशहूर किताब "मुअत्ता इमाम मोहम्मद" आज भी हर जगह मौजूद है। इमाम मोहम्मद की तसनीफात बहुत हैं, फिकह हनफी का मदार इन्हीं किताबों पर है, इनकी दर्ज ज़ैल किताबें मशहूर व मारुफ हैं जो फतावा हनफिया का माखज़ हैं।

अलमबसूत, अलजामेउस सगीर, अलजामेउस कबीर, अज़ ज़ियादात, अस सियरुस सगीर, अस सियरुल कबीर।

इमाम जुफर (वफात 158 हिजरी) इमाम जुफर बिन हुज़ैल 110 हिजरी में पैदा हुए। इब्तिदाई उम्र में इल्मे हदीस से खास शगफ व तअल्लुक था, अल्लामा नववी ने इनको साहिबुल हदीस में शुमार किया है, फिर इल्मे फिकह की जानिब तवज्जोह की और आखिर उम्र तक यही मशगला रहा। बसरा के क़ाज़ी के हैसियत से भी रहे। आप हज़रत इमाम अबू हनीफा के खास शागिर्दों में से हैं। आप फिकह हनफी के अहम सुतून हैं।

इमाम यहया बिन सईद अलक़त्तान (वफात 198 हिजरी) आप 120 हिजरी में पैदा हुए। अल्लामा ज़हबी ने लिखा है कि फन अस्माउर रिजाल (सनदे हदीस पर बहस का इल्म) सबसे पहले उन्होंने ही शुरू

किया है, फिर उसके बाद दूसरे हज़रत मसलन इमाम यहया बिन मईन ने इस इल्म को बाकायदा फन की शकल दी। इमाम यहया बिन सईद अलकत्तान ने हज़रत इमाम अबू हनीफा से इल्मी इस्तिफादा किया है।

इमाम अब्दुल्लाह बिन मुबारक (वफात 181 हिजरी) यह भी इमाम अबू हनीफा के शागिर्दों में से हैं। इल्मे हदीस में बड़ी महारत हासिल की, यहां तक कि अमिरुल मोमिनीन फिल हदीस का लक़ब मिला। 118 हिजरी में पैदा हुए और 181 हिजरी में वफात पाई। इमाम अब्दुल्लाह बिन मुबारक का कौल है कि अगर अल्लाह तआला इमाम अबू हनीफा और सुफयान सौरी के ज़रिये मेरी मदद न फरमाता तो मैं एक आम इंसान से बढ़ कर कुछ न होता।

तदवीने फिक़ह

असरे कदीम व जदीद में इल्मे फिक़ह की मुश्तलिफ अल्फाज़ के साथ तारीफ की गई है, मगर उनका खुलासा कलाम यह है कि कुरान व हदीस की रौशनी में अहकामे शरइया का जानना फिक़ह कहलाता है। अहकामे शरइया के जानने के लिए सबसे पहले कुरान करीम और फिर अहादीस की तरफ रुजू किया जाता है। कुरान व हदीस में किसी मसअले की वज़ाहत न मिलने पर इजमा व क़यास (यानी कुरान व हदीस की रौशनी में नए मसाइल के लिए इजतेहाद) की तरफ रुजू किया जाता है।

फिक़ह को समझने से पहले इमाम अबू हनीफा के एक अहम उसूल व ज़ाबते को ज़ेहन में रखें कि मैं पहले किताबुल्लाह और सुन्नते नबवी को इख्तियार करता हूं, जब कोई मसअला किताबुल्लाह और सुन्नते रसूल में नहीं मिलता तो सहाब किराम के अक़वाल व

की सबसे छोटी साहबज़ादी हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से
 आपकी शादी हुई। आपने बचपन में भी कभी ढुब परस्ती नहीं की
 थी। 13 साल से कम की उम्र में इस्लाम लाए, बच्चों में सबसे पहले
 आप ही इस्लाम लाए थे। शबे हिजरत में अपनी जान को खतरे में
 डाल कर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बिस्तर पर
 सोए। वही लिखने वाले चंद सहाबा में से एक आप भी हैं। जंगे तबूक
 के मौके पर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन्हें मदीना
 में खलीफा बना कर छोड़ा। सिवाए उस जंग के बाक़ी तमाम गज़व्वा
 में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ रहे। आपकी
 बहादुरी के कारनामे बहुत मशहूर हैं। आपकी इल्मी हैसियत बड़ी
 मुसल्लम थी हत्ताकि हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक
 मौके पर फरमाया कि हज़रत अली हम सबसे बढ़कर क़ाज़ी हैं।
 हज़रत उसमान गनी रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत के बाद सहाबए
 किराम ने मशवरे के बाद आपको खलीफा बनाया। आपने चंद
 मसलेहतों की वजह से मुसलमानों का दारुल खिलाफत मदीना से
 इराक़ के शहर कूफा मुंतक़िल कर दिया। पुलिस का शोबा बनाया।
 36 हिजरी में जंगे जमल और 37 हिजरी में जंगे सिफ़फ़ीन वाक़े हुई।
 17 रमज़ानुल मुबारक 40 हिजरी की सुबह को इब्ने मुलज़िम के
 हाथों शहीद हो गए और कूफा ही में दफन किए गए। इस तरह
 आपकी कुल उम्र तक्ररीबन 63 साल और आपकी खिलाफत चार साल
 और सात माह रही।

हज़रत इब्राहीम नखई कूफी मसनद नशीन हुए और इल्मे फिक्ह को बहुत कुछ वुसअत दी यहां तक कि उन्हें "फकीहुल इराक़" का लक़ब मिला। हज़रत इब्राहीम नखई कूफी के ज़माने में फिक्ह का गैर मुरत्तब ज़खीरा जमा हो गया था जो उनके शागिर्दों ने खास कर हज़रत हम्माद कूफी ने महफूज़ कर रखा था। हज़रत हम्माद कूफी के इस ज़खीरे को इमाम अबू हनीफा कूफी ने अपने शागिर्दों खास कर इमाम युसूफ, इमाम मोहम्मद और इमाम जुफर को बहुत मुनज़ज़म शकल में पेश कर दिया जो उन्होंने बाक़ायदा किताबों में मुरत्तब कर दिया, यह किताबें आज भी मौजूद हैं। इस तरह इमाम अबू हनीफा हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद के दो वास्तों से हकीकी वारिस बने और इमाम अबू हनीफा के ज़रिये हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद ने कुरान व सुन्नत की रौशनी में जो समझा था वह उम्मत मुस्लिमा को पहुंच गया। गरज़ ये कि फिक्ह हनफी की तदवीन उस दौर का कारनामा है जिसको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खैरुल कुरुन करार दिया और अहादीसे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुकम्मल हिफाज़त के साथ उसी ज़माने में किताबी शकल में मुरत्तब की गई।

(वज़ाहत) इन दिनों बाज़ हज़रात फिक्ह का ही इंकार करना शुरू कर देते हैं हालांकि कुरान व हदीस को समझ कर पढ़ना और इससे मसाइले शरइया का इस्तिंबात करना फिक्ह है। नीज़ कुरान व हदीस में बहुत सी जगह फिक्ह का ज़िक्र भी वज़ाहत के साथ मौजूद हैं। मशहूर हदीस की किताब (बुखारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, नसई, इब्ने माजा, तबरानी, बैहकी, मुसनद अहमद, मुसनद हिब्बान, मुसनद अहमद बिन हमबल वगैरह) की तालीफ से पहले ही इमाम

अबू हनीफा के शागिर्दों ने फिक्ह हनफी को किताबों में मुस्तब कर दिया था। अगर वाकई फिक्ह काबिले रद है तो मजकूर हदीस की किताबों के मुसन्निफों ने अपनी किताब में फिक्ह की तरदीद में कोई बाब क्यों नहीं बनाया? या कोई दूसरी मुस्तकिल किताब फिक्ह की तरदीद में क्यों तसनीफ नहीं की? गरज़ ये कि यह उन हज़रात के हठधरमी है, वरना कुरान व हदीस को समझ कर मसाइल का इस्तिंबात करना ही फिक्ह कहलाता है जिसे जमहूर मुहद्दिसीन व मुफस्सेरीन व उलमाए उम्मत ने तसलीम किया है।

(नुक्ता) फिक्ह हनफी का यह खुसूसी इमतियाज़ है कि साबिका हुकुमतों (खास कर अब्बासिया व उसमानिया हुकूमत) का 80 फीसद कानूने अदालत व फौजदारी फिक्ह हनफी रहा है और आज भी बेशतर मुस्लिम मुमालिक का कानूने अदालत फिक्ह हनफी पर कायम है। यह क़वानीन कुरान व हदीस की रौशनी में बनाए गए हैं।

हज़रत इमाम अबू हनीफा की किताबें

हज़रत इमाम अबू हनीफा ने दौराने दर्स जो अहादीस बयान की हैं उन्हें शागिर्दों ने "हद्दसना" और "अखबरना" वगैरह अल्फाज़ के साथ जमा कर दिया। इमाम अबू हनीफा के दरसी इफादात का नाम "किताबुल आसार" है जो दूसरी सदी हिजरी में मुस्तब हुई उस ज़माने तक किताबों की तालीफ बहुत ज़्यादा आम नहीं थी। "किताबुल आसार" उस दौर की पहली किताब है जिसने बाद के आने वाले मुहद्दिसीन के लिए तरतीब व तबवीब के राहनुमा उसूल फराहम किए। अल्लामा शिबली नोमानी ने "किताबुल आसार" के बहुत से नुस्खों की निशान दही की है लेकिन आम शोहरत चार नुस्खों को

हज़रत फातिमा बिनते मोहम्मद की मुख्तसर ज़िन्दगी के हालात

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की विलादत

हज़रत हसन व हुसैन की वालिदा और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सबसे छोटी साहबज़ादी हज़रत फातिमा ज़ोहरा रज़ियल्लाहु अन्हा की विलादत बेसते नबवी से तकरीबन पांच साल पहले हज़रत खदीजा के बतन से मक्का में हुई। हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की विलादत के वक़्त नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र तकरीबन 35 साल थी और यह वह वक़्त था जब काबा की तामीरे नौ हो रही थी। इसी तामीर के मौक़े पर हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बेहतरीन तदबीर के साथ हज़े असवद को उसकी जगह रख कर आपने जंग के बहुत बड़े खतरे को टाला था और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इस तदबीर ने अरब के तमाम कबीले में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़मत व एहतेराम में इज़ाफा कर दिया था।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तमाम औलादे नरीना की वफात बिल्कुल पचपन ही में हो गई थी, चुनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तीनों बेटों में से कोई भी बेटा 2 या 3 सालसे ज़्यादा बाहयात न रह सका। चारों बेटियों में से भी तीन की क़ात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हयाते मुबारका में ही हो गई थी। हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का इंतिकाल आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के छः महीने बाद हुआ। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चारों बेटियों में कोई भी बेटा 30 साल से ज़म्दा

की खिदमत को ज़रिये मआश नहीं बनाया बल्कि मआश के लिए रेशम बनाने और रेशमी कपड़े तैयार करने का बड़ा कारखाना था जो सहाबिए रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत उमर बिन हु़रैस रज़ियल्लाहु अन्हु के घर में चलता था। इमाम अबू हनीफा का तअल्लुक़ खुशहाल घराने से था, इस लिए लोगों की खास तौर से अपने शागिर्दों की बहुत मदद किया करते थे। आपने 55 हज अदा किए।

हज़रत इमाम अबू हनीफा की शान में बाज़ उलमाए उम्मत के अक़वाल

इमाम अली बिन सालेह (वफात 151 हिजरी) ने इमाम अबू हनीफा की वफात पर फरमाया "इराक़ का मुफ़्ती और फ़कीह गुजर गया।" (मनाकिबे ज़हबी पेज 18)

इमाम मिसअर बिन किदाम (वफात 153 हिजरी) फरमाते थे कि "कूफ़ा के दो शख्सों के सिवा किसी और पर रश्क नहीं आता। इमाम अबू हनीफा और उनका फ़िक़ह, दूसरे शैख हसन बिन सालेह और उनका जुहद व क़नाअत।" (तारीख़े बग़दाद जिल्द 14 पेज 328)

मुल्के शाम के फ़कीह व मुहदिस इमाम औज़ाई (वफात 157 हिजरी) फरमाते थे "इमाम अबू हनीफा पेचीदा मसाइल को सब अहले इल्म से ज़्यादा जानने वाले थे।" (मनाकिब कुरदी पेज 90)

इमाम दाऊद ताई (वफात 160 हिजरी) फरमाते थे कि "इमाम अबू हनीफा के पास वह इल्म था जिसको अहले ईमान के दिल क़बूल करते हैं।" (अलखैरातुल हिसान पेज 32)

इमाम सुफयान सौरी (वफात 167 हिजरी) के पास एक शख्स इमाम अबू हनीफा से मुलाकात करके आया। इमाम सुफयान सौरी ने फरमाया तुम रूए ज़मीन के सबसे बड़े फकीह के पास से आ रहे हो। (अलखैरातुल हिसान पेज 32)

इमाम मालिक बिन अनस (वफात 179 हिजरी) फरमाते हैं कि "मैंने अबू हनीफा जैसा इंसान नहीं देखा।" (अलखैरातुल हिसान पेज 28)

इमाम वकी बिन जर्ह (वफात 195 हिजरी) फरमाते हैं "इमाम अबू हनीफा से बड़ा फकीह और किसी को नहीं देखा।"

इमाम यहया बिन मईन (वफात 233 हिजरी) इमाम अबू हनीफा के कौल पर फतवा दिया करते थे और उनकी अहादीस के हाफिज़ भी थे। उन्होंने इमाम अबू हनीफा की बहुत सारी अहादीस सुनी हैं। (जामे बयानुल उलूम, अल्तामा इब्ने बर जिल्द 2 पेज 149)

इमाम सुफयान बिन उयैना (वफात 198 हिजरी) फरमाते थे कि "मेरी आंखों ने अबू हनीफा जैसा इंसान नहीं देखा। दो चीजों के बारे में खयाल था कि वह शहर कूफा से बाहर न जाएगी मगर वह ज़मीन के आखिरी किनारों तक पहुंच गई। एक इमाम हमज़ा की किरात और दूसरी अबू हनीफा का फिक़ह।" (तारीखे बगदाद जिल्द 13 पेज 347)

इमाम शाफई (वफात 204 हिजरी) फरमाते हैं कि "हम सब इल्मे फिक़ह में इमाम अबू हनीफा के मोहताज हैं, जो शख्स इल्मे फिक़ह में महारत हासिल करना चाहे तो वह इमाम अबू हनीफा का मोहताज होगा।" (तारीखे बगदादी जिल्द 23 पेज 161)

इमाम बुखारी के उस्ताद इमाम मक्की बिन इब्राहीम फरमाते हैं कि "इमाम अबू हनीफा परहेज़गार, आलमे आखिरत के रागिब और अपने

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुशाबह थीं

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा जिस वक़्त चलतीं तो आपकी चाल ढाल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बिल्कुल मुशाबह होती थी (मुस्लिम) इसी तरह हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की रिवायत है कि मैंने उठने बैठने और आदात व अतवार में हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से ज़्यादा किसी को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुशाबह नहीं देखा। (तिर्मिज़ी) गरज़ ये कि हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की चाल ढाल और गुफ्तगु वगैरह में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की झलक नुमायां नज़र आती थीं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा बचपन ही से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बड़ी खिदमत करती थीं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि एक मरतबा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मस्जिदे हराम में नमाज़ पढ़ रहे थे कुरैश के चंद बदमआश ने शरारत की गरज़ से ऊंट की ओझड़ी लाकर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर डाल दी और खुशी से तालियां बचाने लगे। किसी ने हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को खबर दी तो वह दौड़ी दौड़ी आई और हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर से ओझड़ी उतार कर फेंक दी। इसी तरह एक मरतबा नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक गली से गुज़र रहे थे कि किसी बदबख्त ने मकान की छत से आप

ज्यादा है, इसी तरह तुर्की और रूस से अलग होने वाले मुमालिक नीज़ अरब मुमालिक की एक जमाअत कुरान व हदीस की रौशनी में इमाम अबू हनीफा के ही फैसलों पर अमल पैरा हैं।

मसादिर व मराजे

हज़रत इमाम अबू हनीफा की शख्सियत पर जितना कुछ मुख्तलिफ ज़बानों खास कर अरबी ज़बान में लिखा गया है वह उम्मान दूसरे किसी मुहद्दिस या फकीह या आलिम पर नहीं लिखा गया। यह इमाम अबू हनीफा की इल्मी व अमली खिदमात के क़बूल होने की बज़ाहिर अलामत है। हज़रत इमाम अबू हनीफा की शख्सियत के मुख्तलिफ पहलुओं पर जो किताबें लिखी गई हैं उनमें सुछक्के नाम हस्बे ज़ैल हैं। शैख जलालुद्दीन सुयूती की किताब तबयीजुस सहीफा फी मनाकिबिल इमाम अबी हनीफा" से खुसूसी इस्तिफादा करके इस मज़मून को लिखा है। अल्लाह तआला इन तमाम मुसन्निफों को अजरे अज़ीम अता फरमाए, आमीन।

हज़रत इमाम अबू हनीफा की सवानेह हयात से मुतअल्लिक बाज़ अरबी किताबें

मनाकिबुल इमाम आज़म - शैख मुल्ला अली क़ारी (वफात 1014 हिजरी)

तरजुमतुल इमाम आज़म अबी हनीफा अन नोमान बिन साबित- इमाम खतीब बगदादी (वफात 392 हिजरी)

तबयीजुस सहीफा फी मनाकिबिल इमाम अबी हनीफा- अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती (वफात 911 हिजरी)

तुहफतुस सुलतान फी मनाकिबि नोमान- शैख काज़ी मोहम्मद बिन हसन बिन कास अबुल कासिम (वफात 324 हिजरी)

उक़दुल मरजान फी मनाकिबि अबी हनीफा नोमान- शैख अबू जाफर अहमद बिन मोहम्मद मिस्री तहावी (वफात 321 हिजरी)

उक़दुल जिमान फी मनाकिबिल इमाम आज़म अबू हनीफा नोमान- शैख मोहम्मद बिन युसूफ सालिही (वफात 943 हिजरी)

उक़दुल जिमान फी मनाकिबिल इमाम आज़म अबू हनीफा नोमान- मौलवी मोहम्मद मुल्ला अब्दुल कादिर अफगानी।

अखबार अबी हनीफा व असहाबिहि - शैख काज़ी अबी अब्दुल्लाह हुसैन बिन अली अस सैमरी (वफात 436 हिजरी)

फज़ाइल अबी हनीफा व अखबारुहु व मनाकिबुहु- शैख अबुल कासिम अब्दुल्लाह बिन मोहम्मद (वफात 330 हिजरी)

शकाएकुन नोमान फी मनाकिबिल इमाम आज़म अबी हनीफतुन नोमान- शैख जारुल्लाह अबुल कासिम ज़मख़शरी(वफात 538 हिजरी)

अलखैरातुल हिसान फी मनाकिबिल इमाम आज़म अबी हनीफा नोमान- शैख मुफती अल हिजाज़ शैख शहाबुद्दीन अहमद बिन हजर मक्की (वफात 973 हिजरी)

किताबु मनाज़िलिल अइम्मा अल अरबआ- इमाम अबू ज़करिया यहया बिन इब्राहीम (वफात 550 हिजरी)

मनाकिबुल इमाम अबी हनीफा व साहिबैहि अबी युसूफ व मोहम्मद बिन अलहसन- इमाम हाफिज़ अबी अब्दुल्लाह मोहम्मद बिन अहमद उसमान ज़हबी (वफात 748 हिजरी)

फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा अपने वालिद के पास मदीना हिजरत फरमा गई।

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह

2 हिजरी में जंगे बदर के बाद जुहूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी सबसे छोटी बेटी हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह अपने चचाज़ाद भाई अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ कर दिया।

मुसनद अहमद में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का वाक्या खुद उनकी ज़बानी नक़ल किया गया है: जब मैंने जुहूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की साहबज़ादी हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के बारे में अपने निकाह का पैगाम देने का इरादा किया तो मैंने (दिल में) कहा कि मेरे पास कुछ भी नहीं है, फिर यह काम क्योंकर अंजाम पाएगा? लेकिन उसके बाद ही दिल में जुहूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सखावत और नवाज़िश का खयाल आ गया, लिहाज़ा मैंने हाज़िरे खिदमत हो कर पैगामे न्काह दे दिया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सवाल फरमाया तुम्हारे पास (महर में देने के लिए) कुछ है? मैंने अर्ज़ किया नहीं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया तुम्हारी ज़िरह कहाँ गई? मैंने कहा जी वह तो है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया उसको (बेच कर महर में) दे दो।

(वज़ाहत) अहले सीरत व मुअर्रिखीन ने लिखा है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फरमान पर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी ज़िरह बेच दी जिसको हज़रत उसमान गनी ने खरीदी थी, लेकिन बाद में हज़रत उसमान गनी रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत

अल्तालिकाति हिसान अला तुहफतिल इखवान फी मनाकिब अबी हनीफा- अल्लामा मोहम्मद अहमद मोहम्मद आमूह।

उकूदुल जवाहिरिल मुनीफा फी अदिल्लति मज़हबिल इमाम अबी हनीफा- अल्लामा मुहद्दिस सैयद मोहम्मद मुरतज़ा अज़ जुबैदी हुसैनी हनफी (वफात 1205 हिजरी)

हज़रत इमाम अबू हनीफा की सवानेह हयात से मुतअल्लिक बाज़ उर्दू किताबें

सीरतुन नोमान- अल्लामा शिबली नोमानी।

सीरते अइम्मा अरबआ- काज़ी अतहर मुबारकपुरी।

हज़रत इमाम अबू हनीफा की सियासी ज़िन्दगी- मौलाना मनाज़िर अहसन गीलानी।

मकामे अबू हनीफा- मौलाना सरफराज़ सफ़दर खान।

इमाम आज़म और इल्मे हदीस- मौलाना मोहम्मद अली सिद्दीकी कांधलवी।

इमाम आज़म अबू हनीफा: हालात व कमालात, मलफूज़ात- डाक्टर मौलाना खलील अहद थानवी (तबयीज़ुस सहीफा फी मनाकिबिल इमाम अबी हनीफा का तरजुमा)

तक्लीदे अइम्मा और मकामे इमाम अबू हनीफा- मौलाना मोहम्मद इसमाईल संभली (राकिमुल हुरुफ के हकीकी दादा मोहतरम)

इमाम आज़म अबू हनीफा, हयात व कारनामे- मौलाना मोहम्मद अब्दुर रहमान मज़ाहिरी।

हज़रत इमाम अबू हनीफा पर इरज़ा की तोहमत - मौलाना नेमतुल्लाह आज़मी साहब।

इल्मे हदीस में इमाम अबू हनीफा का मक़ाम व मरतबा - मौलाना हबीबुर रहमान आज़मी साहब।

इमाम आज़म अबू हनीफा और मोतरेज़ीन - मौलाना मुफ्ती सैयद मेहदी हसन शाहजहाँपुरी।

फ़काहत इमाम आज़म अबू हनीफा- मौलाना खुदा बख़्श साहब रब्बानी।

मलफूज़ाते इमाम अबू हनीफा- मुफ्ती मोहम्मद अशरफ़ उसमानी।

हदाइकुल हनफिया (इमाम अबू हनीफा से 1300 हिजरी तक दुनिया भर के एक हज़ार से ज़ायद हनफी उलमा व फ़ुक्हा का ज़िक्र)- मौलवी फकीर अहमद जेहलमी।

हज़रत इमाम अबू हनीफा के 100 किस्से- मौलाना मोहम्मद ओवैस सरवर।

इमाम आज़म अबू हनीफा के हैरतअंगेज़ वाक़्यात- मौलाना अब्दुल क़य्यूम हक्कानी।

इमाम अबू हनीफा की ताबेइयत और सहाबा से उनकी रिवायत- मौलाना अब्दुश शहीद नोमानी।

इमाम आज़म अबू हनीफा शहीदे अहले बैत- मुफ्ती अबुल हसन शरीफुल्लाह अलकौंसरी।

अत्तरीकुल अस्लम उर्दू शरह मुसनादुल इमाम आज़म- मौलाना मोहम्मद ज़फ़र इक़बाल साहब।

इमाम अबू हनीफा की मुहद्दिसाना हैसियत- मौलाना सैयद नसीब अली शाह अलहाशमी, मौलाना मुफ्ती नेमत हक्कानी।

इमाम अबू हनीफा का आदिलाना दिफा (अल्लामा कौंसरी की किताब तानीबुल खतीब का उर्दू तरजुमा)- हाफ़िज़ अब्दुल कुद्दूस खान।

कुछ महर ज़रूर नक़द अदा करनी चाहिए (और बाकी मुअज्जल तैय कर लें) जैसा कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली की ज़िरह फरोख़्त करा के महर की अदाएंगी कराई। आज हम जहेज़ और शादी के अख़राजात में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते हैं, लेकिन महर की अदाएंगी जो अल्लाह तआला का हुकुम है उससे कतराते हैं। अल्लाह तआला हम सबकी मगफ़िरत फरमाए, आमीन।

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का जहेज़

तमाम रिवायात जमा करने के बाद जन्नत में सारी औरतों की सरदार का जहेज़ सिर्फ़ चंद चीज़ों पर मुश्तमिल था।

- 1) एक चारपाई।
- 2) एक बिछौना।
- 3) एक चमड़े का तकिया जिसमें खज़ूर की छाल भरी हुई थी।
- 4) एक चक्की (बाज़ रिवायात में 2 चक्कियों का तज़केरा है)।
- 5) दो मशकीज़ा (जिसके ज़रिया कुएं वगैरह से पानी भर के लाया जाता है)।

(वज़ाहत) हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सबसे ज़्यादा प्यारी और चहेती साहबज़ादी थीं, उनको नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जन्नत की औरतों की सरदार बताया है, उनकी शादी किस सादगी से नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अंजाम दी कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने निकाह का पैग़ाम दिया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के सामने इसका तज़केरा किया आप खामोश रहीं जो रिजामंदी की दलील हुआ

शैख शाह इसमाईल शहीद और उनकी किताब तकवियतुल ईमान

न सिर्फ बर्र सगीर (हिन्द, पाकिस्तान, बंगलादेश और अफगानिस्तान) में बल्कि पूरे आलमे इस्लामी में शैख शाह वलीउल्लाह की शख्सीयत इतिहाई मुसल्लम और काबिले कदर है। बर्र सगीर में हदीस पढ़ने और पढ़ाने की सनद मुहम्मदसीने किराम और फिर हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक हज़रत शाह वलीउल्लाह के वास्ते से ही हो कर जाती है। बर्र सगीर का हर मकतबे फिक्क अपना तअल्लुक शैख शाह वलीउल्लाह की शख्सीयत से जोड़ कर अपने हक पर होने को ज़ाहिर करता है। हज़रत शाह वलीउल्लाह और उनकी औलाद ने कुरान व हदीस की खिदमत के लिए अपनी ज़िन्दगियां वकफ कर दी थीं।

शाह वलीउल्लाह के पोते शाह इसमाईल शहीद (1779-1831) ने भी अपनी पूरी ज़िन्दगी एलाये कलेमतुल्लाह, एहयाये इस्लाम और कुरान व हदीस की खिदमत में सर्फ की। उन्होंने तकरीबन 10 किताबें तहरीर फरमाईं। शाह इसमाईल शहीद ने न सिर्फ कलमी जिहाद किया बल्कि अमली जिहाद में भी शिर्क त की, चुनांचे 1831 में बिलआखिर बालाकोट के मक़ाम पर शहादत हासिल की।

शाह इसमाईल शहीद के ज़माने में इस इलाके में शिर्क और ~~मिद~~ काफ़ी रायज हो गई थीं, चुनांचे उन्होंने अपनी ज़िन्दगी का बेशतर हिस्सा कुरान व हदीस की रौशनी में शिर्क और बिदआत की तरदीद और तौहीद व सुन्नत की जड़ें मज़बूत करने में सर्फ किया। इसी मक़सद को सामने रख कर उन्होंने 1826 में किताब तकवियुल्ल

ईमान लिखी। यह किताब आज तक कितनी मरतबा शाये हो चुकी है इसका अंदाज़ा लगाना भी मुश्किल है, गरज़ लाखों लोगों ने इस किताब से फैज़याब हो कर अपनी ज़िन्दगी का रुख सीधा किया। शाह इसमाईल शहीद ने अपनी इस किताब में क़ुरान व हदीस की रौशनी में शिर्क और बिदआत की तरदीद की है। जिसपर बाज़ हज़रात ने ग़लत फैसला लेकर इस शख्स को काफिर कह दिया जिसने पूरी ज़िन्दगी क़ुरान व हदीस के मुताबिक़ गुज़ारी, लाखों लोगों ने उसके इल्म से फायदा हासिल करके अपनी उखरवी ज़िन्दगी की तैयारी की, जिसने अल्लाह तआला की रज़ा के हुसूल के लिए अपनी जान तक का नज़राना पेश कर दिया।

मैंने किताब का मुतालआ किया है, मुझे कहीं कोई ऐसी इबारत नहीं मिली जिसकी बुनियाद पर किसी आलिमे दीन को सिर्फ़ जुबज़ व एनाद की वजह से काफिर करार दिया जाए। मेरे अज़ीज़ दोस्तो! इस्लाम इसलिए नहीं आया कि छोटी छोटी बात पर मुसलमानों को भी दायरए इस्लाम से खारिज किया जाए, बल्कि इस्लाम का बुनियादी व अहम मक़सद यह है कि हर शख्स कल्मा लाइलाह इल्लल्लाह मोहम्मदुर रसूलुल्लाह पढ़ कर मुलसमान हो जाए और कल्मा के तकाज़ों पर अमल करके हमेशा हमेशा की जहन्नम से बच जाए। किसी इंतिकाल शुदा मुअय्यन शख्स को काफिर कहने का मतलब यह है कि आपने उसके लिए हमेशा हमेशा की जहन्नम का फैसला सादिर फरमा दिया। अल्लाह हम सबकी हिफाज़त फरमाए, आमीन। इस मौक़े पर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशाद को भी याद रखें, अगर कोई शख्स किसी शख्स के लिए कहे काफिर! तो यह अल्फाज़ किसी एक को ज़रूर पहुंचेगा, या तो वह

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की रुखसती

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की रुखसती सिर्फ़ इस तरह हुई कि हज़रत उम्मे ऐमन के साथ नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको दुल्हा के घर भेज दिया। यह दोनों जहाँ में सबसे अफ़ज़ल बशर की साहबज़ादी की रुखसती थी जिसमें न धूम धाम न पाल्की और न रुपय की बिखेर, न हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु घोड़े पर सवार हुए, न हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने बारात चढ़ाई, न आतिशबाजी के ज़रिये अपना माल फूँका। दोनों तरफ़ से सादगी से काम लिया गया, क़र्ज़ उधार लेकर कोई काम नहीं किया गया। आज हम सब हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मोहब्बत के बड़े बड़े दावे करते हैं, लेकिन उनकी इत्तिबा और इक़्तिदा 'म' अपनी और खानदान की ज़िल्लत समझते हैं।

वलीमा

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने दूसरे रोज़ (मुख़्तसर) अपना वलीमा किया जिसमें सादगी के साथ जो मुयस्सर आया खिला दिया। वलीमा मो जौ की रोटी, खजूरें, हरीरा, पनीर और गोश्त था। (सीरत सरवरे कौनैन, मुफ़्ती मोहम्मद आशिक़ इलाही मदनी)

काम की तक़सीम

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के पास कोई खादिम या खादिमा नहीं थी, इस लिए हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत अली अल्लाहु अन्हु के दरमियान काम को इस तरह तक़सीम कर दिया था कि हज़रत

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एहतेराम ज़रूरी है, उनका ज्यादा से ज्यादा एहतेराम किया जाए, लेकिन इस किस्म का एहतेराम नहीं किया जाए कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को माबूद बना दिया जाए जो कि बिल्कुल गलत है। इस इबारत की बिना पर किसी शख्स को कैसे काफिर कहा जा सकता है। अल्लाह तआला ने अपने पाक कलाम में इरशाद फरमाता है **जब तुम अपने हज के अरकान से फारिग हो जाओ तो तुम अल्लाह तआला का ज़िक्र करो जैसा कि बाप दादा का ज़िक्र करते हो बल्कि बाप दादा के ज़िक्र करने से भी ज्यादा अल्लाह का ज़िक्र करो।**" (सूरह बक्रह 200) इस आयत में अल्लाह तआला ने अपने ज़िक्र करने को बाप दादा के ज़िक्र करने से मुशाबहत दी है, मगर इसका मतलब यह नहीं कि (अल्लाह की पनाह) अल्लाह तआला बाप दादा बन गया, बल्कि इसका वाज़ेह मतलब यह है कि हम अल्लाह तआला का कसरत से ज़िक्र करें।

मेरी तमाम हज़रात से खुसूसी दरखवास्त है कि किसी मुअय्यन शख्स को काफिर कहने से बिल्कुल बाज़ रहें जबकि वह अल्लाह की वहदानियत और कुरान के किताबुल्लाह होने का इक़्रार करता हो और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आखरी नबी भी मानता हो, मज़ीद इसके कि कुरान व हदीस पर अमल पैरा भी हो। लिहाज़ा आप अगर किसी शख्स की तहरीर से मुत्तफ़िक़ नहीं हैं तो उसकी तरदीद कर सकते हैं लेकिन काफिर नहीं कह सकते हैं। वल्लाहु आलम बिस सवाब।

मुल्के शाम - फज़ीलत और तारीख

शाम सिरयानी ज़बान का लफ़्ज़ है जो हज़रत नूह अलैहिस् सलाम के बेटे हज़रत साम बिन नूह की तरफ मंसूब है। तूफाने नूह के बाद हज़रत साम इसी इलाक़े में आबाद हुए थे। मुल्के शाम के बहुत से फ़ज़ाइल अहादीसे नबविया में ज़िक्र किए गए हैं, कुरान करीम में भी मुल्के शाम की सरज़मीन का बाबरकत होना बहुत सी आयात में ज़िक्र है। यह मुबारक सरज़मीन पहली जंगे अज़ीम तक उसमानी हुकूमत की सरपरस्ती में एक ही खित्ता थी, बाद में अंग्रेज़ों और अहले फ़्रांस की पालीसियों ने इस सरज़मीन को चार मुल्कों (सूरया, लेबनान, फलस्तीन और उर्दुन) में तकसीम करा दिया, लेकिन कुरान व सुन्नत में जहां भी मुल्के शाम का तज़केरा वारिद हुआ है इससे यह पूरा खित्ता मुराद है जो असरे हाज़िर के चार मुल्कों (सूरया, लेबनान, फलस्तीन और उर्दुन) पर मुशतमिल है। इसी सरज़मीन के मुतअल्लिक़ नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बहुत से इरशादात अहादीस की किताबों में महफूज़ हैं, मसलन इसी मुबारक सरज़मीन की तरफ हज़रत इमाम मेहदी हिजाज़े मुक़द्दस से हिज़रत फरमा कर क़याम फरमाएंगे और मुसलमानों की क़यादत फरमाएंगे। हज़रत ईसा अलैहिस् सलाम का नुज़ूल भी इसी इलाक़ा यानी दमिशक़ के मशरिक़ में सफ़ेद मीनार पर होगा। गरज़ ये कि यह इलाक़ा क़यामत से पहले इस्लाम का मज़बूत क़िला व मर्क़ ज़ बनेगा। इसी मुबारक सरज़मीन में क़िबला अव्वल वाक़े है जिसकी तरफ नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबए किराम ने तक़रीबन 16 या 18 महीने नमाज़ें अदा फरमाई हैं। इस क़िबला अव्वल का

खादिम हैं तो मैंने ही इनको मशवरा दिया कि यह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से एक खादिम तलब कर लें ताकि इस मशक्कत से बच सकें। हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह सुन कर फरमाया कि ऐ फातिमा! क्या तुम्हें एक ऐसी चीज़ न बता दूँ जो तुम्हारे लिए खादिम से बेहतर है। जब तुम रात को सोने लगो तो 33 मरतबा सुबहानल्लाह, 33 मरतबा अलहमदु लिल्लाह और 34 मरतबा अल्लाहु अकबर पढ़ लिया करो। (अबू दाऊद जिल्द 2 पेज 64) गरज़ ये कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी चहेती बेटी को खादिम या खादिमा नहीं दी बल्कि अल्लाह तआला की जानिब से इसका बेहतरीन बदला यानी तसबीहात अता फरमाई, इन तसबीहात को उम्मत मुस्लिमा तसबिहे फातमी से जानती है।

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के बाज़ फज़ाइल व मनाकिब
 रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया फातिमा मेरे जिस्म का टुकड़ा है, जिसने उसे नाराज़ किया उसने मुझे नाराज़ किया। दूसरी रिवायत में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के रंज से मुझे रंज होता और और उसकी तकलीफ से मुझे तकलीफ होती है। (मुस्लिम)

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब सफर में तशरीफ ले जाते तो सबसे आखिर में हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से मिल कर रवाना होते थे और जब वापस तशरीफ लाते तो सबसे पहले हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास तशरीफ ले जाते थे। (मिशकात)

अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के दौरै खिलाफत में पहली फौजी मुहिम शुरू की।

मुल्के शाम में दीने इस्लाम पुंछने तक तकरीबन 1500 साल से सिरयानी ज़बान ही बोली जाती थी लेकिन मुल्के शाम के बाशिन्दों ने इतिहाई खुलूस व मोहब्बत के साथ दीने इस्लाम का इस्तिक़बाल किया और बहुत कम अरसे में अरबी ज़बान इनकी मादरी व अहम ज़बान बन गई, बड़े बड़े जय्यद मुहद्दीसीन, फुक्हा व उलमा इस सरज़मीन में पैदा हुए। दिमश्क के फतह होने के सिर्फ 26 या 27 साल बाद दिमश्क इस्लामी खिलाफत/हुकूमत का दारुस सलतनत बन गया। अल्लाह तआला ने इंसान व जिन्नात ज़मीन व सारी कायनात को पैदा किया। बाज़ इंसानों को मुंतखब करके उनको रसूल व नबी बनाया, इसी तरह ज़मीन के बाज़ हिस्सों (मसलन मक्का, मदीना और मुल्के शाम) को दूसरे हिस्सों पर फौकियत व फज़ीलत दी। अल्लाह तआला ने मुल्के शाम की सरज़मीन को अपने पैगम्बरों के लिए मुंतखब की, चुनांचे अम्बिया व रुसुल की अच्छी खासी तादाद इसी सरज़मीन में इंसानों की रहनुमाई के लिए मबऊस फरमाई गई। हज़रत इब्राहीम अलैहिस सलाम जैसे जलीलुल क़दर रसूल अपने भतीजे हज़रत लूत अलैहिस सलाम के साथ मुल्के इराक़ से हिज़रत फरमा कर मुल्के शाम में सुकूनत पज़ीर हुए। इसी मुकद्दस सरज़मीन से हज़रत इब्राहीम अलैहिस सलाम ने मक्का के बहुत से सफर करके मक्का को आबाद किया और वहां बैतुल्लाह की तामीर की। हज़रत इब्राहीम अलैहिस सलाम की नसल के बेशुमार अम्बिया अलैहिस सलाम (हज़रत इसहाक़, हज़रत याकूब, हज़रत अय्यूब, हरत सुलैमान, हज़रत इलयास, हज़रत अलयसा, हज़रत ज़करिया, हज़रत

यहया और हज़रत ईसा अलैहिस सलाम) की यह सरज़मीन मसकन व मदफन बनी और उन्होंने इसी सरज़मीन से अल्लाह के बन्दों को अल्लाह की तरफ बुलाया। गरज़ ये कि मुसलमानों, ईसाइयों और यहूदियों के लिए यह सरज़मीन बहुत बाबरकत है। फिलहाल बैतुल मक़दिस की बाबरकत ज़मीन पर यहूदियों का कब्ज़ा है। अल्लाह तआला बैतुल मक़दिस को यहूदियों के चंगुल से आज़ाद फरमाए, मुसलमानों को फतहयाब फरमाए, अपने दीन की नुसरत फरमाए और हम सबको अपने दीने इस्लाम की खिदमत के लिए क़बूल फरमाए। क़यामत की बाज़ बड़ी निशानियाँ का ज़हूर भी इसी मुक़द्दस सरज़मीन पर होगा, चुनांचे हज़रत मेहदी इसी सरज़मीन से मुसलमानों की क़यादत संभालेंगे। दिमश्क के मशरिक में सफ़ेद मीनार पर नमाज़े फजर के वक़्त हज़रत ईसा अलैहिस सलाम का नुज़ूल होगा और उसके बाद हज़रत ईसा अलैहिस सलाम उम्मत मुस्लिमा की बाग़डोर संभालेंगे। दज्जाल और याज़ूज व माज़ूज जैसे बड़े बड़े फितने भी इसी सरज़मीन से ख़त्म किए जाएंगे। दुनिया के चप्पे चप्पे पर इसी इलाक़े की सरपरस्ती में मुसलमानों की हुकूमत कायम होगी। यमन से निकलने वाली आग़ लोगों को इसी बाबरकत सरज़मीन की तरफ़ हांक कर ले जाएगी और सब मोमिन इस मुक़द्दस सरज़मीन में जमा हो जाएंगे और फिर इसके बाद जल्द ही क़यामत कायम हो जाएगी।

क़ुरान करीम में इस बाबरकत ज़मीन का जिक़रे ख़ैर

“पाक है वह ज़ात जो अपने बन्दे को रात ही में मस्जिदे हक़ से मस्जिदे अक़सा तक ले गया जिसके आस पास हमने बरकत दे रखी

भी रंज हुआ हो कम है। हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इंतिकाल पर अगरचे हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने पूरे सब्र व ज़ब्त का मुज़ाहरा किया, लेकिन फिर भी हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के बाद हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा बहुत मगमूम रहा करती थीं चुनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के बाद हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा सिर्फ 6 माह ही बाहयात रह सकीं।

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की औलाद

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के बतन से तीन साहबज़ादे हसन, हुसैन और मोहसिन और दो साहबज़ादियां ज़ैनब और उम्मे कुलसूम पैदा हुईं। हज़रत मोहसिन का इंतिकाल बचपन में ही हो गया था। हज़रत हसन और हज़रत हुसैन के ज़रिया उनके नाना मोहतरम हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सिलसिलए नसब चला। हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह खुसूसियत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की साहबज़ादी से जो नसल चली वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नसल समझी गई, वरना कायदा यह है कि इंसान की नसल उसके बेटों से चलती है।

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की वफात

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तकरीबन छः माह बाद हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा चंद रोज़ अलालत (बीमारी) के बाद 3 रमज़ानुल मुबारक 11 हिजरी को बाद नमाज़े मगरिब 29 साल की उम्र में इंतिकाल फरमा गईं और इशा की नमाज़ के बाद दफन कर दी गईं।

“हमने उन लोगों को जो कि बिल्कुल कमज़ोर शुमार किए जाते थे इस सरज़मीन के मशरिक व मगरिब का मालिक बना दिया जिसमें हमने बरकत रखी है।” (सूरह आराफ 137) ज़मीन से मुराद शाम का इलाका फलस्तीन है जहां अल्लाह तआला ने अमालिका के बाद बनी इसराइल को गल्बा अता फरमाया।

इस सरज़मीन की फज़ीलत नबी रहमत की ज़बानी

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया ऐ अल्लाह! हमें बरकत अता फरमा हमारे मुल्क शाम में हमें बरकत दे हमारे यमन में। आपने यही कलेमात तीन या चार मरतबा दोहराए। (बुखारी, तिर्मिज़ी, मुसनद अहमद, तबरानी)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जब मैं सोया हुआ था तो मैंने देखा कि अमूदुल किताब (ईमान) मेरे सर के नीचे से खींचा जा रहा है। मैंने गुमान किया कि उसको उठा ले लिया जाएगा तो मेरी आंख ने उसका तआकुब (पीछा) किया, उसका कस्ट (इरादा) मुल्के शाम का था। जब जब भी शाम में फितने फैलेंगे वहां ईमान में इज़ाफा होगा। (मुसंद अहमद, तबरानी)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मैंने ख्वाब में देखा कि कुछ लोग अमूदुल किताब (ईमान) को ले गए और उन्होंने मुल्के शाम का इरादा किया। जब जब भी फितने फैलेंगे तो शाम में अमन व सूकून रहेगा। (तबरानी)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मैंने देखा अमूदुल किताब मेरे तकिये के नीचे से हटाया जा रहा है, मेरी आखों ने इसका पीछा किया तो पाया कि वह बुलंद नूर की मानिंद है, यहां

तक कि मैंने ज़मान किया वह इसको पसंद करता है और इसको शाम ले जाने का इरादा रखता है तो मैंने समझा कि जब जबभी फितने वाक़े होंगे तो शाम में ईमान मज़बूत होगा। (तबरानी)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मैंने शबे मेराज में देखा कि फरिश्ते मोती की तरह एक सफेद अमूद उठाए हुए हैं। मैंने पूछा तुम क्या उठाए हुए हो? उन्होंने कहा यह इस्लाम का सुतून है हमें हुकुम दिया गया है कि हम इसको मुल्के शाम में रख दें। एक मरतबा मैं सोया हुआ था तो मैंने देखा कि अमूदुल किताब मेरे तकिये के नीचे से निकाला जा रहा है। मैंने सोचा कि अल्लाह तआला ने इसको ज़मीन से ले लिया। जब मेरी आंख ने इसका पीछा किया तो देखा कि वह एक बुलंद नूर के मिस्ल मेरे सामने है यहां तक कि इसको मुल्के शाम में रख दिया गया। (तबरानी)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया अगर अहले शाम में फसाद बरपा हो जाए तो फिर तुम में कोई खैर नहीं है। मेरी उम्मत में हमेशा एक ऐसी जमाअत रहेगी जिसको अल्लाह तआला की मदद हासिल होगी और उसको नीचा दिखाने वाले कल क़यामत तक उस जमाअत को नुकसान नहीं पहुंचा सकते हैं। (तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, तबरानी, सही इब्ने हिब्बान)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मेरी उम्मत की एक जमाअत हमेशा अल्लाह के अहकाम की पाबन्दी करेगी जिसको नीचा दिखाने वाले और मुखालफत करने वाले नुकसान नहीं पहुंचा सकते। अल्लाह तआला का फैसला आने तक वह अल्लाह तआला के दीन पर क़ायम रहेंगे। मालिक बिन यखामिर रहमतुल्लाह अलैहि ने कहा ऐ अमीरुल मोमिनीन मैंने हज़रत मआज़ रज़ियल्लाहु

जहाज़ को लूट लिया। हज्जाज बिन यूसुफ ने सिंध के बादशाह से जहाज़ और मुस्लिम औरतों की रिहाई का मुतालबा किया, मगर उसने रिहाई करने से इंकार कर दिया। हज्जाज बिन यूसुफ ने दो मरतबा लश्कर कुशाई की मगर नाकामी हुई। जब हज्जाज बिन यूसुफ को यकीन हो गया कि मुस्लिम औरतें और फौज के जवान दीबल के जेलों में बन्द हैं और सिंध का बादशाह अरबों से दुश्मनी की वजह से उनको छोड़ना नहीं चाहता है तो हज्जाज बिन यूसुफ ने सिंध के तमाम इलाकों को फतह करने के लिए 90 हिजरी में एक बड़े लश्कर को मोहम्मद बिन कासिम की क़यादत में सिंध रवाना किया। मोहम्मद बिन कासिम ने सिर्फ 2 साल में अल्लाह के फज़ व करम से 92 हिजरी तक सिंध के बेशुमार इलाके फतह कर लिए। 92 हिजरी में सिंध के राजा दाहिर की क़यादत में सिंधी ज़ौ से फैसलाकुन जंग हुई जिसमें सिंध का राजा मारा गया और मोहम्मद बिन कासिम की क़यादत में मुसलमानों को फतह हुई। गरज़ ये कि सिर्फ 20 साल की उम्र में मोहम्मद बिन कासिम फातेह सिंध बन गए। 95 हिजरी तक सिंध के दूसरे इलाके हत्ताकि पंजाब के बाज़ इलाके मोहम्मद बिन कासिम की क़यादत में मुसलमानों ने फतह कर लिए।

मोहम्मद बिन कासिम ने सिंध पर फतह हासिल करने के बाद जूही हिन्द (मौजूदा हिन्दुस्तान) की हुदूद में दाखिल होने का इरादा किया नए बादशाह सुलैमान बिन अब्दुल मलिक का हुकुम पहुंचा कि फौरन इराक वापस आ जाओ। वलीद बिन अब्दुल मलिक के बाद सुलैमान बिन अब्दुल मलिक खलीफा बने। नए खलीफा सुलैमान बिन अब्दुल

क्रयामत की छः निशानियां बताईं (1) मेरी मौत (2) बैतुल मक़दिस की फतह (3) मेरी उम्मत में अचानक मौतों की कसरत (4) मेरी उम्मत में फितना जो उनमें बहुत ज़्यादा जगह कर जाएगा (5) मेरी उम्मत में माल व दौलत की फरावानी कि अगर तुम किसी को 100 दीनार दोगे तो वह उस पर (कम समझने की वजह से) नाराज़ होगा (6) तुम्हारे और बनी असफ़र (सैहूनी ताकतों) में जंग होगी, उनकी फौज में 80 टुकड़ियां होंगी और हर टुकड़ी में 12000 फौजी होंगे। उस दिन मुसलमानों का खेमा अलगौता नामी जगह में होगा जो दिमश्क शहर के करीब में वाके हैं। (तबरानी)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मुल्के शाम वालो! तुम्हारे लिए खैर और बेहतरी हो। शाम वालो! तुम्हारे लिए खैर और बेहतरी हो। सहाबा ने सवाल किया किस लिए या रसूलुल्लाह! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया रहमत के फरिश्तों ने खैर व भलाई के अपने बाज़ू इस मुल्क पर फैला रखे हैं (जिनसे ख़ूबसी बरकतें इस मुक़दस खिल्ते में नाज़िल होती हैं) (तिर्मिज़ी, मुसनद अहमद)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया शाम की सरज़मीन से ही हश्त्र कायम होगा। (मुसनद अहमद, इब्ने माजा)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जहरत ईसा अलैहिस सलाम का नुज़ूल दिमश्क के मशरिक में सफेद मीनार पर होगा। (तबरानी)

इन दिनों इस बाबरकत खिल्ता खासकर सीरिया में मुसलमानों का नाहक खून बह रहा है। मज़मून लिखे जाने तक कई हज़ार मुसलमानों की जान जा चुकी है। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम के कीमती अक्वाल की रौशनी में मुलसमान एक दूसरे के भाई और एक जिस्म के मिस्ल हैं लिहाज़ा हमारी दीनी व अखलकि जिम्मेदारी है कि हम अपनी दुआओं में इस खित्ते में अमन व सुकून के लिए अल्लाह तआला से खुसूसी दुआएं करें। अल्लाह तआला इस खित्ता के मुसलमानों को मुत्तहिद फरमा, इस्लाम के झंडे को बुलंद फरमा। अल्लाह तआला सूरया में मुसलमानों के अहवाल को सही फरमा। या अल्लाह! सूरया में मुसलमानों के खून खराबे को खत्म फरमा। अल्लाह तआला इस मुकद्दस सरज़मीन में अमन व सुकून पैदा फरमा। अल्लाह तआला सूरया और फलस्तीन के मुसलमानों को मुत्तहिद हो कर इस्लाम मुखालिफ ताकतों से लड़ने वाला बना। अल्लाह तआला सूरया और फलस्तीन के मज़लूम मुसलमानों की मदद फरमा। अल्लाह तआला मुल्के शाम के मुसलमानों को दीने इस्लाम पर कायम रहने वाला बना। जो अनासिर मुल्क शाम के मुसलमानों में तफरका डालना चाहते हैं, अल्लाह तआला उनको नाकाम बना दे, उनको जलील कर दे, आमीन।

इमाम अबू हनीफा

(80 हिजरी से 150 हिजरी) हयात और कारनामे

हज़रत इमाम हनीफा के मुख्तसर हालाते ज़िन्दगी

आपका इस्मे गिरामी नोमान और कुन्नियत अबू हनीफा है। आपकी विलादत 80 हिजरी में इराक के कूफा शहर में हुई। आप फारसी नस्ल थे। आपके वालिद का नाम साबित था और आपके दादा नोमान बिन मरज़बान काबुल के अअयान व अशराफ में बड़ी फहम व फिरासत के मालिक थे। आपके परदादा मरज़बान फारस के एक इलाके के हाकिम थे। आपके वालिद हज़रत साबित बचपन में ही हज़रत अली की खिदमत में लाए गए तो हज़रत अली ने आप और आपकी औलाद के लिए बरकत की दुआ फरमाई जो ऐसी क़बूल हुई कि इमाम अबू हनीफा जैसा अज़ीम मुहद्दिस व फकीह और खुदा तरस इंसान पैदा हुआ।

आपने ज़िन्दगी के इब्तिदाई दिनों में ज़रूरी इल्म की तहसील के बाद तिजारत शुरू की, लेकिन आपकी ज़ेहानत को देखते हुए इल्मे हदीस की मारुफ शख्सियत आमिर शाबी कूफी (17 हिजरी से 104 हिजरी) जिन्हें पांच सौ से ज़्यादा असहाबे रसूल की ज़ियारत का शरफ हासिल है ने आपको तिजारत छोड़ कर मज़ीद इल्मी कमाल हासिल करने का मशवरा दिया, चुनांचे आपने इमाम शाबी कूफी के मशवरे पर इल्मे कलाम, इल्मे हदीस और इल्मे फिक़ह की तरफ तवज्जोह फरमाई और ऐसा कमाल पैदा किया कि इल्मी व अमली दुनिया में इमाम आज़म कहलाए। आपने कूफा, बसरा और बगदाद के बेशुमार

फरमान के मुताबिक हमें बनू कुरैज़ा ही में जाकर असर पढ़नी चाहिए चाहे असर की नमाज़ कज़ा हो जाए। जबकि दूसरी जमाअत ने कहा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कहने का मंशा यह था कि हम असर की नमाज़ के वक़्त में ही बनू कुरैज़ा पहुंच जाएंगे, लेकिन अब चूंकि असर के वक़्त में बनू कुरैज़ा की बस्ती में पहुंच कर नमाज़े असर पढ़ना मुमकिन नहीं है, लिहाज़ा हमें असर की नमाज़ अभी पढ़ लेनी चाहिए। इस तरह सहाबए किराम दो जमाअतों में मुंक्रसिम हो गए, कुछ हज़रात ने नमाज़े असर वहीं पढ़ी, जबकि दूसरी जमाअत ने बनू कुरैज़ा की बस्ती में जाकर कज़ा पढ़ी। जब सुबह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बनू कुरैज़ा पहुंचे और इस वाक्ये से मुतअल्लिक तफसीलात मालूम हुई तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किसी जमाअत पर भी कोई तंकीद नहीं की और न ही इस अहम मौक़े पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कोई हिदायत जारी की जिससे मालूम हुआ कि अहकाम में इख़ितलाफ़ तो कल क़यामत तक जारी रहेगा और इस किस्म का इख़ितलाफ़ मज़मूम नहीं है, अलबत्ता अक़ायद और उसूल में इख़ितलाफ़ करना मज़मूम है।

अल्लामा इबनुल क़य्यिम ने अपनी किताब "अस सवाइकुल मुरसला" में दलाइल के साथ लिखा है कि सहाबए किराम के दरमियान भी बहुत से मसाइल में इख़ितलाफ़ था जिनमें से एक मसअला एक मजलिस में एक लफ़्ज़ से तीन तलाक़ वाक़े होने के बारे में है। यह इख़ितलाफ़ महज़ इज़हारे हक़ या तलाशे हक़ के लिए था।

लेकिन आज हम इख़ितलाफ़ के नाम पर बुग़ज़ व इनाद कर रह हैं, अपने मक़तबे फ़िक़्र को सही और दूसरे मक़ातिबे फ़िक़्र को ग़लत

करार देने के लिए अपनी तमामतर सलाहियतें सर्फ कर रहे हैं हालांकि इस्लाम में इखितलाफ की मुजाइश तो है, मगर बुग़ज़ व इनाद और लड़ाई झगड़ा करने से मना फरमाया गया है जैसा कि अल्लाह तआला ने अपने पाक कलाम में फरमाया "आपस में झगड़ा न करो, वरना बुज़दिल हो जाओगे और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी।" (सूरह अंफाल 46)

आज गैर मुस्लिम कौमें खास कर यहूद व नसारा की तमाम माद्री ताकतें मुसलमानों को ज़ेर करने में मसरूफ हैं, यह दुनियावी ताकतें इस्लाम और मुसलमानों को ज़लील व रुसवा करने के लिए हर मुमकिन हरबा इस्तेमाल कर रही हैं जिस से हर जीशऊर वाक्फि है लिहाज़ा हम सब की ज़िम्मेदारी है कि सहाबा और अकाबेरीन की सीरत की रौशनी में अपने इखितलाफ को सिर्फ इज़हार हक या तलाशे हक तक महदूद रखें। अपना मौक्फि ज़रूर पेश करें, लेकिन दूसरे की राय की सिर्फ इस मुस्नियाद पर मुखालफत न करें कि इसका तअल्लुक दूसरे मक़तबे फ़िक्क से है। अब तो दूसरे आसमानी मज़ाहिब के साथ भी हमआहंगी की बात शुरू होने लगी है, लिहाज़ा हमें उम्मत मुस्लिमा के शीराज़े को बिखेरने के बजाए इसमें पैवन्दकारी करनी चाहिए। अगर किसी आलिम के क़ौल में कुछ नुक्स है तो उसकी ज़िन्दगी का बेश्तर हिस्सा सामने रख कर उसकी इबारत में तौजीह व तावील करनी चाहिए, न कि उसपर कुक़ व शिर्क के फतवे लगाए जाएं। फ़र्ई मसाइल में इखितलाफ की सीरत में दूसरे मक़ातिबे फ़िक्क की राय का एहतेराम करते हुए क़ुरान व हदीस की रौशनी में अपना मौक्फि ज़रूर पेश किया जा सकता है, लेकिन

हज़रत इमाम अबू हनीफा के बारे में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बशारत

मुफस्सिरे कुरान शैख जलालुद्दीन सुयूती शाफई मिसी (849 हिजरी से 911 हिजरी) ने अपनी किताब "तबयीजुस सहीफा फी मनाकिबिल इमाम अबी हनीफा" में बुखारी व मुस्लिम और दूसरी हदीस की किताबों में वारिद नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल "(अगर ईमान सुरय्या सितारे के करीब भी होगा तो अहले फारस में से बाज़ लोग उसको हासिल कर लेंगे। (बुखारी) अगर ईमान सुरय्या सितारे के पास भी होगा तो अहले फारस में से एक शख्स उसमें से अपना हिस्सा हासिल कर लेगा। (मुस्लिम) अगर इल्म सुरय्या सितारे पर भी होगा तो अहले फारस में से एक शख्स उसको हासिल कर लेगा। (तबरानी) अगर दीन सुरय्या सितारे पर भी मुअल्लक होगा तो अहले फारस में से कुछ लोग उसको हासिल कर लेंगे। (तबरानी)" जिक्र करने के बाद तहरीर फरमाया है कि मैं कहता हूँ कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इमाम अबू हनीफा (शैख नोमान बिन साबित) के बारे में उन अहादीस में बशारत दी है और यह अहादीस इमाम साहब की बशारत व फज़ीलत के बारे में ऐसे सरीह हैं कि उनपर कुम्मत एतेमाद किया जाता है। शैख इब्ने हजर अलहैसमी शाफई (909 हिजरी से 973 हिजरी) ने अपनी मशहूर व मारुफ किताब "अलखैरातुल हिसान फी मनाकिबि इमाम अबी हनीफा" में तहरीर किया है कि शैख जलालुद्दीन सूयूती के बाज़ तलामिज़ा ने फरमाया और जिस पर हमारे मशायख ने भी एतेमाद किया है कि उन अहादीस की मुराद बिला शुबहा इमाम अबू हनीफा

मसअले की वज़ाहत से पहले चंद तारीखी हक़ायक़ को समझें

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में हदीस लिखने की आम इजाज़त नहीं थी, ताकि कुरान व हदीस में इख़्तिलात पैदा न हो जाए।

खुलफ़ाए राशिदीन के ज़माने में भी हदीस का नज़्म सिर्फ़ इंपिछी तौर पर और वह भी महदूद पैमाने पर था।

200 हिजरी से 300 हिजरी के दरमियान अहादीस लिखने का खास एहतेमाम हुआ चुनांचे हदीस की मशहूर व मारुफ़ किताबें बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, नसई वगैरह (जिनको सिहाये ख़िता कहा जाता है) इसी दौर में तहरीर की गई हैं जबकि मुअत्ता इमाम मालिक 160 हिजरी के करीब तहरीर हुई। इन अहादीस की किताबों की तहरीर से पहले ही 150 हिजरी में इमाम अबू हनीफ़ा (शैख़ नोमान बिन साबित) की वफ़ात हो चुकी थी। इमाम मोहम्मद की रिवायत से इमाम अबू हनीफ़ा की हदीस की किताब "किताबुल आसार" इन अहादीस की किताबों की तहरीर से पहले मुरत्तब हो गई थी।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फ़रमान या अमल को जो हदीस ज़िक़र करने का बुनियादी मक़सद होता है, मतन कहा जाता है।

जिन वास्तों से यह हदीस मुहद्दिस तक पहुंचती है उसको सनदे हदीस कहते हैं। हदीस की मशूह किताबों में मुहद्दिस और सहाबी के दरमियान उम्मून दो या तीन या चार वास्ते हैं कहीं कहीं इससे ज़्यादा भी हैं।

अहादीस की किताबें तहरीर होने के बाद हदीस बयान करने वाले रावियों पर बाकायदा बहस हुई, जिसको असमाउर रिजाल की बहस कहा जाता है। अहकामे शरइया में उलमा व फुकहा के इखितलाफ की तरह इससे भी कहीं ज्यादा शदीद इखितलाफ मुहद्दिसीन का रावियों को ज़ईफ और सिक़ह करार देने में है, यानी एक हदीस एक मुहद्दिस के नुक्तए नज़र में ज़ईफ और दूसरे मुहद्दिसीन की राय में सही हो सकती है।

सनद में अगर कोई रावी गैर मारुफ साबित हुआ यानी यह मालूम नहीं कि वह कौन है या उसने किसी एक मौके पर झुठ बोला है या सनद में इंकिता है तो इस बुनियाद पर मुहद्दिसीन व फुकहा एतियात के तौर पर इस रावी की हदीस को अक्रायद और अहकाम में कबूल नहीं करते हैं बल्कि जो अक्रायद या अहकाम सही मुस्तनद अहादीस से साबित हुए हैं उनके फज़ाइल के लिए क़बूल करते हैं, जुच्चांचे बुखारी व मुस्लिम के अलावा हदीस की मशहूर व मारुफ तमाम ही किताबों में ज़ईफ अहादीस की अच्छी खासी तादाद मौजूद है और उम्मतए मुस्लिमा इन किताबों को ज़मानए क़दीम से क़बूलियत का शरफ़ दिए हुए है हत्ताकि बुखारी की तालीक़ और मुस्लिम की शवाहिद में भी ज़ईफ अहादीस मौजूद हैं। इमाम बुखारी ने हदीस की बहुत सी किताबें तहरीर फरमाईं, बुखारी शरीफ के अलावा उनकी भी तमाम किताबों में ज़ईफ अहादीस कसरत से मौजूद हैं।

(नोट) अगर ज़ईफ अहादीस काबिले एतेबार नहीं हैं तो सवाल यह है कि मुहद्दिसीन ने अपनी किताबों में उन्हें क्यों जमा किया? और उनके लिए तवील सफर क्यों किए? नीज़ यह बात ज़ेहन में रखें कि अगर ज़ईफ हदीस को काबिले एतेबार नहीं समझा जाएगा तो सीरते

शैख मोहम्मद बिन यूसुफ दिमश्की शाफई ने "उकूदुल जमान फी मनाकिबिल इमाम अबी हनीफा" के नवें बाब में ज़िक्र किया है कि इसमें कोई इखितलाफ नहीं है कि इमाम अबू हनीफा उस ज़माने में पैदा हुए जिसमें सहाबए किराम की कसरत थी।

अक्सर मुहद्दीसीन (जिनमें इमाम खतीब बगदादी, अल्लामा नववी, अल्लामा इब्ने हजर, अल्लामा ज़हबी, अल्लामा ज़ैनुल आबेदीन सखावी, हाफिज़ अबू नईम असबहानी, इमाम दारे कुतनी, हाफिज़ इब्ने अब्दुल बर और अल्लामा जौज़ी के नाम काबिले ज़िक्र हैं) का यही फैसला है कि इमाम अबू हनीफा ने हज़रत अनस बिन मालिक को देखा है। मुहद्दीसीन व मुहक्केकीन की तशरीह के मुताबिक सहाबी के लिए हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत करना ज़रूरी नहीं है बल्कि देखना भी काफी है। इसी तरह ताबई का मामला है कि ताबई कहलाने के लिए सहाबिए रसूल से रिवायत करना ज़रूरी नहीं है बल्कि सहाबी का देखना भी काफी है। इमाम अबू हनीफा तो सहाबए किराम की एक जमाअत को देखने के अलावा बाज़ सहाबा खास कर हज़रत अनस बिन मालिक से आहादीस रिवायत भी की हैं।

गरज ये कि हज़रत इमाम अबू हनीफा ताबई हैं और आपका ज़माना सहाबा, ताबईन और तबे ताबईन का ज़माना है और यह वह ज़माना है जिस दौर की अमानत व दियानत और तक्वा का ज़िक्र अल्लाह तआला ने कुरान करीम (सूरह तौबा आयत 100) में फरमाया है। नीज़ नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फरमान के मुताबिक यह बेहतरीन ज़मानों में से एक है। इसके अलावा हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी हयात में ही हज़रत

जहां तक बुजुर्गों के वाक्यात बयान करने का तअल्लुक है तो उससे कोई हुकुम साबित नहीं होता है बल्कि सिर्फ ज्ञान व हदीस से साबित शुदा हुकुम की ताईद के लिए किसी बुजुर्ग का वाक्या जिक्र किया जाता है। बुर्जों के वाक्यात तहरीर करने का रिवाज हर वक्त और हर मक्तबे फिक्र में मौजूद है जैसा कि मौलाना लतीफुर रहमान कासमी साहब ने अपनी किताब "तहकीकुल मकाल फी तखरीज अहादीस फज़ाइलिल आमाल लिश शैख मोहम्मद ज़करिया" में दीगर मकातिबे फिक्र के बहुत से उलमा की किताबों के नाम हवालों के साथ तहरीर फरमाए हैं। उम्मतु मुस्लिमा का एक बड़ा हिस्सा इस बात पर मुत्तफिक्र है कि कभी कभी बुजुर्गों के ज़रिया ऐसे वाक्यात रूनुमा हो जाते हैं जिनका आम आदमी से सुूर मुश्किल होता है, नीज़ अगर मान भी लिया जाए कि किताब में बाज़ वाक्यात का जिक्र गैर मुनासिब है या चंद मौजू अहादीस जिक्र कर दी गई हैं अगरचे वह अहादीस की मशहूर व मारुफ किताबों से ही ली गई हैं, तो सिर्फ इस कुनिय्याद पर उनकी हदीस की खिदमात को नज़र अंदाज करना उनकी अज़ीम शख्सीयत के साथ इंसाफ नहीं है। शैखुल हदीस ने चालीस साल से ज़्यादा हदीस की किताबें पढ़ाई, कोईतंखाह नहीं ली। सौ से ज़्यादा अरबी व उर्दू ज़बान में किताबें तहरीर फरमाई, एक किताब के हुक्क भी अपने लिए महफूज़ नहीं रखे। 18 जिल्दों पर मुशतमिल "औजुल मसालिक इला मुअत्ता इमाम मालिक" किताब अरबी ज़बान में तहरीर फरमाई जिससे लाखों अब व अजम ने इस्तिफादा किया और यह सिलसिला बराबर जारी है।

शैखुल हदीस मौलाना मोहम्मद ज़करिया की शख्सीयत

शैखुल हदीस 10 रमज़ान 1315 हिजरी, 12 फरवरी 1898 को ज़िला मुज़फ्फरनगर के कसबा कांधला के एक इल्मी घराने में पैदा हुए, आपके वालिद शैख मोहम्मद यहया मदरसा मज़ाहिरुल उलूम सहारनपुर में उस्ताज़े हदीस थे। आपके दादा शैख मोहम्मद इसमाईल भी एक बड़े जय्यिद आलिम थे। आपके चाचा शैख मोहम्मद इलयास हैं जो फाज़िले दारुल उलूम देवबन्द होने के साथ तबलिगी जमाअत के मुअस्सिस भी हैं जिन्होंने उम्मत मुस्लिमा की इस्लाह के लिए मुखलासाना कोशिश करते हुए एक ऐसी जमाअत की बुनियाद डाली जिसकी इसार व कुर्बानी की बज़ाहिर कोई नज़ीर इस दौर में नहीं मिलती और यह जमाअत एक मुख्तसर अरसे में दुनिया के चप्पे चप्पे में यहां तक कि अरबों में भी फैल चुकी है। 6 खलीजी मुमालिक, 22 अरब मुमालिक और 75 इस्लामी मुमालिक मिलकर भी आज तक कोई ऐसी मुनज़ज़म जमाअत नहीं तैयार कर सके जिसकी एक आवाज़ पर बेगैर किसी इशतिहारी वसीले के लाखों का मजमा पलक झपकते ही जमा हो जाए। उमूमी तौर पर अब हमारी ज़िन्दगी दिन बदिन मुनज़ज़म होती जा रही है, चुनांचे स्कूल, कालेज और यूनिवर्सिटी हत्ताकि मदारिसे अरबिया इस्लामिया में भी दाखिला का एक मुअय्यन वक़्त, दाखिला के लिए टेस्ट और इंटरव्यू, क्लासों का नज़म व नस्क़ फिर इमतेहानात और 3 या 5 या 8 साला कोर्स और हर साल के लिए मुअय्यन किताबें पढ़ने पढ़ाने की तहदीद कर दी गई है। हालांकि कुरान व हदीस से उनका कोई सबूत नहीं मिलता। इसी तरह अपनी और भाइयों की इस्लाह के लिए कोई वक़्त मुअय्यन नहीं होना चाहिए, लेकिन तालीम व मुलाज़मत व कारोबार

किया गया। हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु जैसे जलीलुल क़दर सहाबी को वहां भेजा ताकि वह कुरान व सुन्नत की रौशनी में लोगों की रहनुमाई फरमाएं। सहाबए किराम के दरमियान हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु की इल्मी हैसियत मुसल्लम थी, खुद सहाबए किराम भी मसाइले शरइया में उनसे रज़ू फरमाते थे। उनके मुतअल्लिक हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशादात हदीस की किताबों में मौजूद हैं।

इब्ने उम्मे अब्द (यानी अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु) के तरीक़ को लाज़िम पकड़ो। जो कुरान पाक को उस अंदाज़ में पढ़ना चाहे जैसा नाज़िल हुआ था तो उसको चाहिए कि इब्ने उम्मे अब्द (यानी अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु) की किरात के मुताबिक़ पढ़े। हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में फरमाया कि वह इल्म से भरा हुआ एक ज़र्फ़ है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उमर फारूक और हज़रत उस्मान गनी रज़ियल्लाहु अन्हुमा के अहदे खिलाफत में अहले कूफा को कुरान व सुन्नत की तालीम दी। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के अहदे खिलाफत में जब दारुल खिलाफत कूफा मुंतक़िल कर दिया गया तो कूफा इल्म का गहवारा बन गया। सहाबए किराम और ताबईन की एक जमाअत खास कर हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु और उनके शागिर्दों ने इस बस्ती को इल्म व अमल से भर दिया। सहाबए किराम के दरमियान फकीह की हैसियत रखने वाले हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु का इल्मी वरसा

12 साल की उम्र में शैख हदीस मौलाना मोहम्मद ज़करिया ने मदरसा मज़ाहिरुल उलूम सहारनपुर में दाखिला लिया। दारुल उलूम देवबन्द के बाद मदरसा मज़ाहिरुल उलूम सहारनपुर बर्रें सगीर का सबसे बड़ा मदरसा शुमार किया जाता है जिसकी बुनियाद दारुल उलूम देवबन्द के 6 महीने बाद रखी गई थी। शैखुल हदीस के हदीस के अहम असातज़ा में शैख खलील अहमद सहारनपुरी आपके वालिद शैख मोहम्मद यहया और आपके चाचा शैख मोहम्मद इलयास थे। वालिद के इंतिकाल के बाद सिर्फ 20 साल की उम्र में (1335हिजरी में) मदरसा मज़ाहिरुल उलूम सहारनपुर में उस्ताज़ हो गए। 1341 हिजरी में अपने शैख खलील अहमद सहारनपुरी के इसरार पर सिर्फ 26 साल की उम्र में बुखारी शरीफ का दर्स शुरू फरमा दिया। 1345 हिजरी में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शहर मदीना में एक साल क़याम फरमाया और मदरसा अल उलूमश शरईया (मदीना) में हदीस की मशहूर किताब अबू दाऊद पढ़ाई। यह मदरसा आज भी मौजूद है जिसके ज़िम्मेदार सैयद हबीब मदनी के बड़े साहबजादे हैं। मदीना के क़याम के दौरान ही अपनी मशहूर किताब औजुल मसालिक इल मुत्ता इमाम मालिक की तालीफ शुरू फरमा दी थी, उस वक़्त आपकी उम्र 29 साल थी। 1346 हिजरी में मदीना से वापसी के बाद दोबारा मदरसा मज़ाहिरुल उलूम सहारनपुर में हदीस की किताबें खास कर बुखारी शरीफ और अबू दाऊद पढ़ाने लगे और यह सिलसिला 1388 हिजरी में यानी 73 साल की उम्र तक जारी रहा। गरज़ ये कि आपने 50 साल से ज़्यादा हदीस पढ़ाने और लिखने में गुज़ारे और इस तरह हज़ारों तलबा ने आपसे हदीस पढ़ी

जो दीने इस्लाम की खिदमत के लिए दुनिया के कोने कोने में फैल गए।

शैखुल हदीस ने हज की अदाएगी के लिए मक्का और मदीना के बहुस से सफर किए। 1345 हिजरी में आप अपने उस्ताद शैख खलील अहमद सहारपुरी के साथ मदीना में मुक़ीम थे कि आपके उस्तादे मोहतरम का इंतिकाल हो गया और वह जन्नतुल बकी में अहले बैत के करीब दफन किए गए। शैखुल हदीस मौलाना मोहम्मद ज़करिया की भी ख्वाहिश थी कि मदीना में ही मौलाए हकीकी सजा मिलूं, चुनांचे बतारीख एक शाबान 1402 हिजरी मदीना में आपका इंतिकाल हुआ। एक अज़ीम जम्मे गफ़ीर की मौजूदगी में मदीना के मशहूर क़ब्रिस्तान अलबक़ी के उस हिस्से में दफन किए गए जहां अब तदफ़ीन का सिलसिला बन्द हो गया है। मस्जिदे नबवी के तकरीबन तमाम अइम्मा शैखुल हदीस के जनाज़े में शरीक थे। शैखुल इस्लाम मौलाना हुसैन अहमद मदनी के भतीजे सैयद हबीब मदनी (साबिक रईसुल औकाफ, मदीना) ने अपनी निगरानी में शैखुल हदीस की कब्र उनके उस्ताद शैख खलील अहमद सहारनपुरी के बगल में बनवाई, इस तरह दोनों शूयूख अलहे बैत के करीब ही मदफून हैं। दारुल उलूम देवबन्द के उस्ताद और मुजाहिदे आज़ादी शैखलु इस्लाम मौलाना हुसैन अहमद मदनी ने चंद मरहलों में तकरीबन 15 साल मस्जिदे नबवी में उलूमे नबूवत का दर्स दिया। उनके भतीजे सैयद हबीब मदनी एक तवील अरसे तक मदीना के गवर्नर की सरपरस्ती में मदीना के इंतिज़ामी उलू देखते रहे, गरज़ ये कि वह अरसे दराज़ तक मुसाइद गवर्नर थे। सउदी अरब में कोई भी हिन्द निज़ाद सउदी इन्ते बड़े ओहदे पर फायज़ नहीं हुआ।

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी हयाते तय्यिबा में उम्मी तौर पर अहादीस लिखने से मना फरमा दिया था ताकि कुरान व हदीस एक दूसरे से मिल न जाएं, अलबत्ता बाज़ फुक़हा सहाबा (जिन्हें कुरान व हदीस की इबारतों के दरमियान फ़र्क़ मालूम था) को नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हयाते तय्यिबा में भी अहादीस लिखने की महदूद इजाज़त थी। खुलफ़ाए राशिदीन के अहद में जब कुरान करीम तदवीन के मुख्तलिफ़ मराहिल से गुज़र कर एक किताबी शक़ल में उम्मत मुस्लिमा के हर फ़र्द के पास पहुंच गया तो ज़रूरत थी कि कुरान करीम के सबसे पहले पहले मुफ़स्सिर हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अहादीस को भी मुदव्वन किया जाए, चुनांचे अहादीसे रसूल का मुकम्मल ज़खीरा जो मुंतशिर औराक़ और जबानों पर जारी था इतिहाई एहतियात के साथ हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ की अहदे खिलाफ़त में मुरत्तब किया गया। अहादीसे नबविया के उस ज़खीरे की सनद में उम्मन दो रावी थे एक सहाबी और ताबेई। इन अहादीस के ज़खीरे में ज़ईफ़ या मौजू होने का एहतेमाल भी नहीं था। नीज़ यह वह मुबारक दौर था जिसमें असमाउर रिजाल के इल्म का वजूद भी नहीं आया था और न उसकी ज़रूरत थी, क्योंकि हदीसे रसूल बयान करने वाले सहाबए किराम और ताबेईन इज़ाम या फिर तबे ताबेईन हज़रात थे और उनकी अमानत व दियानत और तक़वा का ज़िक़्र अल्लाह तआला ने कुरान करीम (सूरह तौबा 100) में फरमाया है।

हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा को इन्हीं अहादीस का ज़खीरा मिला थे, चुनांचे उन्होंने कुरान करीम और अहादीस के इस ज़खीरे से इस्तिफ़ादा फरमा के उम्मत मुस्लिमा को इस तरह मसाइले शरइया

जिद्द व जोहद के बाद तहरीर फरमाई। मदीना के क़याम के दौरान इस किताब की तालीफ़ शुरू फरमाई थी, उस वक़्त आपकी उम्र सिर्फ़ 29 साल थी। दुनिया के तक़रीबन तमाम मकातिबे फ़िक़् के उलमा इस किताब से इस्तिफ़ादा करते हैं। लिबनान के बुहल से नाशिरीन इस किताब के लाखों की तादाद में बुख़ाये शाये कर रहे हैं। सउदी अरब की तक़रीबन तमाम ही लाइब्रेरियों और मक़तबों की यह किताब ज़ीनत बनी हुई है, मालिकी हज़रात इस किताब को निहायत इज़ज़त व एहतेराम के साथ पढ़ते और पढ़ाते हैं, यहां तक कि बाज़ मन्त्रिकी उलमा ने फरमाया है कि हमें फ़ुरूई मसाइल से वाक़फ़ियत सिर्फ़ इसी किताब से हुई है। बाज़ नाशिरीन ने इस किताब को 15 जिल्दों में शाये किया है।

अल अबवाब वत्तराजिम लिल बुखारी इस किताब में बुख़ारी शरीफ़ के अबवाब की वज़ाहत की गई है। बुख़ारी शरीफ़ में अहादीस के मजमूआ के उनवान पर बहस एक मुस्तक़िल इल्म की हैसियत रखती है जिसे तरजुमतुल अबवाब कहते हैं। शैख़ ज़करिया ने इस किताब में शाह वलीउल्लाह देहलवी और अल्लामा इब्ने हजर असक़लानी जैसे उलमा के ज़रिया बुख़ारी के अबवाब के बारे में की गई वज़ाहतें ज़िक़्र करने के बाद अपनी तहकीक़ी राय पेश की हैं। यह किताब अरबी ज़बान में है और इसकी 6 जिल्दें हैं।

लामुअदिरारी अला जामे सहीहिल बुखारी यह मजमूआ दरअसल शैख़ रशीद अहमद गंगोही का दर्से बुख़ारी है जो शैख़ुल हदीस के वालिद शैख़ मोहम्मद यहया ने उर्दू ज़बान में कलमबंद किया था। शैख़ हदीस मौलाना ज़करिया ने इसका अरबी ज़बान में तरजुमा किया और अपनी तरफ़ से कुछ हज़फ़ व इज़ाफ़ात करके किताब की

तालीक और हवाशी तहरीर फरमाए। इस तरह शैखुल हदीस की 12 साल की इंतिहाई कोशिश और मेहनत की वजह से यह अज़ीम किताब मंजरे आम पर आई। इस किताब पर शैखुल हदीस का मुकद्दमा बेशुमार खूबियों का शामिल है। यह किताब अरबी ज़बान में है और इसकी 10 जिल्दें हैं।

बज़लुल मजहूद फी हल्लि अबी दाऊद यह किताब शैख खलील अहमद सहारनपूरी की तहरीर करदा है, लेकिन शैखुल हदीस मौलाना मोहम्मद ज़करिया की चंद सालों की कोशिश के बाद ही 1345 हिजरी में मदीना में मुकम्मल हुई। इस किताब के मुतअल्लिक कहा जाता है कि शैखुल हदीस ने अपने उस्ताद से ज़्यादा वक़्त लगा कर इस किताब को पायए तकमील तक पहुंचाया। यह किताब अरबी ज़बान में है और इसकी तकरीबन 20 जिल्दें हैं।

अलकौकबुद दरी अला जामिउत तिमिज़ी यह मजमूआ दरअसल शैख रशीद अहमद गंगोही का उर्दू ज़बान में रसतिमिज़ी शरीफ है जो शैखुल हदीस ने अरबी ज़बान में तरजुमा करके अपने तालीकात के साथ मुरत्तब किया है। यह किताब अरबी ज़बान में है और उसकी 4 जिल्दें हैं।

ज़ुजउ हज्जतिल विदा व उमरातुन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस किताब में शैखुल हदीस ने हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हज और उमरह से मुतअल्लिक तफसील ज़िक्र फरमाई है। हज और उमरह के मुख्तलिफ मसाइल और मराहिल, नीज़ उन जगहों के मौजूदा नाम जहां हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़याम फरमाया था या जहां से गुजरे थे ज़िक्र किया है। यह किताब अरबी ज़बान में है।

करके ऐसा कारनामा अंजाम दिया जिसको तारीख कभी नहीं भुला सकती। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ का दौर ख़िलाफ़त (99 हिजरी से 101 हिजरी) अगरचे निहायत मुख़्तसर रहा मगर ख़िलाफ़ते राशिदा का ज़माना लोगों को याद आ गया, हत्ताकि रिआया में उनका लक़ब ख़लीफ़े ख़ामिस (पांचवां ख़लीफ़ा) करार पाया। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के दौर ख़िलाफ़त में इमाम अबू हनीफ़ा की उम्र (19-21) साल थी। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के कारनामों में एक अहम कारनामा तदवीने हदीस है जिसकी तदवी का मुख़्तसर बयान गुज़र चुका, गरज़ ये कि तदवीने हदीस का अहम दौर इमाम अबू हनीफ़ा ने अपनी आंखों से देखा है। इमाम अबू हनीफ़ा ने इस्लामी दौर की दो बड़ी हुकूमतों (बनू उमय्या और बनू अब्बास) को पाया। ख़िलाफ़ते बनू उमय्या के आखिरी दौर में हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा का हुकुमरानों से इख़्तिलाफ़ हो गया था जिसकी वजह से आप मक्का चले गए और वहीं सात साल रहे। ख़िलाफ़ते बनू अब्बास के क़याम के बाद आप फिर कूफ़ा तशरीफ़ ले आए, अब्बासी ख़लीफ़ा अबू जाफ़र मंसूर हुकूमत की मज़बूती के लिये इमाम अबू हनीफ़ा की ताईद चाहता था जिस के लिये उसने मुल्क का ख़ास ओहदा पेश किया मगर आपने हुकूमती मामलात में दख़ल अंदाज़ी से माज़रत चाही, क्योंकि हुकुमरानों के अगराज़ व मक़ासिद से इमाम अबू हनीफ़ा अच्छी तरह वाकिफ़ थे, इसी वजह से 146 हिजरी में आपको जेल में कैद कर दिया गया, लेकिन जेल में भी आपकी मक़बूलियत में कमी नहीं आई और वहां भी आपने कुरान व हदीस और फ़िक़ह की तालीम जारी रखी, चुनांचे इमाम मोहम्मद ने जेल में ही आपसे तालीम हासिल की। हुकुमरानों ने इसपर ही बस

जुज़उ तुरुकिल मदीना
 जुज़उल मुबहमात फिल असानीद वर रिवायात
 जुज़उ मा कालल मुहदिसून फिल इमामिल आजम
 जुज़उ मुकप्फिरातिज़ जुनूब
 जुज़उ मुलतकतिल मिरकात
 जुज़उ मुलतकतिर रुवात अनिल मिरकात
 हवाशी अलल हिदाया
 शरह सुल्लमुल उलूम
 अलवकाये वद दुहूर (तीन जिल्दें, पहली जिल्द नबी अकरम
 सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत के मुतअल्लिक, दूसरी जिल्द
 खुलफाए राशिदीन के मुतअल्लिक और तीसरी जिल्द दूसरे हुकमरानों
 के मुतअल्लिक)

शैखुल हदीस की चंद उर्दू किताबें

अल एतेदाल फी मरातिबिर रिजाल
 आपी बीती (7 जिल्दें)
 असबाब इख्तिलाफिल अइम्मा
 अत्तारीखुल कबीर
 सीरते सिद्दीक
 निज़ामे मज़ाहिरुल उलूम (दस्तूर)
 तारीख मज़ाहिरुल उलूम
 शरहुल अल्फिया (तीन जिल्दें)
 अकाबिर का तक्रवा
 अकाबिर का रमज़ान

अकाबिर उलमाए देवबन्द

मौत की याद

फज़ाइले ज़बाने अरबी

फज़ाइले तिजारत

फज़ाइले आमाल (फज़ाइल पर मुशतमिल 9 किताबों का मजमूआ)

शरीअत व तरीक़त का तलाज़ुम (इसका अरबी ज़बान में तरज़ुआ मिस्र से शाये हो चुका है)

चंद सतरें शैखुल हदीस मौलाना मोहम्मद ज़करिया की शख्सियत के मुतअल्लिक़ तहरीर की हैं, अल्लाह तआला क़ूब फरमाए। तफसीलात के लिए दूसरी किताबों के साथ मौलाना सैयद अबुल हसन अली नदवी की किताब (तज़केरा शैखुल हदीस मौलाना मोहम्मद ज़करिया) का मुतालआ फरमाएं। मेरे हर हर लफज़ से आपका मुत्तफिक़ होना कोई ज़रूरी नहीं है अलबत्ता फज़ाइले आमाल को सामने रख कर शैखुल हदीस की शख्सियत पर कुछ कहने या लिखने से पहले उनकी दूसरी तसानीफ़ खास कर 18 जिल्दों पर मुशतमिल मशहूर व मारुफ अरबी ज़बान में तहरीर करदा किताब "औजज़ुल मसालिक इला मुअत्ता इमाम मालिक" का मुतालआ कर लें। अरबी से वाक़फियत न होने की सूत में दुनिया के किसी भी हिस्से के मारुफ आलिम खास कर उलमा से इस किताब के मुतअल्लिक़ मालूमात हासिल कर लें।

तसलीम करते चले आए हों, जिसने फिक्रह की तदवीन में अहम खे अदा किया हो, जो सहाबिए रसूल हज़रत अब्दुल्लाह बिन समूद का इल्मी वारिस बना हो, जिसने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद जैसे फुकहा सहाबा के शगिर्दों से इल्मी इस्तिफादा किया हो, जिसके तलामजा बड़े बड़े मुहद्दिस, फकीह और इमामे वक़्त बने हों तो उसके मुतअल्लिक ऐसा तअस्सुर पेश करना सिर्फ और सिर्फ गुब्ब व इनाद और इल्म की कमी का नतीजा है। यह ऐसा ही है कि कोई शख्स हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उसमान गनी रज़ियल्लाहु अन्हु के मुतअल्लिक कहे कि उनको इल्मे हदीस से मारेफत कम थी, क्योंकि उनसे गिन्ती के चंद अहादीस हदीस की किताबों में मरवी हैं, हालांकि उन हज़रात का कसरते रिवायत से इजतिनाब दूसरे असबाब की वजह से था जिसकी तफसीलात किताबों में मौजूद हैं। गरज़ ये कि इमाम अबू हनीफा फकीह होने के साथ साथ अज़ीम मुहद्दिस भी थे।

हज़रत इमाम अबू हनीफा और हदीस की मशहूर किताबे

अहादीस की मशहूर किताबें (बुखारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, नसई, इब्ने माजा, तबरानी, बैहकी, मुसनद अहमद, मुसनद इब्ने हिब्बान, मुसनद अहमद बिन हमबल वगैरह) इमाम अबू हनीफा की वफात के तक़रीबन 150 साल बाद लिखी गई हैं। इन मजूक़ा किताबों के मुसन्निफ़ीन इमाम अबू हनीफा की हयात में मौजूद ही नहीं थे, उनमें से अक्सर इमाम अबू हनीफा के शगिर्दों के शगिर्द हैं। मशहूर हदीस की किताबों की तसनीफ से पहले ही इमाम अबू हनीफा

1924 क आखिर में दारुल उलूम देवबन्द से फरागत के बाद मदरसा शाही मुरादाबाद में मुदरिस हो गए।

1930 में जमीअत उलमाए हिन्द के सातवें डिक्टेटर की हैसियत से अंग्रेजों ने गिरफ्तार किया, छः महीने की कैद कैद बामशक्कत की सज़ा मिली।

1934 के एलक्शन में संभल के मशहू व मारुफ नवाब आशिक हुसैन के मुकाबले में फतह हासिल की।

1942 जब कांग्रेस ने हिन्दुस्तान छोड़ो का नारा दिया तो हिन्दुस्तान के दूसरे सियासी रहनुमाओं के साथ मौलाना को संभल से गिरफ्तार किया गया, तकरीबन एक साल बाद रिहाई हुई। गरज़ मौलाना ने हिन्दुस्तान की आज़ादी के लिए तकरीबन चार साल जेल में गुज़ारे।

1946 में एम.एल.ए. के एलेक्शन में दोबारा फतह हासिल की और 1952 तक एम.एल.एल. रहे।

1946 में अपनी सियासी मसरूफियात की वजह से मदरसा शाही मुरादाबाद की दर्स व तदरीस की खिदमात से सुबुकदोशी हासिल कर ली।

1952 से 1957 तक जमीअत उलमाए हिन्द के नाज़िमे आला रहे।

1957 से 1962 तक मदरसा चिल्ला अमरोहा में शैख हदीस की हैसियत से खिदमात अंजाम दीं।

1962 से 1965 तक मदरसा इमदादिया मुरादाबाद में बुखारी शरीफ का दर्स दिया।

1965 से 1973 तक मदरसा तालीमुल इस्लाम गुजरात में शैख हदीस के मंसब पर फायज़ रहकर बुखारी व मुस्लिम का दर्स दिया।

1973 से 1974 तक बनारस दारुल उलूम में शैखुल हदीस रहे और दर्से बुखारी दिया, गरज़ आपने 17 साल तक बुखारी पढ़ाई।

1974 में मुस्लाज़मत का इरादा तर्क करके संभल तशरीफ ले आए और तसनीफी काम में मसरूफ हो गए, आपकी तसनीफात में “अखबारुत तंज़ील” यानी कुरान की पेशीन गोइयां, “तक्लीदे अइम्मह” और “मक़ामाते तसव्वुफ” काबिले ज़िक्र हैं।

मवाना मेरठ के बाशिन्दों के बेहद इसरार पर वहां आठ माह क़याम फरमा कर दर्से कुरान दिया।

आखिरी उम्र में कई साल रमज़ान्ना मुबारक मुंबई में गुज़ारे और तरावीह के बाद कुरान करीम की तफसीर बयान फरमाई।

23 नवम्बर 1975 बरोज़ इतवार को संभल में वफात हुई।

शगिर्द हैं। इसके अलावा शैख हम्माद हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद के इल्मी वारिस और नाइब भी शुमार किए जाते हैं।

इमाम अबू हनीफा की दूसरी बड़ी दरसगाह शहर बसरा थी जो इमामुल मुहद्दिसीन शैख हसन बसरी (वफात 110 हिजरी) के उलूमे हदीस से मालामाल थी, यहां भी इमाम अबू हनीफा ने इल्मे हदीस का भरपूर हिस्सा पाया।

शैख अता बिन अबी रबाह (वफात 114 हिजरी) मक्का में मुक्कीम शैख अता बिन अबी रबाह से भी इमाम अबू हनीफा ने भरपूर इस्तिफादा किया। शैख अता बिन अबी रबाह ने बेशुमार सहाबए किराम खास कर हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा, हज़रत अबू हुऱैरा रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से इस्तिफादा किया था। शैख अता बिन अबी रबाह सहाबिए रसूल हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के खुसूसी शगिर्द शुमार किए जाते हैं।

शैख इकरमा बरबरी (वफात 104 हिजरी) यह हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के खुसूसी शगिर्द हैं। कम व बेश 70 मशहूर ताबईन इनके शगिर्द हैं, इमाम अबू हनीफा भी उनमें शामिल हैं। मक्का में इमाम अबू हनीफा ने इनसे इल्मी इस्तिफादा किया।

मदीना के सात फुकहा में से हज़रत सुऱैमान और हज़रत सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन उमर से इमाम अबू हनीफा ने अहादीस की सिमाअत की है। यह सातों फुकहा मशहूर व मारुफ ताबईन थे। हज़रत सुलैमान उम्मुल मोमेनीन हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा के परवरदा गुलाम हैं, जबकि हज़रत सालिम हज़रत उमर फारूक

अखराजात खुद ही बरदाशत करते, हत्ताकि अगर दारुल उलूम की कोई चाय भी पीते तो उसकी कीमत दारुल उलूम में जमा फरमाते। इजलासे सद साला के बाद 1982 में मुसाइद मोहतमिम मुकर्रर हुए। 1982 में मोहतमिम बने और जब से वफात तक (एक मुहर्रम 1432 हिजरी, 8 दिसम्बर 2010 इसवी) इस मंसब पर फायज़ रहे। 1982 के इंतिहाई नाजुक हालात में मौलाना ने दारुल उलूम देवबन्द के एहतिमाम और कयादत की ज़िम्मेदारी संभाली। उन्होंने अपनी खुदाद लाहियतों और तदब्बुर से इस अज़ीम दरसगाह को मुनज्ज़म रखने में मुसलसल 30 साल बेमिसाल खिदमात अंजाम दीं।

हज़रत मौलाना मरहूम ने अपने तीस साला एहतिमाम के दौरान कोई तंख्वाह नहीं ली बल्कि एक छोटा सा कमरा जो आपको रिहाइश के लिए दिया गया था उसका भी पाबन्दी के साथ किराया अदा करते थे। अपने मेहमानों की चाय वगैरह का मुकम्मल खर्चा अपनी जेब से अदा करते थे अगरचे वह दफ्तरी औकात में ही क्यों न आए। मौलाना मरहूम ने अपनी जायदाद का एक हिस्सा फरोख्त करके दारुल उलूम पर खर्च किया। इसके अलावा अक्सर व बेशतर तआवुन करते रहते थे। हज़रत मौलाना मरहूम कभी भी अपनी राय पर इसरार नहीं करते थे। इंतिहाई सब्र व तहम्मूल के साथ सबको साथ लेने के जज़्बे से काम करते थे। तीस साल पहले एहतिमाम की ज़िम्मेदारी संभालने के वक़्त दारुल उलूम का सालाना बजट तक़रीबन पचास लाख रुपये था, अब चूंकि तलबा की तादाद में कई गुणा इज़ाफ़ा हुआ है नीज़ तामीरी कामों का सिलसिला बराबर जारी है, इसलिए अब सालाना बजट तक़रीबन 14 करोड़ रुपये है।

दारुल उलूम देवबन्द के तहफफुज़ और इसे एक अज़ीम मक़ाम पर
 पहुंचाने में जो किरदार हज़रत मौलाना मरहूम ने अदा किया वह
 इतिहाई क़ाबिले क़दर है। हज़रत मौलाना मरहूम साहबे फज़ल और
 साहबे तक्रवा आलिमे दीन थे तवाज़ो व इंकिसारी के हामिल थे,
 शराफ़त और बुज़ुरगी के मुजस्सम पैकर थे। हमारी दुआ है कि
 अल्लाह तआला हज़रत मौलाना मरहूम की मग़फ़िरत फरमाए, उनके
 दरजात बुलंद फरमाए और जन्नतुल फिरदौस में आला मक़ाम अता
 फरमाए। तमाम दीनी मदारिस खास कर दारुल उलूम देवबन्द की
 तमाम शुरू व फ़ितन से हिफ़ाज़त फरमाए, आमीन, नीज़ मुंतसिबीन
 और बही ख़वाहाने दारुल उलूम से दुआए मग़फ़िरत और ईसाल सवाब
 की दरखास्त है।

इमाम अबू हनीफा के चंद मशहूर शागिर्दों के नाम हसबे ज़ैल हैं जिन्होंने अपने उस्ताद के मसलक के मुताबिक दर्स व तदरीस का सिलसिला जारी रखा। काज़ी अबू यूसुफ, इमाम मोहम्मद बिन हसन अश शैबानी, इमाम जुफर बिन हुज़ैल, इमाम यहया बिन सईद अलकत्तान, इमाम यहया बिन ज़करिया, मुहदिस अब्दुल्लाह बिन मुबारक, इमाम वकी बिन ज़राह और इमाम दाऊद ताई वगैरह।

काज़ी अबू यूसूफ (वफात 182 हिजरी) आपका नाम याकूब बिन इब्राहीम अंसारी है। 113 हिजरी या 117 हिजरी में कूफा में पैदा हुए। इमाम अबू यूसूफ को मआशी तंगी की वजह से तालीमी सिलसिला जारी रखना मुश्किल हो गया था मगर इमाम अबू हनीफा ने इमाम यूसूफ और उनके घर के तमाम अखराजात बर्दाशत करके उनको तालीम दी। ज़िहानत, तालीमी शौक और इमाम अबू हनीफा की खुसूसी तवज्जोह की वजह से काज़ी अबू यूसूफ एक बड़े मुहदिस व फकीह बन कर सामने आए। फिकह हनफी की तदवीन में काज़ी अबू यूसूफ का अहम किरदार है। अब्बासी दौर हुकूमत में काज़िस्स कुज़ात के ओहदे पर फायज़ हुए। यह पहला मौक़ा था जब किसी को काज़ियुल कुज़ात के ओहदे पर फायज़ किया गया। इमाम अबू हनीफा से बाज़ मसाइल में इख़िलाफ भी किया, लेकिन पूरी ज़िन्दगी खास कर काज़ियुल कुज़ात के ओहदे पर फायज़ होने के बाद फिकह हनफी को ही फैलाया। मसलके इमाम अबू हनीफा पर उसूले फिकह की सबसे पहली किताब तहरीर फरमाई। 182 हिजरी वफात पाई।

इमाम मोहम्मद बिन हसन अश शैबानी (वफात 189 हिजरी) आप 131 हिजरी में दमिशक में पैदा हुए फिर फुकहा व मुहदिसीन के शहर कूफा चले गए, वहां बड़े बड़े मुहदिसीन और फुकहा की सोहबत

1964 में क़तर से लंदन चले गए और 1966 में दुनिया की मारुफ यूनिवर्सिटी Cambridge London से जनाब A.J. Arberry और जनाब Prof. R.B. Serjeant की सरपरस्ती में Studies in Early Hadith Literature के मौज़ू पर Ph.D की। मजकूरा मौज़ू पर अंग्रेजी ज़बान में Thesis पेश फरमा कर Cambridge University से डाक्टरेट की डिग्री से सरफराज़ होने के बाद आप दोबारा क़तर तशरीफ ले गए और वहां क़तर पब्लिक लाइब्रेरी मज़ीद दो साल यानी 1968 तक काम किया।

1968 से 1973 तक जामिया उम्मुल क़ुरा मक्का में मुसाइद प्रोफेसर की हैसियत से ज़िम्मेदारी बखूबी अंजाम दी।

1973 से रिटायरमेंट यानी 1991 तक किंग सऊद यूनिवर्सिटी में मुस्तलहातुल हदीस के प्रोफेसर की हैसियत से इल्मे हदीस की शांक्रदर खिदमात अंजाम दी।

1968 से 1991 तक मक्का और रियाज़ में आपकी सरपरस्ती में बेशुमार हज़रात ने हदीस के मुख्तलिफ पहलुओं पर रिसर्च की। इस दौरान आप सउदी अरब की बहुत सी यूनिवर्सिटियों में इल्मे हदीस के मुमतहिन की हैसियत से मुतअय्यन किए गए, नीज़ मुख्तलिफ तालीमी व तहकीकी इदारों के मिम्बर भी रहे।

हदीस की अज़ीम खिदमात पर 1980 में किंग फैसल आलमी अवार्ड

1980 में दर्ज ज़ैल खिदमात के पेशे नज़र आपको किंग फैसल आलमी अवार्ड से सरफराज़ किया गया।

1) आपकी किताब "दिरासत फिल हदीसिन नबवी व तारीखि तदविनिह" जो कि अंग्रेजी ज़बान में तहरीर करदा आपकी Thesis का बाज़ इजाफात के साथ अरबी में तरजुमा है, जिसका पहला एडीशन किंग सउदी यूनिवर्सिटी ने 1975 में शाये किया था। इस किताब में आपने मज़हब दलाइल के साथ अहादीसे नबविया का दिफा करके तदवीने हदीस के मुतअल्लिक मुस्तशरेकीन के एतेराज़ात के भरपूर जवाबात दिए हैं।

2) सही इब्ने खुज़ैमा जो कि सही बुखारी व सही मुस्लिम के अलावा अहादीसे सहीहा पर मुशतमिल एक अहम किताब है, असरे हाज़िर में चार जिल्दों में इसकी इशाअत आपकी तखरीज व तहकीक के बाद ही दोबारा मुमकिन हो सकी। इसके लिए आपने मुख्तलिफ मुल्कों के सफर किए।

3) अहादीसे नबविया को अरबी ज़बान में सबसे पहले कम्प्युटराइज़ करके आपने हदीस की वह अज़ीम खिदमत की है कि आने वाली नसलें आपकी इस अहम खिदमत से फायदा हासिल करती रहेंगी। इंशाअल्लाह यह अमल आपके लिए सदकए जारिया बनेगा।

इस तरह डाक्टर मोहम्मद मुस्तफा आज़मी कासमी दुनिया में पहले शख्स हैं जिन्होंने अहादीस की अरबी इबारतों को कम्प्युटराइज़ किया। गरज़ ये कि मुंतसेबीन मक्तबे फिक्रे देवबन्द को फख्र हासिल है कि जिस तरह अहादीस को पढ़ने व पढ़ाने, हदीस की कताबों की शरह तहरीर करने और हुज्जियते हदीस और उसके दिफा में सबसे ज़्यादा काम उनके उलमा ने किया है, इसी तरह अहादीसे नबविया को कम्प्युटराइज़ करने वाला पहला शख्स भी फाज़िले दारुल उलूम देवबन्द ही है जिसने कुरान व हदीस की तालीम व तअल्लुम से

किया है, फिर उसके बाद दूसरे हज़रत मसलन इमाम यहया बिन मईन ने इस इल्म को बाक़ायदा फन की शकल दी। इमाम यहया बिन सईद अलकत्तान ने हज़रत इमाम अबू हनीफा से इल्मी इस्तिफादा किया है।

इमाम अब्दुल्लाह बिन मुबारक (वफात 181 हिजरी) यह भी इमाम अबू हनीफा के शागिर्दों में से हैं। इल्मे हदीस में बड़ी महारत हासिल की, यहां तक कि अमिरुल मोमिनीन फिल हदीस का लक़ब मिला। 118 हिजरी में पैदा हुए और 181 हिजरी में वफात पाई। इमाम अब्दुल्लाह बिन मुबारक का कौल है कि अगर अल्लाह तआला इमाम अबू हनीफा और सुफयान सौरी के ज़रिये मेरी मदद न फरमाता तो मैं एक आम इंसान से बढ़ कर कुछ न होता।

तदवीने फिक़ह

असरे कदीम व जदीद में इल्मे फिक़ह की मुश्तलिफ अल्फाज़ के साथ तारीफ की गई है, मगर उनका खुलासा कलाम यह है कि कुरान व हदीस की रौशनी में अहकामे शरइया का जानना फिक़ह कहलाता है। अहकामे शरइया के जानने के लिए सबसे पहले कुरान करीम और फिर अहादीस की तरफ रुजू किया जाता है। कुरान व हदीस में किसी मसअले की वज़ाहत न मिलने पर इजमा व क़यास (यानी कुरान व हदीस की रौशनी में नए मसाइल के लिए इजतेहाद) की तरफ रुजू किया जाता है।

फिक़ह को समझने से पहले इमाम अबू हनीफा के एक अहम उसूल व ज़ाबते को ज़ेहन में रखें कि मैं पहले किताबुल्लाह और सुन्नते नबवी को इख्तियार करता हूं, जब कोई मसअला किताबुल्लाह और सुन्नते रसूल में नहीं मिलता तो सहाब किराम के अक़वाल व

करवाते रहे हैं। डाक्टर आजमी ने दारुल उलूम देवबन्द में दाखिले से पहले तकरीबन छः महीने मदरसा शाही मुरादाबाद में तालीम हासिल की है, नीज़ आप तकरीबन एक साल अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में भी ज़ेरे तालीम रहे हैं। आपके तीन बच्चे हैं, बेटी फातिमा मुस्तफा आजमी अमेरीका से M.Com और Ph.D करने के बाद शैख ज़ायद यूनिवर्सिटी में मुसाइद प्रोफेसर हैं। बड़े साहबज़ादे अक़ील मुस्तफा आजमी अमेरीका से इंजीनियरिंग फिर मास्टर इन इंजीनियरिंग और पी.एच.डी. करने के बाद किंग सउद यूनिवर्सिटी में मुसाइद प्रोफेसर हैं, छोटे बेटे जनाब अनस मुस्तफा आजमी ने UK से Ph.D की है और King Faisal Specialist Hospital में बरसरे रोज़गार हैं। इसके अलावा किंग खालिद बिन अब्दुल अज़ीज़ ने आपकी अज़ीम खिदमात के पेशे नज़र 1982 में आपको Medal of Merit, First Class से सरफराज़ फरमाया।

Saudi Nationality

1981 में हदीस की गिरांकदर खिदमात के पेशे नज़र आपको सउदी नेशनलिटी अता की गई।

दूसरी अहम जिम्मेदारियां

- Chairman of the Department of Islamic Studies, College of Education, King Saud University
- Visiting Scholar at the University of Michigan, Ann Arbor, Michigan (1981-1982)

- Visiting Fellow of St. Cross College, Oxford, England, during Hilary term (1987)
- Visiting Scholar at the University of Colorado, Boulder, Colorado, USA (1989-1991)
- King Faisal Visiting Professor of Islamic Studies at Princeton University, New Jersey (1992)
- Member of Committee for promotion, University of Malaysia
- Honorary Professor, Department of Islamic Studies, University of Wales, England

इल्मी खिदमात

आपकी इल्मी खिदमात का मुख्तसर तआरुफ पेशे खिदमत है

1) Studies in Early Hadith Literature: यह किताब दरअसल डाक्टर मुस्तफा आज़मी साहब की पी.एच.डी. की थेसिस है जो अंग्रेजी ज़बान में तहरीर की गई थी जिसका पहला एडीशन बैरुतसे 1968 में शाये हुआ, दूसरा एडीशन 1978 और तीसरा एडीशन 1988 में अमेरीका से शाये हुआ और उसके बाद बहुत से एडीशन शाये हो चुके हैं और अलहम्दु लिल्लाह यह सिलसिला बराबर जारी है। इसका 1993 में तुर्की ज़बान में और 1994 में इन्डोनेशी और उर्दू ज़बान में तरजुमा शाये हो चुका है। मशरिक व मगरिब की बहुत सी यूनिवर्सिटियों में यह किताब निसाब में दाखिल है।

2) दिरासत फिल हदीसिन नबवी व तारीखि तदवीनिह - मौसूफ ने अंग्रेजी ज़बान में तहरीर करदा अपनी थेसिस में बाज़ इज़ाफात फरमा

हज़रत इब्राहीम नखई कूफी मसनद नशीन हुए और इल्मे फिक़ह को बहुत कुछ वुसअत दी यहां तक कि उन्हें "फ़कीहुल इराक़" का लक़ब मिला। हज़रत इब्राहीम नखई कूफी के ज़माने में फिक़ह का ग़ैर मुरत्तब ज़खीरा जमा हो गया था जो उनके शागिर्दों ने खास कर हज़रत हम्माद कूफी ने महफूज़ कर रखा था। हज़रत हम्माद कूफी के इस ज़खीरे को इमाम अबू हनीफा कूफी ने अपने शागिर्दों खास कर इमाम युसूफ़, इमाम मोहम्मद और इमाम जुफ़र को बहुत मुनज़ज़म शकल में पेश कर दिया जो उन्होंने बाक़ायदा किताबों में मुरत्तब कर दिया, यह किताबें आज भी मौजूद हैं। इस तरह इमाम अबू हनीफा हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद के दो वास्तों से हकीकी वारिस बने और इमाम अबू हनीफा के ज़रिये हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद ने कुरान व सुन्नत की रौशनी में जो समझा था वह उम्मत मुस्लिमा को पहुंच गया। गरज़ ये कि फिक़ह हनफी की तदवीन उस दौर का कारनामा है जिसको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खैरुल कुरुन करार दिया और अहादीसे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुकम्मल हिफाज़त के साथ उसी ज़माने में किताबी शकल में मुरत्तब की गई।

(वज़ाहत) इन दिनों बाज़ हज़रात फिक़ह का ही इंकार करना शुरू कर देते हैं हालांकि कुरान व हदीस को समझ कर पढ़ना और इससे मसाइले शरइया का इस्तिंबात करना फिक़ह है। नीज़ कुरान व हदीस में बहुत सी जगह फिक़ह का ज़िक्र भी वज़ाहत के साथ मौजूद हैं। मशहूर हदीस की किताब (बुखारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, नसई, इब्ने माजा, तबरानी, बैहकी, मुसनद अहमद, मुसनद हिब्बान, मुसनद अहमद बिन हमबल वगैरह) की तालीफ से पहले ही इमाम

5) Studies in Hadith Methodology and Literature: इस किताब में हदीस के तरीके कार से बहस की गई है ताकि अहदीस को समझने में आसानी हो, नीज़ मुस्तशरेकीन ने जो शुबहात पैदा कर दिए थे उनका इज़ाला करने की एक बेहतरीन कोशिश है। मुसन्नफ ने इस किताब को दो हिस्सों में मुक़सिम किया है, पहले हिस्से में अहादीस के तरीके कार से बहस की गई है जबकि दूसरे हिस्से में हदीस के अदबी पहलू को सिहाये सित्ता और दूसरी हदीस की किताबों की रौशनी में उजागर किया है। यह किताब अंग्रेज़िदां असहाब के लिए उलूम व अदबे हदीस के मुतालआ का अहम ज़रिया है जो मुख्तलिफ यूनिवर्सिटियों के निसाब में दाखिल है। किताब का पहला और दूसरा एडीशन 1977 में अमेरीका से तीसरा एडीशन 1988 में अमेरीका से शाये हुआ, उसके बाद बहुत से एडीशन शाये हो चुके हैं।

6) The History of The Quranic Text from Revelation to Compilation: यह डाक्टर मोहम्मद मुस्तफा आजमी कासमी की बेहतरीन तसानीफ में से एक है जिसमें कुरान करीम की तदवीन की तारीख मुस्तनद दलाइल के साथ ज़िक्र फरमाई है। दूसरी आसमानी किताबों की तदवीन से कुरान करीम की तदवीन का मुकारना फरमा कर कुरान करीम की तदवीन के महासिन व खूबियों का तज़क़िरा फरमाया है, नीज़ इस्लाम मुखालिफ कुव्वतों को दलाइल के साथ जवाबात तहरीर किए हैं। इस किताब में हज़रत जैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़रिये कुरान करीम का हतमी नुसखा तैयार करने के लिए तरीके कार पर भी मुफस्सल रौशनी डाली गई है। इस किताब का पहला एडीशन 2003 में इंग्लैंड से दूसरा एडीशन 2008

में जुबई से शाये हुआ। इसके बाद सउदी अरब, मलेशिया, कनाडा और कुवैत से बहुत से एडीशन शाये हो चुके हैं।

7) On Schacht's of Muhammadan Jurisprudence: मशहूर व मारुफ मुस्तशरिक "शाख्त" की किताब का तंकीदी जायज़ा और फिकह इस्लामी के मुतअल्लिक उसके ज़रिया उठाए गए एतेराज़ात के मुदल्लल जवाबात पर मुशतमिल एक अहम तसनीफ है जो मुख्तलिफ यूनिवर्सिटियों के निसाब में दाखिल है। यह किताब 243 पेजों पर मुशतमिल है। इस किताब का पहला एडीशन 1985 में न्यू यार्क से द्वारा एडीशन 1996 में इंग्लैंड से शाये हुआ है। इसके बाद बहुत से एडीशन शाये हो चुके हैं और सिलसिला बराबर जारी है। यह किताब दुनिया की मुख्तलिफ यूनिवर्सिटियों के निसाब में दाखिल है। 1996 में इसका तुर्की ज़बान में तरजुमा शाये हुआ। अरबी ज़बान में तरजुमा और उर्दू में मुलख़ख़स तबाअत के मरहले में है।

8) उसूलल फिक़हिल मोहम्मदी लिल मुस्तशरिक शाख्त (दिरासत नक़दियह) - यह डाक्टर मोहम्मद मुस्तफा आज़मी साहब की अंग्रेजी ज़बान में तहरीर करदा किताब का अरबी तरजुमा है जो डाक्टर अब्दुल हकीम मतरूदी ने किया है जो अभी तक शाये नहीं हो सका है।

9) कुल्ताबुन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम - इस किताब में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जानिब से लिखने वाले सहाबए किराम का तज़क़िरा है। मुअर्रख़ीन ने उमूमन 40-45 कातेबीन नबी का ज़िक्र फरमाया है लेकिन डाक्टर आज़मी साहब ने 60 से ज़्यादा कातेबीन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ज़िक्र तारीखी दलाइल के साथ फरमाया है। इस किताब का पहला एडीशन

हासिल है। इन नुस्खों में से इमाम मोहम्मद की रिवायत करदा किताब को सबसे ज्यादा शोहरत व मक़बूलियत हासिल हुई।

“किताबुल आसार” बरिवायत इमाम मोहम्मद

“किताबुल आसार” बरिवायत काज़ी अबू युसूफ

“किताबुल आसार” बरिवायत इमाम जुफ़र

“किताबुल आसार” बरिवायत इमाम हसन बिन ज़ियाद

मसानीदे इमाम अबू हनीफा उलमाए किराम ने हज़रत इमाम अबू हनीफा की पंद्रह मसानीद शुमार की हैं जिसमें अइम्मए दीन्मौर हुफ्फाज़े हदीस ने आपकी रिवायात को जमा करके हमेशा के लिए महफूज़ कर दिया, उनमें से मुसनद इमाम आज़म इल्मी दुनिया में मशहूर है जिसकी बहुत सी शुरुहात भी लिखी गई हैं। इस सिलसिले में सबसे बड़ा काम मुक़े शाम के इमाम अबुल मुवायद ख़वारज़मी (वफात 665 हिजरी) ने किया है जिन्होंने तमाम मसानीद को बड़ी ज़खीम किताब जामेउल मसानीद के नाम से जमा किया है।

हज़रत इमाम अबू हनीफा के मशहूर शगिर्द इमाम मोहम्मद की मशहूर किताबें भी फिक़ह हनफी के अहम माखज़ हैं।

अलमबसूत, अलजामेउस सगीर, अलजामेउस कबीर, अज ज़ियादात, अस सियरुस सगीर, अस सियरुल कबीर।

हज़रत इमाम अबू हनीफा का तक्रवा

किताब व सुन्नत की तालीम और फिक़ह की तदवीन के साथ इमाम साहब ने ज़ोहद व तक्रवा और इबादत में पूरी ज़िन्दगी बसर की। रात का बेशतर हिस्सा अल्लाह तआला के सामने रोने, नफल नमाज़ पढ़ने और तिलावते कुरान में गुज़ारते थे। इमाम साहब ने इल्मे दीन

रियाज़ से और तीसरा एडीशन 1993 में बैरुत से और उसके बाद बेशुमार एडीशन मुख्तलिफ़ इदारों से शाये हुए और हो रहे हैं।

13) अलइलल लिअली बिन अब्दुल्लाह अलमदीनी - आपकी तहकीक़ व तालीक़ के बाद इसका पहला एडीशन 1972 में और दूसरा एडीशन 1974 में शाये हुआ। इसके बाद बहुत से एडीशन शाये हो चुके हैं।

14) सुनन इब्ने माजा - हदीस की इस अहम किताब की आपने तखरीज व तहकीक़ करने के बाद इसको कम्प्यूटराइज़ करके चार जिल्दों में 1983 में रियाज़ से शाये कराया। अहादीस को कम्प्यूटराइज़ करने का सिलसिला आपने किसी हद तक Cambridge University में Ph.D के दौरान शुरू कर दिया था।

15) सुनन कुबरा लिन नसई - आपने 1960 में इसके मखतूता को हासिल करके इसकी तखरीज व तहकीक़ के बाद इशाअत फरमाई।

16) मगाज़ी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लिउरवा बिन जुबैर बिरिवायति अबिल असवद - मशहूर व मारुफ़ ताबेई हज़रत उरवा बिन जुबैर (विलादत 23 हिजरी) की सीरत पाक के मौजू पर तहरीर करदा सबसे पहली किताब (मगाज़ी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) डाक्टर मोहम्मद मुस्तफ़ा आज़मी ने अपनी तखरीज व तहकीक़ और तंकीद के बाद शाये की। इस किताब का पहला एडीशन 1981 में शाये हुआ। यह किताब इस बात की अलामत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात के फौरन बाद सीरते नबवी पर लिखना शुरू हो गया था। इदारा सक्काफ़ते इस्लामिया, पाकिस्तान ने इस किताब का उर्दू तरजुमा करके 1987 में शाये किया है, इस किताब का अंग्रेज़ी ज़बान में तआरुफ़ तबाअत

के मरहले में है, असल किताब (अरबी ज़बान में) का पहला एडीशन 1981 में रियाज़ से शाये हुआ है।

17) सही बुखारी का मखतूता - बहुत से उलमा के हवाशी के साथ 725 में तहरीर करदा सही बुखारी का मखतूता जो 1977 में इस्तम्बूल से हासिल किया गया, मौसूफ की तहकीक के बाद तबाअत के मरहले में है।

गरज़ ये कि डाक्टर मोहम्मद मुस्तफा आज़मी साहब ने हदीस की ऐसी अज़ीम खिदमात पेश फरमाई हैं कि उनकी हदीस की खिदमात का एतेराफ आलमे इस्लामी ही में नहीं बल्कि मुस्तशरेकीन ने भी आपकी सलाहियतों का एतेराफ किया है। मौसूफ की अक्सर किताबें इन्टरनेट पर **FreeDownload** के लिए मुहैया हैं।

इमाम सुफयान सौरी (वफात 167 हिजरी) के पास एक शख्स इमाम अबू हनीफा से मुलाकात करके आया। इमाम सुफयान सौरी ने फरमाया तुम हुए ज़मीन के सबसे बड़े फकीह के पास से आ रहे हो। (अलखैरातुल हिसान पेज 32)

इमाम मालिक बिन अनस (वफात 179 हिजरी) फरमाते हैं कि "मैंने अबू हनीफा जैसा इंसान नहीं देखा।" (अलखैरातुल हिसान पेज 28)

इमाम वकी बिन जर्हाह (वफात 195 हिजरी) फरमाते हैं "इमाम अबू हनीफा से बड़ा फकीह और किसी को नहीं देखा।"

इमाम यहया बिन मईन (वफात 233 हिजरी) इमाम अबू हनीफा के कौल पर फतवा दिया करते थे और उनकी अहादीस के हाफिज़ भी थे। उन्होंने इमाम अबू हनीफा की बहुत सारी अहादीस सुनी हैं। (जामे बयानुल उलूम, अल्तामा इब्ने बर जिल्द 2 पेज 149)

इमाम सुफयान बिन उयैना (वफात 198 हिजरी) फरमाते थे कि "मेरी आंखों ने अबू हनीफा जैसा इंसान नहीं देखा। दो चीजों के बारे में खयाल था कि वह शहर कूफा से बाहर न जाएगी मगर वह ज़मीन के आखिरी किनारों तक पहुंच गई। एक इमाम हमज़ा की किरात और दूसरी अबू हनीफा का फिक़ह।" (तारीखे बगदाद जिल्द 13 पेज 347)

इमाम शाफई (वफात 204 हिजरी) फरमाते हैं कि "हम सब इल्मे फिक़ह में इमाम अबू हनीफा के मोहताज हैं, जो शख्स इल्मे फिक़ह में महारत हासिल करना चाहे तो वह इमाम अबू हनीफा का मोहताज होगा।" (तारीखे बगदादी जिल्द 23 पेज 161)

इमाम बुखारी के उस्ताद इमाम मक्की बिन इब्राहीम फरमाते हैं कि "इमाम अबू हनीफा परहेज़गार, आलमे आखिरत के रागिब और अपने

अरबी ज़बान में 480 पृष्ठों पर मुशतमिल अपना तहकीकी मकाला पेश किया। डाक्टर मोहम्मद नजीब कासमी ने बहुत सी किताबें उर्दू, हिन्दी और अंग्रेजी ज़बानों में तहरीर की हैं। 1999 से रियाज़(सऊदी अरब) में बरसरे रोज़गार हैं। कई सालों से रियाज़ शहर में हज तरबियती कैम्प भी मुनअक्किद कर रहे हैं। उनके मज़ामीन उर्दू अखबारों में प्रकाशित होते रहते हैं।

मौलाना डाक्टर मोहम्मद नजीब कासमी की वेब साइट (www.najeebqasmi.com) को काफी मक़बूलियत हासिल हुई है जिसकी मोबाइल ऐप (**Deen-e-Islam**) तीन ज़बानों (उर्दू, हिन्दी और अंग्रेजी) में है जिसमें मुख्तलिफ इस्लामी मौज़ूआत पर मज़ामीन के साथ उनकी किताबें और बयानात हैं।

हज व उमरह से मुतअल्लिक खुसूसी ऐप (**Hajj-e-Mabroor**) भी तीन ज़बानों (उर्दू, हिन्दी और अंग्रेजी) में है, जिन से सफर के दौरान हत्ताकि मक्का, मिना, मुज़दल्फा और अरफात में भी इस्तिफादा किया जा सकता है।

हिंदुस्तान और पाकिस्तान के मशहूर उलमा, दीनी इदारों और मुख्तलिफ मदरसों ने दोनों Apps (**दुन्या की पहली मोबाइल ऐपस**) की ताईद में ख़ूत तहरीर फरमा कर अवाम व खवास से दोनों Apps से फायदा उठाने की अपील की है।

<http://www.najeebqasmi.com/>

najeebqasmi@gmail.com

[MNajeeb Qasmi - Facebook](#)

[Najeeb Qasmi - YouTube](#)

Whatsapp: [00966508237446](tel:00966508237446)

First Islamic Mobile Apps on the world in 3 languages:

Deen-e-Islam & Hajj-e-Mabroor

AUTHOR'S BOOKS



IN URDU LANGUAGE:

حج مبرور، مختصر حج مبرور، حجی علی الصلاۃ، عمرہ کا طریقہ، تحفہ رمضان، معلومات قرآن، اسلامی مضامین جلد ۱،
اسلامی مضامین جلد ۲، قرآن وحدیث: شریعت کے دو اہم ماخذ، سیرت النبی ﷺ کے چند پہلو،
زکوٰۃ و صدقات کے مسائل، فیملی مسائل، حقوق انسان اور معاملات، تاریخ کی چند اہم شخصیات، علم و ذکر

IN ENGLISH LANGUAGE:

Quran & Hadith - Main Sources of Islamic Ideology
Diverse Aspects of Seerat-un-Nabi
Come to Prayer, Come to Success
Ramadan - A Gift from the Creator
Guidance Regarding Zakat & Sadaqaat
A Concise Hajj Guide
Hajj & Umrah Guide
How to perform Umrah?
Family Affairs in the Light of Quran & Hadith
Rights of People & their Dealings
Important Persons & Places in the History
An Anthology of Reformative Essays
Knowledge and Remembrance

IN HINDI LANGUAGE:

کوران اور ہدیس - اسلامی آئیڈیالوجی کے مین سورس
سیرت النبی کے مختلف پہلو
نماز کے لیے آؤ، سफलता के लिए आओ
रमज़ان - اللہ کا ایک उपहार
زکات اور صدقات کے بارے में गाइडेंस
हज और उमराह गाइड
मुख्तसर हजजे मबरूर
उमराह का तरीका
पारिवारिक मामले कुरान और हदीस की रोशनी में
लोगों के अधिकार और उनके मामलात
महत्वपूर्ण व्यक्ति और स्थान
सुधारात्मक निबंध का एक संकलन
इल्म और जिक्र



First Islamic Mobile Apps of the world in 3 languages
(Urdu, Eng. & Hindi) in iPhone & Android by Dr. Mohammad Najeeb Qasmi

DEEN-E-ISLAM

HAJJ-E-MABROOR